

Time Allowed :3 Hours 15 minutes | Maximum Marks :100 | Total Questions :138

General Instructions

Read the following instructions very carefully and strictly follow them:

1. प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।
2. प्रश्न-पत्र दो खण्डों 'अ' तथा 'ब' में विभाजित है।
3. प्रश्न-पत्र के खण्ड 'अ' में बहुविकल्पीय प्रश्न हैं, जिसमें सही विकल्प का चयन करके OMR शीट पर नीले अथवा काले बॉल प्वाइंट पेन से सही विकल्प वाले गोले को पूर्ण रूप से काला करें।
4. खण्ड 'अ' में कुल 100 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं, जिनमें से किसी भी 50 प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित है। 50 से अधिक प्रश्नों के उत्तर दिए जाने पर केवल पहले 50 उत्तरों का ही मूल्यांकन किया जाएगा।
5. OMR उत्तर पत्रक में हाइलाइटर, तरल पदार्थ, ब्लेड, नाखून आदि का प्रयोग वर्जित है, अन्यथा परीक्षा परिणाम अमान्य होगा।
6. खण्ड 'ब' में कुल 30 लघु उत्तरीय प्रश्न हैं, जिनमें से किसी भी 15 प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं।
7. खण्ड 'ब' में 8 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं, जिनमें से किसी भी 4 प्रश्नों का उत्तर देना है। प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।
8. किसी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का प्रयोग पूर्णतः वर्जित है।
9. परीक्षार्थी OMR उत्तर पत्रक पर अपना प्रश्न पुस्तिका क्रमांक (10 अंकों का) अवश्य लिखें।
10. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में हो उत्तर दें।
11. दाहिनी और हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

Section-A

1. योग दर्शन में 'चित्तवृत्ति निरोध' को क्या कहते हैं ?

- (1) समाधि
- (2) योग
- (3) प्राणायाम
- (4) ईश्वर

Correct Answer: (2) योग

Solution:**व्याख्या :**

पतंजलि के योगसूत्र 1.2 में स्पष्ट है—“योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः” अर्थात् मन की वृत्तियों के निरोध (नियंत्रण/स्थिरता) का नाम योग है।

तर्क:

समाधि योग-अंगों (अष्टाङ्ग) का एक परिणाम है ; प्राणायाम एक अंग भर है ; 'ईश्वर' योगसूत्र में विशेष पुरुष (ईश्वर-प्रणिधान) के रूप में आता है। परिभाषा सीधे 'योग' शब्द से जुड़ी है, इसलिए सही विकल्प योग है।

Quick Tip

योगसूत्र 1.2 को याद रखें—“योग = चित्तवृत्ति-निरोध” ; इसके आधार पर भ्रमित करने वाले विकल्प अलग हो जाते हैं।

2. भारतीय दर्शन की उत्पत्ति किससे मानी जाती है ?

- (1) पलायनवादी प्रवृत्ति
- (2) निराशावादी दृष्टिकोण
- (3) भौतिक सुख-प्राप्ति की कामना
- (4) आध्यात्मिक असन्तोष

Correct Answer: (4) आध्यात्मिक असन्तोष

Solution:**भावार्थ:**

भारतीय दर्शनों (श्रमण परम्परा, उपनिषद् आदि) की खोज का मूल प्रेरण-तत्व आध्यात्मिक असन्तोष/मुक्ति-अन्वेषण है—“क्या है परम सत्य ? दुःख-निवृत्ति कैसे ?”

भ्रम-निवारण :

न पलायनवादी, न निराशावादी ; न ही केवल भौतिक सुख। लौकिक सफलताओं के बावजूद अंतिम शान्ति/मोक्ष का अन्वेषण ही मूल प्रेरणा है। इसलिए 'आध्यात्मिक असन्तोष' उपयुक्त कारण है।

Quick Tip

कुंजी शब्द: मुक्ति-अन्वेषण/आध्यात्मिक असन्तोष—उपनिषद् व बौद्ध- जैन परम्परा दोनों का साझा प्रेरक।

3. अद्वैत वेदान्त के अनुसार 'जगत' की सत्ता क्या है ?

- (1) पारमार्थिक
- (2) व्यवहारिक
- (3) प्रातिभासिक
- (4) इनमें से सभी

Correct Answer: (2) व्यवहारिक सत्ता

Solution:**स्तर-त्रयी :**

अद्वैत में पारमार्थिक (ब्रह्म—एकमेव सत्य), व्यवहारिक (जगत—मिथ्या/व्यावहारिक सत्य), और प्रातिभासिक (स्वप्न/भ्रम) तीन स्तर बताए जाते हैं।

निष्कर्ष:

जगत परमार्थ में ब्रह्म से भिन्न नहीं, पर अनुभव-व्यवहार में सत्य जैसा प्रतिष्ठित होता है—इसीलिए उसे व्यवहारिक सत्ता कहा जाता है ; प्रातिभासिक पूरी तरह भ्रान्तिपूर्ण स्तर है।

Quick Tip

याद रखें: ब्रह्म = पारमार्थिक, जगत = व्यवहारिक, स्वप्न/भ्रम = प्रातिभासिक।

4. चार्वाक, बौद्ध और जैन किस दार्शनिक सम्प्रदाय में आते हैं ?

- (1) आस्तिक
- (2) नास्तिक
- (3) आस्तिक एवं नास्तिक दोनों
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (2) नास्तिक

Solution:**मानदण्ड :**

भारतीय परम्परा में 'आस्तिक/नास्तिक' का मानक वेद-प्रामाण्य है—जो वेद को प्रमाण मानता वह आस्तिक, जो नहीं मानता वह नास्तिक।

तथ्य :

चार्वाक भौतिकवादी, वेद-प्रामाण्य अस्वीकार; बौद्ध व जैन भी वेद को अंतिम प्रमाण नहीं मानते। अतः ये तीनों नास्तिक वर्ग में हैं (ईश्वर-स्वीकार/अस्वीकार इससे भिन्न प्रश्न है)।

Quick Tip

'आस्तिक/नास्तिक' = वेद-प्रामाण्य का पैमाना—ईश्वर-स्वीकार नहीं।

5. स्याद्वाद को समझाने के लिए जैन दर्शन में कितने 'नयों/भंगियों' का प्रतिपादन किया गया ?

- (1) चार
- (2) पाँच
- (3) सात
- (4) नौ

Correct Answer: (3) सात

Solution:**सिद्धान्त :**

जैन स्याद्वाद/सप्तभंगी कथन-प्रणाली में वस्तु का निरूपण सात संभावित प्रकारों से होता है—स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति, स्यात् अस्ति नास्ति, स्यात् अवक्तव्य, स्यात् अस्त्यवक्तव्य, स्यात् नास्त्यवक्तव्य, स्यात् अस्ति नास्त्यवक्तव्य।

भावार्थ:

वस्तु अनेकान्त है ; संदर्भ, काल, द्रव्य, क्षेत्र के अनुसार कथन बदलता है। इसलिए 'सात' भंगियाँ सही उत्तर है।

Quick Tip

कुंजी : जैन = अनेकान्तवाद ; स्याद्वाद = सप्तभंगी (7)—सूची के 3-4 रूप याद रखें।

6. भारतीय दर्शन की मूल दृष्टि है

- (1) बौद्धिक
- (2) विश्लेषणात्मक
- (3) आध्यात्मिक
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (3) आध्यात्मिक

Solution:

भारतीय दर्शन का मूल प्रेरक मुक्ति/परम-कल्याण की खोज है, इसलिए इसकी दृष्टि मूलतः आध्यात्मिक मानी जाती है। उपनिषदों से लेकर बौद्ध-जैन, योग, वेदान्त—सभी का केन्द्र दुःखनिवारण, आत्म-साक्षात्कार, ब्रह्म/निर्वाण/कैवल्य जैसी परम अवस्था है। बौद्धिक तर्क, विश्लेषण, मीमांसा अवश्य प्रयुक्त होते हैं, पर वे साधन हैं; लक्ष्य आंतरिक शान्ति और परम सत्य की प्राप्ति है। अतः विकल्प (3) उपयुक्त है।

Quick Tip

कुंजी वाक्य: “भारतीय दर्शन = आध्यात्मिक साध्य, तर्क केवल साधन।”

7. निष्काम कर्म का मूल सिद्धान्त है।

- (1) शारीरिक सुख
- (2) कर्तव्य के लिए कर्तव्य
- (3) भौतिक सुख
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (2) कर्तव्य के लिए कर्तव्य

Solution:

गीता का सिद्धान्त—“कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन”—कर्म को फलासक्ति से रहित होकर करना है। यह न शारीरिक/भौतिक सुख की लालसा है, न अकर्म; बल्कि स्थितप्रज्ञ भाव से अपने धर्म/कर्तव्य का अनुष्ठान। ऐसे कर्म से चित्त-शुद्धि होती है, राग-द्वेष शांत होते हैं और योग्यता बढ़ती

है। फल की प्राप्ति ईश्वराधीन/प्रकृति-नियमाधीन मानी जाती है ; साधक का ध्यान केवल सम्यक् कर्म पर। इसलिए मूल सिद्धान्त—कर्तव्य के लिए कर्तव्य।

Quick Tip

याद रखें: निष्काम = कर्म पर अधिकार, फल पर नहीं — फलासक्ति त्याग।

8. निम्न में से कौन-सी वेदान्त की शाखा नहीं है ?

- (1) अद्वैत
- (2) विशिष्टाद्वैत
- (3) द्वैतवाद
- (4) क्षणिकवाद

Correct Answer: (4) क्षणिकवाद

Solution:

वेदान्त की प्रमुख धाराएँ—अद्वैत (शंकर), विशिष्टाद्वैत (रामानुज), द्वैत (माध्व) आदि—उपनिषद्-आधारित ब्रह्म-जीव-जगत सम्बन्ध समझाती हैं। क्षणिकवाद (क्षणभंगुरवाद) बौद्ध सिद्धान्त है, जिसके अनुसार द्रव्य/धर्म क्षण-क्षण में उत्पन्न-व्यर्थ होते हैं; यह वेदान्त परम्परा का अंश नहीं। इसलिए (4) सही उत्तर है।

Quick Tip

वेदान्त त्रयी याद रखें—अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैत; क्षणिकवाद = बौद्ध।

9. निम्नलिखित में से कौन-सा एक पारार्थानुमान का घटक नहीं है ?

- (1) उपनय
- (2) उदाहरण
- (3) हेतु
- (4) परामर्श

Correct Answer: (4) परामर्श

Solution:

न्याय के पञ्चावयव पारार्थानुमान के पाँच अवयव हैं—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन। इनमें उदाहरण (व्याप्ति-दृष्टान्त) और उपनय (व्याप्ति का विषय पर लागू करना) आवश्यक चरण हैं। परामर्श पाँच अवयवों में नहीं आता ; अतः वही घटक नहीं है।

Quick Tip

पाँचों अवयव रटें: प्रतिज्ञा-हेतु-उदाहरण-उपनय-निगमन; जो इसमें न हो, वही गलत विकल्प।

10. वैशेषिक दर्शन का दूसरा नाम क्या है ?

- (1) औलूक्य
- (2) उल्लूक
- (3) ऐलूक
- (4) इनमें से सभी

Correct Answer: (1) औलूक्य

Solution:

वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक कणाद को परम्परा में औलूक/औलूक्य भी कहा गया ; इसलिए वैशेषिक को औलूक्य दर्शन भी कहते हैं। यह द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय आदि पदार्थों के विश्लेषण पर आधारित यथार्थवादी दर्शन है। 'उल्लूक/ऐलूक' रूप प्रचलित शुद्ध नाम नहीं ; मान्य दूसरा नाम औलूक्य है।

Quick Tip

सह-स्मरण: कणाद = औलूक/औलूक्य; वैशेषिक = पदार्थ-न्याय।

11. ईश्वर की सत्ता के लिए 'नैतिक युक्ति' (Moral Argument) का समर्थन किसने किया है ?

- (1) कान्ट
- (2) देकार्त
- (3) स्पिनोज़ा
- (4) ह्यूम

Correct Answer: (1) कान्ट

Solution:

इमैनुएल कान्ट ने ईश्वर-प्रमाण के बौद्धिक/मीमांसीय रूपों (सत्तात्मक, कारणात्मक आदि) पर शंका की, पर व्यावहारिक बुद्धि से एक नैतिक युक्ति दी। उनके अनुसार नैतिक विधान हमें सर्वोत्तम कल्याण (Summum Bonum)—जहाँ सद्गुण के अनुपात में सुख मिले—के लिए बाध्य करता है। यह लक्ष्य संसार में पूर्णतया संभव मानने हेतु तीन व्यावहारिक उपपत्ति माननी पड़ती हैं: स्वतंत्रता, आत्मा की अमरता, और ईश्वर (नैतिक विश्व-व्यवस्था का गारंटर)। इसलिए ईश्वर का अस्तित्व सैद्धान्तिक रूप से नहीं, नैतिक अनिवार्यता के रूप में समर्थित है। देकार्त ने मुख्यतः सत्तात्मक/प्रत्यय संबद्ध तर्क दिया, स्पिनोज़ा का दृष्टिकोण सर्वेश्वरवादी है, और ह्यूम ईश्वर-तर्कों के प्रति संशयवादी थे।

Quick Tip

कान्ट = व्यावहारिक बुद्धि → Summum Bonum → तीन उपपत्तियाँ: स्वतंत्रता, अमरता, ईश्वर।

12. कारणता सिद्धान्त है

- (1) धार्मिक
- (2) वैज्ञानिक
- (3) अवैज्ञानिक
- (4) इनमें से नहीं

Correct Answer: (2) वैज्ञानिक

Solution:

अर्थ:

कारणता (Causality) का तात्पर्य है—हर घटना उपयुक्त परिस्थितियों में किसी कारण-संबंध से उत्पन्न होती है।

विज्ञान में भूमिका :

यह विज्ञान का मूल सिद्धान्त/आधार-मान्यता है ; इसी के कारण पूर्वानुमान और नियंत्रित प्रयोग सम्भव होते हैं—यदि कारण व शर्तें पुनरुत्पादित हों तो परिणाम भी पुनरुत्पन्न होगा।

सूक्ष्मता :

आधुनिक भौतिकी में अनिश्चय/प्रायिकता आयी है, फिर भी सांख्यिकीय कारणता (statistical laws) बनी रहती है—नियमिता नष्ट नहीं होती।

दर्शन-संदर्भ:

ह्यूम ने “आवश्यक संबंध” पर सवाल उठाया ; भारतीय दर्शनों में भी कारण-वाद (सांख्य का सत्कार्यवाद, न्याय का असत्कार्यवाद) मिलता है। तथापि वैज्ञानिक पद्धति कारणता पर ही टिकती है।

Quick Tip

याद रखें: कारणता = विज्ञान की आधार-मान्यता \Rightarrow भविष्यवाणी, परीक्षण और पुनरावृत्ति सम्भव।

13. निम्न में से कौन पुरुषार्थ नहीं है ?

- (1) अर्थ
- (2) धर्म
- (3) आत्मा
- (4) मोक्ष

Correct Answer: (3) आत्मा

Solution:

भारतीय आचार-दर्शन में मनुष्य-जीवन के चार प्रयोजन चतुर्वर्ग या पुरुषार्थ कहलाते हैं—धर्म (नैतिक-नीतिक आचरण/कर्तव्य), अर्थ (उपजीविका/सम्पत्ति का न्यायपूर्ण साधन), काम (इच्छाओं/रसों की मर्यादित पूर्ति) और मोक्ष (बंधन-मुक्ति/आध्यात्मिक सिद्धि)। ये चारों जीवन-समन्वय का मार्गदर्शन करते हैं—धर्म इनके लिए नियामक है, मोक्ष सर्वोच्च माना जाता है। आत्मा दार्शनिक सत्ता/तत्त्व है, प्रयोजन नहीं ; अतः विकल्प (3) आत्मा पुरुषार्थ नहीं है, जबकि “काम” (जो विकल्पों में नहीं) चौथा पुरुषार्थ है।

Quick Tip

सूत्र याद रखें: धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष = चार पुरुषार्थ; आत्मा = तत्त्व/सत्ता, पुरुषार्थ नहीं।

14. ज्ञान प्राप्त करने वाले को क्या कहते हैं ?

- (1) प्रमा
- (2) अप्रमा
- (3) प्रमाण
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (4) इनमें से कोई नहीं

Solution:

भारतीय ज्ञानमीमांसा में चार प्रमुख पद प्रयुक्त होते हैं—प्रमाता (ज्ञाता/knower), प्रमाण (ज्ञान का साधन/means of knowledge), प्रमेय (ज्ञेय/object), और प्रमा (यथार्थ/सत्य ज्ञान, valid cognition)। विकल्प (1) प्रमा = यथार्थ ज्ञान; (2) अप्रमा = मिथ्या/अयथार्थ ज्ञान; (3) प्रमाण = प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द आदि साधन; जबकि “ज्ञान प्राप्त करने वाला” प्रमाता कहलाता है, जो विकल्पों में नहीं है। इसलिए उचित उत्तर “इनमें से कोई नहीं” है।

Quick Tip

सूत्र: प्रमाता (ज्ञाता) – प्रमाण (साधन) – प्रमेय (वस्तु) – प्रमा (सत्य ज्ञान)। परिभाषाएँ अलग रखें।

15. ‘प्रयोजनमूलक युक्ति’ (Teleological / Pragmatic Argument) सम्बन्धित है—

- (1) आत्मा के अस्तित्व से
- (2) कारणता सिद्धान्त से
- (3) ईश्वर के अस्तित्व से
- (4) जगत के अस्तित्व से

Correct Answer: (3) ईश्वर के अस्तित्व से

Solution:

क्या है ‘प्रयोजनमूलक’ युक्ति ?

इसे उद्देश्यवाद/डिज़ाइन आर्ग्युमेंट भी कहते हैं। तर्क यह है कि प्रकृति में क्रम, सामंजस्य, उद्देश्य-पूर्णता और उत्तम अनुकूलन दिखाई देता है—जैसे जटिल जैव-तंत्र, नियमबद्ध प्राकृतिक नियतियाँ, नैतिक व्यवस्था। इतना सुव्यवस्थित ‘डिज़ाइन’ बुद्धिमान नियन्ता/डिज़ाइनर की उपस्थिति का संकेत देता है ; इसलिए यह युक्ति सीधे ईश्वर-सत्ता के पक्ष में प्रस्तुत की जाती है।

अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

- (1) आत्मा—उसके लिए चेतनानुभव/अन्तर्दर्शन जैसी अलग युक्तियाँ दी जाती हैं।
- (2) कारणता—यह Cosmological (कारण-श्रृंखला) तर्क का आधार है, प्रयोजनमूलक नहीं।
- (4) जगत का अस्तित्व—सिर्फ अस्तित्व बताता है ; ‘उद्देश्य’ की ओर नहीं ले जाता।

टिप्पणी :

आधुनिक आलोचनाएँ (जैसे विकासवाद) इस तर्क को चुनौती देती हैं; फिर भी अनेक दार्शनिक इसे 'संभाव्य/प्रायिक' आधार पर ईश्वर-विश्वास की तर्कसंगति के रूप में स्वीकारते हैं।

Quick Tip

याद रखें—डिज़ाइन/उद्देश्य दिखे ⇒ बुद्धिमान नियन्ता। कारण-श्रृंखला = कॉस्मोलॉजिकल, डिज़ाइन = टेलीऑलॉजिकल (प्रयोजनमूलक)।

16. सर्वेश्वरवाद (Pantheism) के समर्थक कौन हैं ?

- (1) ह्यूम
- (2) लॉक
- (3) स्पिनोज़ा
- (4) कान्ट

Correct Answer: (3) स्पिनोज़ा

Solution:

सर्वेश्वरवाद क्या है ?

सिद्धान्त कि ईश्वर = प्रकृति/समस्त अस्तित्व; जगत ईश्वर से अलग कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं।

स्पिनोज़ा का तर्क:

स्पिनोज़ा ने *Ethics* में Substance Monism प्रतिपादित किया—केवल एक ही पदार्थ है जिसे वह "Deus sive Natura" (ईश्वर अथवा प्रकृति) कहता है। मन और शरीर उसी एक पदार्थ के गुण/रूप (attributes/modes) हैं; अतः ईश्वर संपूर्ण प्रकृति के रूप में अंतर्भूत (immanent) है, बाहर से नियंत्रक नहीं।

अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

ह्यूम—अनुभववादी/संशयवादी ; ईश्वर-तर्कों की आलोचना। लॉक—ईश्वर-विश्वासी पर पैन्थीस्ट नहीं। कान्ट—व्यावहारिक बुद्धि से ईश्वर-उपपत्ति देता है, सर्वेश्वरवाद नहीं। इसलिए सही उत्तर स्पिनोज़ा।

Quick Tip

स्मरण सूत्र: "Deus sive Natura" = स्पिनोज़ा ⇒ ईश्वर और प्रकृति एक ही—यही सर्वेश्वरवाद।

17. निम्न में से किस युक्ति का कहना है कि ईश्वर का अस्तित्व, ईश्वर के विचार से अनिवार्यतः फलित होता है ?

- (1) विश्वमूलक युक्ति
- (2) कारणतामूलक युक्ति
- (3) तार्किक युक्ति
- (4) प्रयोजनमूलक युक्ति

Correct Answer: (3) तार्किक युक्ति

Solution:

इसे सत्तात्मक/ओन्टोलॉजिकल तर्क भी कहते हैं (एंसल्म, बाद में देकार्त)। आधार-कल्पना : “सर्वोत्तम/परम परिपूर्ण सत्ता” (that than which nothing greater can be conceived) का विचार करते ही उसका अस्तित्व मानना पड़ता है, क्योंकि अस्तित्व परिपूर्णता का आवश्यक गुण है ; केवल मानसिक अस्तित्व से बढ़कर वास्तविक अस्तित्व अधिक पूर्ण होगा—अतः परम परिपूर्ण सत्ता वास्तविक रूप में अवश्य है। इसलिए ईश्वर का अस्तित्व परिकल्पना से ही तार्किक निष्कर्ष की तरह निकाला जाता है, बाह्य अनुभव/कारण या प्रयोजन की ज़रूरत नहीं।

आलोचना (संक्षेप): कान्ट ने कहा—“अस्तित्व” कोई गुण नहीं ; अवधारणा से अस्तित्व सिद्ध नहीं होता। फिर भी यह तर्क ईश्वर-मीमांसा में विशिष्ट तार्किक मार्ग के रूप में जाना जाता है।

Quick Tip

याद रखें: **Ontological** = तार्किक (विचार से अस्तित्व); **Cosmological** = कारण-शृंखला; **Teleological** = प्रयोजन/डिज़ाइन।

18. महावीर को निर्वाण कहाँ प्राप्त हुआ ?

- (1) पावापुरी
- (2) बोधगया
- (3) कुशीनगर
- (4) राजगीर

Correct Answer: (1) पावापुरी

Solution:

जैन परम्परा के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने अपना अन्तिम उपदेश देकर पावापुरी (आज का नालंदा ज़िला, बिहार; प्राचीन नाम—अपापपुरी) में निर्वाण/मोक्ष प्राप्त किया। स्मृति-चिह्न रूप में यहाँ जल-मन्दिर स्थित है।

भ्रम निवारण: बोधगया बुद्ध के सम्बोधि (ज्ञानप्राप्ति) का स्थल है ; कुशीनगर बुद्ध के महापरिनिर्वाण का ; राजगीर महावीर और बुद्ध दोनों की विहार-भूमि रही, पर महावीर का निर्वाण वहीं नहीं हुआ। अतः सही उत्तर पावापुरी है।

Quick Tip

याद रखें—महावीर : पावापुरी (निर्वाण); बुद्ध: बोधगया (ज्ञान), कुशीनगर (परिनिर्वाण)—तीनों को साथ में जोड़कर याद करें।

19. कितने पदार्थों को वैशेषिक स्वीकार करता है ?

- (1) तीन
- (2) चार

- (3) पाँच
(4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (4) इनमें से कोई नहीं

Solution:

वैशेषिक में पदार्थ (Categories) का पारंपरिक वर्गीकरण छः है—द्रव्य (Substance), गुण (Quality), कर्म (Action), सामान्य (Universal), विशेष (Particularity) और समवाय (Inherence)। बाद की न्याय-वैशेषिक परम्परा में अभाव (Non-existence) को भी जोड़ा गया, जिससे गणना सात कही जाती है। दिए गए विकल्पों (3, 4, 5) में न तो 6 और न 7 शामिल है, इसलिए उपयुक्त चयन “इनमें से कोई नहीं” है। परीक्षा में सामान्यतः “क्लासिकल वैशेषिक” पूछे जाने पर उत्तर छः पदार्थ माना जाता है—यह भेद याद रखें।

Quick Tip

सूत्र: द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवाय = 6; बाद में अभाव जोड़ने पर 7। विकल्पों में 6/7 न हो तो “इनमें से कोई नहीं”।

20. ‘ऋण’ की अवधारणा सम्बन्धित है—

- (1) ब्रह्मचर्याश्रम से
(2) गृहस्थाश्रम से
(3) वानप्रस्थाश्रम से
(4) संन्यासाश्रम से

Correct Answer: (2) गृहस्थाश्रम

Solution:

धर्मशास्त्रीय परम्परा में मनुष्य जन्म से त्रि-ऋण का भागी माना गया है—देव ऋण (यज्ञ/उपासना द्वारा), ऋषि ऋण (अध्ययन-अध्यापन/विद्या-संरक्षण द्वारा), और पितृ ऋण (संतानोत्पत्ति, पितृ-तर्पण तथा वंश-रक्षा द्वारा)। इन तीनों का व्यावहारिक निर्वह मुख्यतः गृहस्थाश्रम में सम्भव है, क्योंकि गृहस्थ ही अर्थोपार्जन, यज्ञ-दान-तर्पण, अतिथि-सत्कार और अन्य आश्रमों (ब्रह्मचारी/वानप्रस्थी/संन्यासी) का भरण-पोषण करता है। ब्रह्मचर्य में तैयारी, वानप्रस्थ/संन्यास में वैराग्य-उन्मुख साधना प्रधान रहती है; ऋण-परिहार का प्रमुख कर्म-क्षेत्र गृहस्थाश्रम है। अतः सही उत्तर (2) है।

Quick Tip

त्रि-ऋण याद रखें: देव-ऋषि-पितृ ⇒ इनका व्यावहारिक निर्वह = गृहस्थाश्रम।

21. ‘तत्त्वचिन्तामणि’ पुस्तक के लेखक कौन हैं ?

- (1) उदयन
(2) गंगेश
(3) गौतम
(4) प्रशस्तपाद

Correct Answer: (2) गंगेश

Solution:

‘तत्त्वचिन्तामणि’ नव्यमीमांसा/नव्य-न्याय परम्परा का आद्य ग्रन्थ है जिसके रचयिता गंगेश उपाध्याय (मिथिला, 13-14वीं शताब्दी) माने जाते हैं। ग्रन्थ विशेषतः प्रमाण-विचार पर केन्द्रित है और प्रमाण-खण्ड में प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान तथा शब्द—इन चार प्रमाणों की गूढ़ विश्लेषणात्मक व्याख्या करता है। बाद में रघुनाथ शिरोमणि, गदाधर भट्टाचार्य आदि ने इस पर विस्तृत टीकाएँ लिखकर नव्य-न्याय की तकनीकी शब्दावली विकसित की। उदयन (न्यायकुसुमांजलि), गौतम (न्यायसूत्र) और प्रशस्तपाद (पदार्थधर्मसंग्रह) अलग ग्रन्थों के कर्ता हैं; अतः ‘तत्त्वचिन्तामणि’ के लेखक गंगेश ही हैं।

Quick Tip

याद रखें—तत्त्वचिन्तामणि = गंगेश (नव्य-न्याय); न्यायसूत्र = गौतम, न्यायकुसुमांजलि = उदयन, पदार्थधर्मसंग्रह = प्रशस्तपाद।

22. ‘ऋत’ सम्बन्धित है—

- (1) भौतिक नियम से
- (2) धार्मिक नियम से
- (3) नैतिक नियम से
- (4) इनमें से सभी से

Correct Answer: (4) इनमें से सभी से

Solution:

ऋग्वैदिक विचार में ‘ऋत’ समस्त सृष्टि-व्यवस्था/काँस्मिक ऑर्डर का नाम है—जो प्रकृति (ऋतु-चक्र, ग्रह-गति), धार्मिक/याज्ञिक विधि-व्यवस्था (यज्ञ का शुद्ध क्रम) और नैतिक सत्पथ/सत्य के नियम—तीनों को एक साथ नियोजित करता है। वरुण-मित्त्र आदि देवताओं को इसके रक्षक माना गया; सत्य (satya) इसका मानवीय रूप और आगे चलकर धर्म उसका सामाजिक-नैतिक विस्तार माना गया। इसलिए ‘ऋत’ केवल एक क्षेत्र तक सीमित न होकर भौतिक, धार्मिक और नैतिक—सभी नियमों से सम्बन्ध रखता है; अतः सही विकल्प (4) इनमें से सभी से।

Quick Tip

स्मरण सूत्र: ऋत → सत्य → धर्म; और क्षेत्र: प्रकृति + यज्ञ + नैतिकता = सभी।

23. ‘कर्म’ शब्द की उत्पत्ति हुई है—

- (1) ‘कृ’ धातु से
- (2) ‘लु’ धातु से
- (3) ‘कर्म’ धातु से
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (1) ‘कृ’ धातु से

Solution:

संस्कृत में 'कर्म' (कर्मन्) शब्द का व्युत्पत्तिस्रोत धातु √कृ (करोति—कर) है, जिसका अर्थ "करना/सृजन करना" होता है। धातु कृ पर प्रत्यय (जैसे 'मनिन्'/कर्मनिर्देशक) लगने से 'कर्मन्' रूप बनता है—अर्थ किया हुआ कार्य, कृत्य या किर्या का फल/विषय। व्याकरण में यही कर्म कारक कहलाता है (कर्म = किर्या का object). भारतीय दर्शन/धर्मशास्त्र में 'कर्म' का प्रयोग नैतिक-धार्मिक अर्थ में भी होता है—किए गए सद्/दुश् कर्मों का फल जन्म-जन्मान्तर में भोगा जाता है। 'लु' कोई धातु नहीं है; (3) में 'कर्म' स्वयं व्युत्पन्न रूप है, धातु नहीं—इसलिए सही विकल्प कृ धातु है।

Quick Tip

कर्म = √कृ (कर) + प्रत्यय → "कर्मन्"—व्याकरण में कर्म कारक, दर्शन में कर्म-फल की धारणा।

24. ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए देकार्त ने निम्न में से किस सिद्धान्त का प्रयोग किया है ?

- (1) एक पूर्ण सत्ता समग्र विश्व का कारण होनी चाहिए
- (2) एक पूर्ण सत्ता एक पूर्ण सत्ता के प्रत्यय (विचार) का कारण होनी चाहिए
- (3) एक पूर्ण सत्ता असीमित सत्ताओं का कारण होनी चाहिए
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (2) एक पूर्ण सत्ता एक पूर्ण सत्ता के प्रत्यय का कारण होनी चाहिए

Solution:

देकार्त का प्रमुख कारण-पर्याप्तता सिद्धान्त (Causal Adequacy Principle) कहता है—कारण में उतनी या उससे अधिक वास्तविकता होनी चाहिए जितनी प्रभाव/विचार में है। हम अपने भीतर अनन्त, सर्व-शक्तिमान, सर्वज्ञ—अर्थात् सर्वोपरि पूर्ण सत्ता—का विचार पाते हैं। इस पूर्णता-युक्त विचार का पर्याप्त कारण हम स्वयं (सीमित/अपूर्ण) नहीं हो सकते; केवल पूर्ण सत्ता (ईश्वर) ही उसके लिए पर्याप्त कारण हो सकती है। अतः ईश्वर का अस्तित्व उस पूर्ण सत्ता के विचार से ही निष्कर्षित होता है। यह देकार्त का विशिष्ट आइडिया-आर्ग्युमेंट है, जो विकल्प (2) में निहित है। विकल्प (1)/(3) ब्रह्माण्ड/बहुसत्ता-कारण की सामान्य बातें हैं, देकार्त के विशिष्ट तर्क का सार नहीं।

Quick Tip

देकार्त = Causal Adequacy: कारण की वास्तविकता \geq प्रभाव/विचार की वास्तविकता \Rightarrow ईश्वर ही पूर्ण सत्ता के विचार का पर्याप्त कारण।

25. निम्न में से कौन 'समानान्तरवाद' (Psychophysical Parallelism) का समर्थक है ?

- (1) देकार्त
- (2) स्पिनोज़ा
- (3) लाइबनिज
- (4) लॉक

Correct Answer: (2) स्पिनोज़ा

Solution:

समानान्तरवाद का अर्थ—मानसिक (विचार) और भौतिक (विस्तार) घटनाएँ समांतर क्रम में चलती हैं; उनके बीच प्रत्यक्ष कारण-कार्य सम्बन्ध नहीं होता।

स्पिनोज़ा ने *Ethics* में एक-पदार्थवाद दिया : एक ही Substance (Deus sive Natura) के दो प्रमुख गुण—Thought और Extension। अतः मन और शरीर एक ही वास्तविकता के दो पहलू हैं; जो कुछ शरीर-क्रम में घटता है, उसका समांतर रूप विचार-क्रम में होता है—यही Psychophysical Parallelism।

अन्य विकल्प : देकार्त — द्वैतवाद/अन्तःक्रियावाद (pineal interaction); लाइबनिज — Pre-established Harmony (मोनाडों की पूर्व-स्थापित संगति), जो समानान्तरवाद-समान दिखता है पर तत्त्वतः भिन्न सिद्धान्त है; लॉक — अनुभववादी, मन-शरीर पर अलग प्रतिपादन नहीं। अतः सही उत्तर स्पिनोज़ा।

Quick Tip

सूत्र: स्पिनोज़ा = एक पदार्थ, दो गुण (विचार-विस्तार) ⇒ समानान्तरवाद; लाइबनिज = पूर्व-स्थापित सामंजस्य; देकार्त = अन्तःक्रियावाद।

26. पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धान्त सम्बन्धित है—

- (1) देकार्त से
- (2) स्पिनोज़ा से
- (3) लाइबनिज से
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (3) लाइबनिज

Solution:

चरण 1: सिद्धान्त की पहचान।

पूर्व स्थापित सामंजस्य (Pre-established Harmony) लाइबनिज का मन-शरीर सम्बन्ध पर समाधान है। उसके अनुसार ब्रह्मांड असंख्य मोनाडों (अविभाज्य, चेतन इकाइयों) से बना है। प्रत्येक मोनाड अपने-अपने आन्तरिक नियम से चलता है और किसी दूसरे पर कारणात्मक प्रभाव नहीं डालता।

चरण 2: “सामंजस्य” कैसे ?

ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में ही सभी मोनाडों की अवस्थाओं/अनुक्रमों को इस प्रकार सेट कर दिया कि वे बिना पारस्परिक कारण-क्रिया के भी घड़ी की सूइयों की तरह समांतर चलें—यही पूर्व-स्थापित सामंजस्य है। अतः मन की अवस्थाएँ और शरीर की गतियाँ मिलती-जुलती दिखती हैं, पर एक-दूसरे को पैदा नहीं करतीं।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

देकार्त—अन्तःक्रियावाद (pineal gland के माध्यम से मन-शरीर कारण-सम्बन्ध)। स्पिनोज़ा—समानान्तरवाद: एक ही पदार्थ के दो गुण (विचार/विस्तार) समांतर चलते हैं, पर ईश्वर द्वारा पहले से “सेट” करने की बात नहीं। इसलिए सही उत्तर लाइबनिज।

Quick Tip

घड़ी उपमा याद रखें—ईश्वर ने सभी “घड़ियाँ” (मोनाड) पहले से सेट कीं ⇒ लाइबनिज = पूर्व-स्थापित सामंजस्य; देकार्त = अन्तःक्रिया, स्पिनोज़ा = समानान्तरवाद।

27. अनुभववाद के समर्थक हैं

- (1) देकार्त
- (2) कान्ट
- (3) ह्यूम
- (4) स्पिनोज़ा

Correct Answer: (3) ह्यूम

Solution:

चरण 1: ‘अनुभववाद’ की पहचान।

अनुभववाद (Empiricism) वह मत है जिसके अनुसार समस्त यथार्थ ज्ञान का स्रोत मुख्यतः **इन्द्रिय-अनुभव** है; मन में कोई जन्मजात (innate) विचार नहीं होते।

चरण 2: ह्यूम का प्रतिपादन।

डेविड ह्यूम अनुभववादी परम्परा (लॉक, बर्कले) का सबसे सुसंगत दार्शनिक है। उसने मन की सामग्रियों को **impressions** (तत्काल प्रबल अनुभूति) और **ideas** (उनकी मन्द प्रतिलिपि) में बाँटा। कारणता, आत्म-एकता, पदार्थ—ये सब कठोर तर्क से नहीं, बल्कि **आदत/निरन्तर सहसंबंध** के कारण बने विश्वास हैं। अतः ज्ञान का मानदण्ड अनुभव है, न कि तर्क से निकले जन्मजात सिद्धान्त।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

देकार्त—रैशनलिस्ट (जन्मजात विचार, “Cogito”)। **कान्ट—अप्रायोगिक a priori** रूपों (स्थान, काल, श्रेणियाँ) का प्रतिपादन; उसने ह्यूम की चुनौती के उत्तर में “सामंजस्यवाद” विकसित किया। **स्पिनोज़ा—तर्कप्रधान रैशनलिस्ट** और सर्वेश्वरवादी। अतः अनुभववाद का उपयुक्त विकल्प **ह्यूम** है।

Quick Tip

Locke–Berkeley–Hume = Empiricists ; Descartes–Spinoza–Leibniz = Rationalists
— और **Kant = synthesis/critical philosophy**।

28. अरस्तू के अनुसार कारण है—

- (1) उपादान
- (2) आकारीक
- (3) (a) तथा (b) दोनों
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (3) (a) तथा (b) दोनों

Solution:

चरण 1: अरस्तू का 'चार कारण' सिद्धान्त।

अरस्तू वस्तुओं/परिवर्तन को समझाने के लिए चार कारण मानता है—(i) उपादान कारण (Material cause: किस पदार्थ से बना), (ii) आकारीक कारण (Formal cause: उसकी रूप-रचना/विन्यास जो उसे वही वस्तु बनाती है), (iii) निमित्त कारण (Efficient cause: करने वाला/उत्पादक), और (iv) अंतिम कारण (Final cause: प्रयोजन/उद्देश्य)।

चरण 2: विकल्पों से मिलान।

यहाँ (1) उपादान और (2) आकारीक—दोनों अरस्तू की सूची के वैध कारण हैं; अतः सही उत्तर दोनों है।

चरण 3: स्मरण के लिए उदाहरण।

एक मूर्ति के संदर्भ में—पत्थर उपादान, मूर्ति की डिजाइन/आकार आकारीक, मूर्तिकार निमित्त, और "पूजन/सौन्दर्य प्रदर्शन" अंतिम कारण है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उपादान और आकारीक दोनों कारण हैं।

Quick Tip

मूर्ति-उदाहरण से याद करें—पत्थर (उपादान), रूप (आकारीक), मूर्तिकार (निमित्त), प्रयोजन (अंतिम) ⇒ दोनों सही।

29. किस तर्क में जगत के अस्तित्व के आधार पर ईश्वर का अस्तित्व प्रमाणित किया जाता है ?

- (1) विश्वमूलक तर्क
- (2) प्रयोजनमूलक तर्क
- (3) सत्तामूलक तर्क
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (1) विश्वमूलक तर्क

Solution:

चरण 1: तर्क की पहचान।

विश्वमूलक (Cosmological) तर्क जगत/संसार के अस्तित्व, परिवर्तन और कारण-श्रृंखला से आरम्भ करता है और निष्कर्ष निकालता है कि इस श्रृंखला का अकारण/प्रथम कारण या निरपेक्ष आवश्यक सत्ता होना चाहिए—इसी को ईश्वर कहा जाता है।

चरण 2: प्रमुख रूप।

(i) कारण-श्रृंखला तर्क (Thomas Aquinas की "First Cause/Unmoved Mover"): अनन्त प्रतिगमन अस्वीकार्य है; अतः प्रथम कारण अनिवार्य।

(ii) आवश्यकता-संभाव्यता (Contingency) तर्क: जो कुछ संभाव्य है, उसके अस्तित्व का आधार अनिवार्य सत्ता में है; इसलिए एक Necessary Being (ईश्वर) मानना पड़ता है।

(iii) पर्याप्त कारण का सिद्धान्त (Leibniz): "क्यों कुछ है, शून्य क्यों नहीं?"—जगत के अस्तित्व का पर्याप्त स्पष्टीकरण ईश्वर है।

चरण 3: अन्य विकल्पों से भेद।

प्रयोजनमूलक (Teleological) तर्क डिजाइन/उद्देश्य से ईश्वर का कथन करता है ; सत्तामूलक (Ontological) तर्क मात्र विचार/परिभाषा (परम परिपूर्ण सत्ता) से अस्तित्व निष्कर्षित करता है। यहाँ प्रश्न में “जगत के अस्तित्व” को आधार बनाया गया है—अतः विश्वमूलक सही है।

Quick Tip

Cosmo = Cosmos (जगत) ⇒ प्रथम कारण/आवश्यक सत्ता; Teleo = Design/उद्देश्य; Onto = विचार/परिभाषा—तीनों का भेद याद रखें।

30. अन्तः-क्रियावाद (Interactionism) का सिद्धान्त दिया गया है—

- (1) कान्ट द्वारा
- (2) देकार्त द्वारा
- (3) स्पिनोज़ा द्वारा
- (4) लॉक द्वारा

Correct Answer: (2) देकार्त द्वारा

Solution:

चरण 1: सिद्धान्त की पहचान।

अन्तः-क्रियावाद वह दृष्टि है जिसके अनुसार मन (चेतन/अविस्तारित पदार्थ) और शरीर (विस्तारित भौतिक पदार्थ) परस्पर कारण-कार्य सम्बन्ध में प्रभावित करते हैं।

चरण 2: देकार्त का प्रतिपादन।

रेने देकार्त ने द्वैतवाद (Substance Dualism) दिया—दो स्वतंत्र पदार्थ: *res cogitans* (सोचने वाला) और *res extensa* (विस्तारित)। उसने मन-शरीर की पारस्परिक क्रिया का जैव-स्थान पीनियल ग्रन्थि (pineal gland) बताया, जहाँ मानसिक संकल्पना शरीर की गतियों पर, और शारीरिक अवस्थाएँ मानसिक अनुभव पर कारणात्मक असर डालती हैं।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

स्पिनोज़ा—समानान्तरवाद (एक पदार्थ, विचार/विस्तार दो गुण; कोई क्रॉस-कारणता नहीं)। लॉक—अनुभववादी; मन-शरीर पर अलग अन्तःक्रिया-तत्वज्ञान नहीं। कान्ट—आलोचनात्मक दर्शन; मन-शरीर अन्तःक्रिया का सैद्धान्तिक प्रतिपादन नहीं करता। अतः अन्तः-क्रियावाद का सही श्रेय देकार्त को है।

Quick Tip

त्रयी को साथ याद करें—देकार्त = अन्तः-क्रिया, स्पिनोज़ा = समानान्तरवाद, लाइबनिज = पूर्व-स्थापित सामंजस्य (घड़ी-उपमा)।

31. निम्न में से कौन एकवादी (Monist) है ?

- (1) देकार्त
- (2) स्पिनोज़ा

- (3) सांख्य
- (4) लाइबनिज

Correct Answer: (2) स्पिनोज़ा

Solution:

चरण 1: 'एकवाद' की पहचान।

एकवाद (Monism) वह मत है जिसके अनुसार समस्त अस्तित्व का अंतिम तत्त्व एक ही है—सभी वस्तुएँ उसी एक पदार्थ की भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं।

चरण 2: स्पिनोज़ा का एकवाद।

स्पिनोज़ा *Ethics* में Substance Monism प्रतिपादित करता है—केवल एक पदार्थ है, जिसे वह “Deus sive Natura” (ईश्वर अथवा प्रकृति) कहता है। विचार (Thought) और विस्तार (Extension) उस एक पदार्थ के गुण हैं; मन और शरीर उसी के रूप/मोड हैं। अतः वह स्पष्ट रूप से एकवादी है।

चरण 3: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

देकार्त—द्वैतवादी: दो स्वतंत्र पदार्थ—*res cogitans* (मन) और *res extensa* (पदार्थ)।

सांख्य—द्वैत: पुरुष और प्रकृति दो अनादि तत्त्व।

लाइबनिज—अनेकवाद/बहुलवाद (Pluralism): असंख्य मोनाड अंतिम इकाइयाँ ; एक पदार्थ नहीं। इस-लिए सही उत्तर स्पिनोज़ा है।

Quick Tip

सूत्र: स्पिनोज़ा = एकवाद (Deus sive Natura), देकार्त/सांख्य = द्वैत, लाइबनिज = बहुलवाद (मोनाड)।

32. 'तर्कपूर्वकम् अनुमानम्' किसका मत है ?

- (1) सांख्य का
- (2) न्याय का
- (3) बौद्ध
- (4) जैन का

Correct Answer: (2) न्याय का

Solution:

चरण 1: सूत्रार्थ।

'तर्कपूर्वकम् अनुमानम्' का आशय है—अनुमान से पूर्व तर्क (विकल्पों के परिणामों का परीक्षण) द्वारा विरोधी सम्भावनाओं का खण्डन कर व्याप्ति/लक्षण को दृढ़ करना। यह न्याय-दर्शन की विशिष्ट पद्धति है।

चरण 2: न्याय में तर्क की भूमिका।

न्यायसूत्र-परम्परा में तर्क को संशय-निवारक सहायक साधन कहा गया—“यदि ऐसा हो तो अनिष्ट प्रतिफल” प्रकार के विचार से अनुमान के हेतु को पुष्ट किया जाता है। पाँच-अवयवी पारार्थानुमान (प्रतिज्ञा-हेतु-उदाहरण-उपनय-निगमन) के पहले तर्क अक्सर प्रयुक्त होता है ताकि प्रतिपक्ष के वि-

कल्प निरस्त हो जाएँ।

चरण 3: अन्य मतों से भेद।

सांख्य केवल तीन प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द) मानता है—पर तर्कपूर्वक की यह विशेष रेखांकन नहीं करता। बौद्ध तर्कशास्त्र (दिङ्नाग, धर्मकीर्ति) 'त्रिरूप-हेतु' पर बल देता है; जैन में 'नय/स्याद्वाद' प्रमुख है। इसलिए यह उक्ति न्याय-दर्शन से सम्बद्ध मानी जाती है।

Quick Tip

न्याय = तर्कपूर्वक अनुमान (विकल्प-खण्डन से व्याप्ति दृढ़); बौद्ध = त्रिरूप-हेतु; जैन = नय/स्याद्वाद; सांख्य = तीन प्रमाण।

33. भरतृहरि ने प्रसिद्ध पुस्तक लिखी है—

- (1) स्फोटवाद
- (2) वाक्यपदीयम्
- (3) शब्दबोध
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (2) वाक्यपदीयम्

Solution:

चरण 1: लेखक व कृति की पहचान।

5वीं शताब्दी के महान व्याकरण-दार्शनिक भरतृहरि की प्रमुख रचना 'वाक्यपदीयम्' है—यह भाषा-दर्शन, व्याकरण और ज्ञानमीमांसा पर आधारित ग्रन्थ है। ग्रन्थ तीन काण्डों में विभक्त माना जाता है: ब्रह्म-काण्ड (शब्द-ब्रह्म, दार्शनिक आधार), वाक्य-काण्ड (वाक्य/पद की सत्ता, अर्थ-संबन्ध), और प्रकीर्णक-काण्ड (विविध विषय)।

चरण 2: विचार-सामग्री का सार।

भरतृहरि स्फोटवाद को विस्तार से प्रतिपादित करते हैं—अर्थात् एकात्मक वाक्य-स्फोट से अर्थ का उद्भव, जहाँ शब्द/वाक्य केवल प्रत्यभिज्ञान का माध्यम हैं; साथ ही शब्द-ब्रह्म की अवधारणा—भाषा/वाणी को सृष्टि-आधार मानने का दार्शनिक प्रतिपादन।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

(1) स्फोटवाद कोई ग्रन्थ नहीं, बल्कि भरतृहरि (और पूर्ववर्ती पतंजलि-आदि) का सिद्धान्त है; (3) शब्द-बोध सामान्य विषय/समस्या है, ग्रन्थ-नाम नहीं। अतः सही उत्तर 'वाक्यपदीयम्'।

Quick Tip

सूत्र: भरतृहरि → वाक्यपदीयम् → स्फोटवाद/शब्द-ब्रह्म. "स्फोटवाद" ❌ है, ग्रन्थ-नाम नहीं—इसी से विकल्प पहचानें।

34. न्याय सूत्र किसने लिखा है ?

- (1) वाचस्पति
- (2) वात्स्यायन
- (3) गौतम
- (4) उदयन भट्ट

Correct Answer: (3) गौतम

Solution:

चरण 1: मूल ग्रन्थ और कर्ता ।

न्याय दर्शन का आधार-ग्रन्थ 'न्यायसूत्र' है, जिसके कर्ता आक्षिपाद (अक्षपाद) गौतम माने जाते हैं। इसमें ज्ञान के साधन (प्रमाण), तर्क-विधि, निष्कर्ष, वितण्डा, हेत्वाभास आदि का सुव्यवस्थित निरूपण है।

चरण 2: परम्परा का संदर्भ ।

गौतम के बाद न्याय पर टीका-परम्परा विकसित हुई—वात्स्यायन ने 'न्यायभाष्य', उद्द्योतक ने 'न्यायवार्तिक', वाचस्पति मिश्र ने 'तात्पर्यटीका', और उदयन ने 'न्यायकुसुमांजलि' आदि ग्रन्थ लिखे; पर ये सभी टिप्पणी/विस्तार हैं, मूल सूत्र-ग्रन्थ नहीं।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन ।

(1) वाचस्पति—टिकाकार; (2) वात्स्यायन—'न्यायभाष्य' के लेखक; (4) उदयन—'न्यायकुसुमांजलि' (ईश्वर-सिद्धि) के रचयिता। इसलिए न्यायसूत्र के लेखक गौतम (विकल्प 3) हैं।

Quick Tip

सूत्र-भाष्य-वार्तिक-टीका क्रम याद करें: सूत्र : गौतम → भाष्य : वात्स्यायन → वार्तिक : उद्द्योतक → टीका : वाचस्पति; उदयन = न्यायकुसुमांजलि।

35. शंकर के अनुसार निर्विशेषतः चेतन सत्ता कौन है ?

- (1) ब्रह्म
- (2) ईश्वर
- (3) जीवात्मा
- (4) जगत्

Correct Answer: (1) ब्रह्म

Solution:

चरण 1: अद्वैत की मूल प्रतिज्ञा ।

आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में अंतिम सत्य ब्रह्म है—सत्-चित्-आनन्द स्वरूप, निरुपाधिक, निर्गुण/निर्विशेष और स्वतःसिद्ध। यह शुद्ध चेतना है, किसी विशेषता/उपाधि पर निर्भर नहीं।

चरण 2: अन्य पदों का स्थान ।

ईश्वर = सगुण ब्रह्म (माया-उपाधि सहित, विश्व-नियन्ता)—अतः विशेष/उपाधि-युक्त।

जीव = अविद्या-उपहित चैतन्य—ब्रह्म का प्रतिबिम्ब, देह-मन से अपने को सीमित मानने से व्य-

वित्ता बनती है।

जगत् = व्यवहारिक/मिथ्या सत्ता—ब्रह्म पर नाम-रूप का आभास मात्र; परमार्थतः स्वतंत्र चेतना नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष/उन्मूलन।

प्रश्न में “निर्विशेषतः चेतन सत्ता” (attribute-less pure consciousness) पूछा है। यह न ईश्वर (क्योंकि सगुण/माया-उपाधि), न जीव (अविद्या-उपाधि), न जगत् (मिथ्या/अचेतन-आश्रित), बल्कि केवल ब्रह्म ही है। अतः सही उत्तर (1) ब्रह्म।

Quick Tip

अद्वैत-सूत्र: ब्रह्म = निरुपाधिक शुद्ध चैतन्य; ईश्वर = सगुण ब्रह्म (माया), जीव = अविद्या-उपहित, जगत् = नाम-रूप (व्यवहारिक)।

36. योग दर्शन में ‘अहिंसा’ क्या है ?

- (1) यम
- (2) नियम
- (3) आसन
- (4) तपस्

Correct Answer: (1) यम

Solution:

चरण 1: अष्टाङ्ग-योग का संदर्भ।

पतंजलि के अनुसार साधना के आठ अंग हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। इसमें यम बाह्य/सामाजिक संयम हैं और नियम आन्तरिक अनुशासन।

चरण 2: ‘अहिंसा’ का स्थान।

यम के पाँच उपांग—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। अहिंसा का अर्थ है किसी भी प्राणी को वाणी, मन और शरीर से चोट न पहुँचाना; यही योग के नैतिक आधार का प्रथम नियम है।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

नियम के पाँच—शौच, सन्तोष, तपस्, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान; अतः तपस् (विकल्प 4) ‘नियम’ का अंग है, ‘यम’ नहीं। आसन शारीरिक स्थिरता/स्थितप्रज्ञता हेतु देह-स्थितियाँ हैं। इसलिए ‘अहिंसा’ को यम में रखा जाता है—सही उत्तर (1)।

Quick Tip

याद रखें—यम : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह; नियम : शौच, सन्तोष, तपस्, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान।

37. भगवद्गीता में कौन-से विचार पाये जाते हैं ?

- (1) लोक-संग्रह
- (2) निष्काम कर्म
- (3) स्वधर्म
- (4) इनमें से सभी

Correct Answer: (4) इनमें से सभी

Solution:

चरण 1: निष्काम कर्म का सिद्धान्त ।

गीता का केन्द्रीय संदेश—कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन—कर्म को फलासक्ति त्यागकर करना है। साधक कर्म के परिणाम को ईश्वर/धर्म के हवाले कर समत्व-बुद्धि से कार्य करता है, जिससे चित्त-शुद्धि और योगक्षेम सिद्ध होते हैं।

चरण 2: स्वधर्म का आग्रह ।

अर्जुन-संवाद में बार-बार यह प्रतिपादित है कि स्वधर्म (अपनी क्षमता/स्थिति/कर्तव्य के अनुरूप धर्म) का पालन सर्वोपरि है—“स्वधर्मे निधनं श्रेयः”। दूसरे के धर्म का अनुष्ठान अस्थिरता व द्विविधा उत्पन्न करता है।

चरण 3: लोक-संग्रह की अवधारणा ।

गीता कर्म को केवल निजी मोक्ष हेतु नहीं, लोक-संग्रह—समाज की स्थिरता/कल्याण—के लिए भी आवश्यक बताती है। श्रेष्ठ पुरुष जब धर्मनिष्ठ कर्म करता है तो आचरण-मानक बनता है ; इससे समाज में नीति, अनुशासन और सद्भाव बना रहता है।

निष्कर्ष:

ग्रन्थ में निष्काम कर्म, स्वधर्म और लोक-संग्रह—तीनों विचार स्पष्ट व परस्पर पूरक रूप में उपस्थित हैं; इसलिए सही विकल्प ‘इनमें से सभी’।

Quick Tip

गीता-त्रयी याद रखें: निष्काम कर्म (फल-त्याग), स्वधर्म (अपना कर्तव्य), लोक-संग्रह (सामाजिक कल्याण) — तीनों साथ चलते हैं।

38. किसका उपदेश ज्ञान का स्रोत है ?

- (1) आप्त पुरुष
- (2) आम आदमी
- (3) (a) तथा (b) दोनों
- (4) आप्त स्त्री

Correct Answer: (1) आप्त पुरुष

Solution:

चरण 1: ‘शब्द’ प्रमाण की परिभाषा ।

न्याय-दर्शन में शब्द एक स्वतंत्र प्रमाण है—आप्त (विश्वसनीय/सत्यवक्ता/सक्षम) व्यक्ति का कथन

यथार्थ ज्ञान का स्रोत होता है। ग्रन्थ, गुरु, विशेषज्ञ—ये सब आप्त-वाक्य की श्रेणी में आते हैं।

चरण 2: 'आप्त' की लाक्षणिकता।

आप्त वह है जो (i) तत्त्व-ज्ञान रखता हो, (ii) सत्यभाषी हो, (iii) हितैषी हो—अर्थात् जान-बूझकर भ्रमित न करता हो। इसलिए उसके उपदेश/वचन से प्राप्त ज्ञान प्रमाणित माना जाता है।

चरण 3: विकल्पों का परीक्षण।

(2) आम आदमी का कथन तब तक प्रमाण नहीं जब तक वह आप्त न हो।

(3) दोनों कहना अनुचित है—क्योंकि सभी “आम” कथन प्रमाणित नहीं होते।

(4) आप्त स्त्री भी वस्तुतः ‘आप्त’ की परिभाषा में आती है; पर न्याय परम्परा में शब्द “आप्त पुरुष” के रूप में अभिव्यक्त हुआ है (यहाँ ‘पुरुष’ सामान्य *person* अर्थ में प्रयुक्त है)। दिए विकल्पों में शास्त्रीय पदबंध (1) ही उपयुक्त है।

Quick Tip

सूत्र याद रखें: शब्द-प्रमाण = आप्त-वाक्य (सत्य, सक्षम, हितैषी व्यक्ति का कथन)। ‘आम’ कथन स्वतः प्रमाण नहीं।

39. शंकर के दर्शन के अनुसार पारमार्थिक सत्ता क्या है ?

- (1) ब्रह्म
- (2) जगत्
- (3) ईश्वर
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (1) ब्रह्म

Solution:

चरण 1: 'सत्ता-त्रयी' को याद करें।

अद्वैत वेदान्त (शंकर) में तीन स्तर की सत्ताएँ मानी जाती हैं—पारमार्थिक (ब्रह्म का अखण्ड, निर्विशेष, निरुपाधिक सत्य), व्यवहारिक (जगत्/ईश्वर—उपाधि सहित, व्यवहार में मान्य), और प्रातिभासिक (स्वप्न/भ्रम आदि)।

चरण 2: पारमार्थिक सत्य क्या है ?

परमार्थ में केवल ब्रह्म ही सत्यम्-ज्ञानम्-अनन्तम् रूप से सत्य है—न उसमें कोई गुण-विशेष, न परिवर्तन; वही शुद्ध चैतन्य है। ज्ञान द्वारा अविद्या-क्षय होने पर यही स्वस्वरूप प्रत्यक्ष होता है।

चरण 3: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

जगत्—नाम-रूप-आश्रित मिथ्या (व्यवहारिक) सत्ता है; ब्रह्म से भिन्न नहीं, पर स्वतंत्र परमार्थ नहीं।

ईश्वर—माया-उपहित सगुण ब्रह्म है; विश्व-नियन्ता रूप में व्यवहारिक स्तर पर सत्य, पर परमार्थ में ब्रह्म से भिन्न नहीं।

अतः पारमार्थिक सत्ता केवल ब्रह्म है—इसलिए विकल्प (1) सही।

Quick Tip

सूत्र: ब्रह्म = पारमार्थिक, जगत्/ईश्वर = व्यवहारिक, स्वप्न/भ्रम = प्रातिभासिक—अद्वैत की सत्ता-त्रयी।

40. निम्नलिखित में से कौन पुरुषार्थ के अन्तर्गत नहीं आता है ?

- (1) आत्मा
- (2) धर्म
- (3) मोक्ष
- (4) अर्थ

Correct Answer: (1) आत्मा

Solution:

चरण 1: पुरुषार्थ की परिभाषा।

भारतीय आचार-दर्शन में मनुष्य-जीवन के चार प्रयोजन पुरुषार्थ कहलाते हैं—धर्म (नीतिगत/कर्तव्य-आधारित जीवन), अर्थ (जीविका व संसाधनों की न्यायपूर्ण प्राप्ति), काम (इच्छाओं/रसों की मर्यादित, धर्मानुकूल पूर्ति) और मोक्ष (बंधन-मुक्ति/आध्यात्मिक कल्याण)।

चरण 2: विकल्पों का मिलान।

दिए विकल्पों में धर्म, अर्थ और मोक्ष—तीनों पुरुषार्थ हैं; चौथा पुरुषार्थ काम है जो यहाँ सूची में नहीं दिया गया। 'आत्मा' कोई प्रयोजन नहीं, बल्कि दार्शनिक तत्त्व/सत्ता (self/Atman) है, जिसके ज्ञान/साक्षात्कार को अनेक दर्शन लक्ष्य मानते हैं। इसलिए आत्मा पुरुषार्थ की सूची में नहीं आता।

चरण 3: निष्कर्ष।

चार पुरुषार्थ = धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष; अतः प्रश्नानुसार पुरुषार्थ में नहीं आने वाला विकल्प (1) आत्मा है।

Quick Tip

सूत्र याद रखें—धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष = चार पुरुषार्थ; आत्मा = तत्त्व (सत्ता), पुरुषार्थ नहीं।

41. भारतीय दर्शन में 'यथार्थ ज्ञान' कहलाता है—

- (1) प्रमा
- (2) अप्रमा
- (3) प्रमाण
- (4) ख्याति

Correct Answer: (1) प्रमा

Solution:

चरण 1: परिभाषा।

भारतीय ज्ञानमीमांसा में प्रमा वह ज्ञान है जो यथार्थ/अभियोग्य हो—अर्थात् वस्तु को जैसा है वैसा ही

प्रकट करे और नवीन (अनधिगत), अभाधित (अन्य से खण्डित न हो) तथा न्यायतः सिद्ध हो।

चरण 2: संबद्ध पदों का भेद।

प्रमाण = प्रमा का साधन (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द आदि)।

अप्रमा = अयथार्थ/मिथ्या ज्ञान (भ्रम, संदेह, तुच्छज्ञान); इससे व्यवहार-सिद्धि नहीं होती।

ख्याति = भ्रान्ति-व्याख्या की सिद्धान्त-परम्परा (आत्मख्याति, विषयख्याति, अनिरुद्धख्याति आदि)

— यह स्वयं ज्ञान का प्रकार नहीं बल्कि भ्रम की व्याख्या का मत है।

चरण 3: निष्कर्ष।

प्रश्न 'यथार्थ ज्ञान' पूछता है; अतः सही पद प्रमा है, न कि प्रमाण (साधन), अप्रमा (अयथार्थ) या ख्याति (भ्रम-सिद्धान्त)।

Quick Tip

चार पद याद रखें—प्रमाता (ज्ञाता), प्रमाण (साधन), प्रमेय (वस्तु), प्रमा (यथार्थ ज्ञान)। प्रश्न में "यथार्थ" दिखे ⇒ प्रमा चुनें।

42. भारतीय दर्शन है

- (1) परिकल्पनात्मक
- (2) व्यवहारिक
- (3) अतिव्यवहारिक
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (2) व्यवहारिक

Solution:

चरण 1: भारतीय दर्शन का लक्ष्य।

भारतीय परम्परा का मूल साध्य मोक्ष/दुःखनिवृत्ति है—अर्थात् जीवन का व्यावहारिक रूपान्तरण। इस-लिए ज्ञान का मूल्य केवल सैद्धान्तिक न रहकर आचरण-उन्मुख होता है।

चरण 2: सिद्धान्त-आचरण का समन्वय।

योग में यम-नियम से लेकर ध्यान-समाधि तक आचरण-क्रम है; गीता में निष्काम कर्म/स्वधर्म/लोक-संग्रह—सभी कर्म-आचरण से जुड़े; बौद्ध अष्टाङ्ग मार्ग, जैन व्रत-नियम, मीमांसा धर्मकर्म—ये सब जीवन-व्यवहार निर्देशित करते हैं। न्याय में प्रमा-प्रमाण का विश्लेषण इसलिए है कि यथार्थ ज्ञान से समुचित व्यवहार संभव हो।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

- (1) परिकल्पनात्मक (सिर्फ speculative) कहना अपूर्ण है—भारतीय दर्शन चिन्तन + साधना दोनों है।
- (3) अतिव्यवहारिक कोई मान्य शास्त्रीय श्रेणी नहीं। अतः उपयुक्त उत्तर व्यवहारिक।

Quick Tip

सूत्र: भारतीय दर्शन = साध्य मोक्ष, साधन आचरण ⇒ व्यवहारिक। उदाहरण: योग के यम-नियम, गीता का कर्मयोग, बौद्ध अष्टाङ्ग मार्ग।

43. अनेकान्तवाद सम्बन्धित है—

- (1) बौद्ध दर्शन से
- (2) जैन दर्शन से
- (3) न्याय दर्शन से
- (4) योग दर्शन से

Correct Answer: (2) जैन दर्शन से

Solution:

चरण 1: सिद्धान्त की पहचान।

अनेकान्तवाद जैन दर्शन का केंद्रीय मत है—वास्तविकता अनेकों पक्षों (many-sided) से युक्त है ; किसी भी वस्तु का एकांगी, निरपेक्ष कथन अपूर्ण होता है। वस्तु द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के भिन्न-भिन्न संदर्भों में भिन्न रूप से कथनीय है।

चरण 2: संबद्ध उपदर्शन।

अनेकान्तवाद से ही स्याद्वाद (सप्तभंगी नय) और नयवाद (standpoint theory) उत्पन्न होते हैं—“स्यात्” (किसी दृष्टि से) कहकर सशर्त कथन किए जाते हैं: स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति, स्यात् अवक्तव्य... आदि, जिससे विरोधी प्रतीत कथन भी संदर्भ बदलने पर समन्वित हो जाते हैं।

चरण 3: अन्य विकल्पों का उन्मूलन।

बौद्ध का प्रमुख मत क्षणिकवाद/अनात्मवाद, न्याय का यथार्थवाद/प्रमाण-तर्कशास्त्र, और योग का चित्तवृत्ति-निरोध—ये सभी अनेकान्तवाद के सिद्धान्त नहीं हैं। अतः सही उत्तर जैन दर्शन है।

Quick Tip

याद रखें—जैन = अनेकान्तवाद ⇒ स्याद्वाद (7 भंगियाँ) + नयवाद; बौद्ध = क्षणिकवाद, न्याय = प्रमाण-तर्क, योग = चित्तवृत्ति-निरोध।

44. न्याय दर्शन का समान तंत्र कौन दर्शन है ?

- (1) योग दर्शन
- (2) सांख्य दर्शन
- (3) वैशेषिक दर्शन
- (4) वेदान्त दर्शन

Correct Answer: (3) वैशेषिक दर्शन

Solution:

चरण 1: ‘समान तंत्र’ का अर्थ।

भारतीय दर्शन में कुछ प्रणालियाँ युगम के रूप में विकसित हुई—जिनकी विषयवस्तु और लक्ष्य पर-स्पर पूरक हों। ऐसे युगम को ही समान तंत्र कहते हैं।

चरण 2: न्याय-वैशेषिक का युगम।

न्याय मुख्यतः प्रमाण-तर्कशास्त्र (ज्ञान के साधन, अनुमान-विधि, वाक्य-न्याय, हेत्वाभास आदि) का सैद्धान्तिक ढाँचा देता है। वैशेषिक पदार्थ-मीमांसा (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय—और बाद में अभाव) के माध्यम से जगत की अस्तित्व-रचना समझाता है। दोनों का सम्मिलित अध्ययन न्याय-वैशेषिक के रूप में प्रसिद्ध है—एक जानने की पद्धति देता है, दूसरा जाने जाने वाले तत्त्वों का वर्गीकरण।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

योग का समान तंत्र सांख्य माना जाता है (सांख्य का तत्त्वज्ञान + योग की साधना-पद्धति)। वेदान्त स्वतंत्र उत्तरमीमांसा परम्परा है। इसलिए न्याय का समान तंत्र वैशेषिक ही है।

Quick Tip

युगम याद रखें: न्याय-वैशेषिक (तर्क + पदार्थ), सांख्य-योग (तत्त्वज्ञान + साधना)। प्रश्न में “समान तंत्र” दिखे ⇒ न्याय के साथ वैशेषिक चुनें।

45. जैन और बौद्ध दर्शन किस दार्शनिक सम्प्रदाय में आते हैं ?

- (1) आस्तिक
- (2) नास्तिक
- (3) (a) तथा (b) दोनों
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (2) नास्तिक

Solution:

चरण 1: आस्तिक-नास्तिक का मानदण्ड।

भारतीय परम्परा में आस्तिक/नास्तिक का आधार वेद-प्रामाण्य है—जो वेदों को अंतिम प्रमाण मानता है वह आस्तिक, और जो नहीं मानता वह नास्तिक। यह वर्गीकरण ईश्वर-मान्यता पर नहीं, बल्कि वेद-स्वीकृति पर आधारित है।

चरण 2: जैन और बौद्ध का स्थान।

जैन और बौद्ध दार्शनिक परम्पराएँ वेदों को प्रमाण नहीं मानतीं; इनके अपने तिररत्न/अष्टांग मार्ग, स्याद्वाद/प्रतित्यसमुत्पाद जैसे स्वाधीन सिद्धान्त और शास्त्रीय ग्रन्थ हैं। इसलिए यह दोनों नास्तिक सम्प्रदायों में गिने जाते हैं।

चरण 3: उन्मूलन।

आस्तिक सम्प्रदायों में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त आते हैं—ये वेद-प्रामाण्य स्वीकारते हैं। अतः जैन-बौद्ध के लिए विकल्प नास्तिक ही उपयुक्त है।

Quick Tip

सूत्र: आस्तिक/नास्तिक = वेद-प्रामाण्य (न कि ईश्वर-स्वीकार)। जैन-बौद्ध = नास्तिक; न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योग-मीमांसा-वेदान्त = आस्तिक।

46. निम्नलिखित में से कौन भारतीय दार्शनिक नहीं है ?

- (1) कपिल
- (2) गौतम
- (3) देकार्त
- (4) कणाद

Correct Answer: (3) देकार्त

Solution:

चरण 1: भारतीय परम्परा के दार्शनिक।

कपिल सांख्य दर्शन के प्रवर्तक माने जाते हैं; उन्होंने पुरुष और प्रकृति को मूल तत्त्व मानकर मुक्तिपथ समझाया। गौतम न्यायसूत्र के रचयिता हैं और प्रमाण, तर्क-विधि तथा हेत्वाभास का संघटित ढाँचा देते हैं। कणाद वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक हैं, जिन्होंने द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय जैसे पदार्थों का वर्गीकरण किया। ये तीनों भारतीय दार्शनिक परम्परा के प्रमुख स्तम्भ हैं।

चरण 2: देकार्त का परिचय।

रेने देकार्त सत्रहवीं शताब्दी के फ्रांसीसी दार्शनिक हैं, जिन्हें आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का जनक कहा जाता है। वे रैशनलिस्ट परम्परा, मन-शरीर द्वैतवाद और अन्तः-क्रियावाद के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका कार्य भारतीय शास्त्रीय परम्परा का हिस्सा नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष।

अतः दिए गए विकल्पों में भारतीय दार्शनिक नहीं होने वाला विकल्प देकार्त है, जबकि कपिल, गौतम और कणाद भारतीय आस्तिक दर्शनों के प्रतिनिधि हैं।

Quick Tip

सह-स्मरण: कपिल = सांख्य, गौतम = न्याय, कणाद = वैशेषिक; देकार्त = फ्रांसीसी रैशनलिस्ट — इसलिए वही भारतीय नहीं।

47. बुद्ध के अष्टाङ्गिक मार्ग के प्रथम दो (सम्यक दृष्टि एवं सम्यक संकल्प) को क्या कहा जाता है ?

- (1) प्रज्ञा
- (2) शील
- (3) समाधि
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (1) प्रज्ञा

Solution:

चरण 1: अष्टाङ्गिक मार्ग की त्रि-श्रेणी।

बौद्ध धर्म में अष्टाङ्गिक मार्ग को तीन प्रशिक्षणों में बाँटा जाता है—**प्रज्ञा** (बुद्धि/ज्ञान), **शील** (नैतिक आचरण) और **समाधि** (मानसिक अनुशासन)। यह विभाजन साधक को क्रमबद्ध साधना का ढाँचा देता है।

चरण 2: अंग-श्रेणी का मिलान।

प्रज्ञा के अंतर्गत दो अंग आते हैं—**सम्यक दृष्टि** (यथार्थ समझ : दुःख, समुदय, निरोध, मार्ग की सम्यक बोध) और **सम्यक संकल्प** (त्याग, मैत्री/अहिंसा, करुणा से युक्त संकल्प)। **शील** में सम्यक वाणी, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका ; **समाधि** में सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि आते हैं।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

क्योंकि प्रथम दो अंग प्रज्ञा श्रेणी में स्थित हैं, अतः न **शील** (जो अगले तीन अंगों का समूह है) और न **समाधि** (अंतिम तीन) उपयुक्त है। इसलिए सही उत्तर **प्रज्ञा** है।

Quick Tip

अष्टाङ्गिक मार्ग को याद करें—**प्रज्ञा** : दृष्टि-संकल्प; **शील** : वाणी-कर्म-आजीविका ; **समाधि** : प्रयास-स्मृति-समाधि।

48. भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों को बाँटा गया है—

- (1) आस्तिक में
- (2) नास्तिक में
- (3) आस्तिक एवं नास्तिक में
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (3) आस्तिक एवं नास्तिक में

Solution:

चरण 1: वर्गीकरण का मानदण्ड।

भारतीय परम्परा में दार्शनिक सम्प्रदायों का मुख्य विभाजन **वेद-प्रामाण्य** पर आधारित है—जो वेदों को प्रमाण मानते हैं वे **आस्तिक**, और जो नहीं मानते वे **नास्तिक** कहे जाते हैं। यह भेद ईश्वर-स्वीकार/अस्वीकार पर नहीं, केवल वेद-स्वीकृति पर टिका है।

चरण 2: आस्तिक और नास्तिक के उदाहरण।

आस्तिक में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त सम्मिलित हैं—ये वेद-प्रामाण्य स्वीकारते हैं।

नास्तिक में बौद्ध, जैन, चार्वाक प्रमुख हैं—ये वेद को अंतिम प्रमाण नहीं मानते ; अपने स्वतंत्र ग्रन्थ, पद्धतियाँ और साधना-मार्ग प्रस्तुत करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष/उन्मूलन।

चूँकि सम्पूर्ण परम्पराएँ इन्हीं दो वर्गों में व्यवस्थित की जाती हैं, केवल आस्तिक या केवल नास्तिक कहना अधूरा होगा। इसलिए उपयुक्त उत्तर **आस्तिक एवं नास्तिक** में है।

Quick Tip

सूत्र: वेद-प्रामाण्य = आस्तिक; वेद-अस्वीकृति = नास्तिक। उदाहरण—आस्तिक : न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योग-मीमांसा-वेदान्त; नास्तिक : बौद्ध-जैन-चार्वाक।

49. चतुर्थ आर्य सत्य को क्या कहा जाता है ?

- (1) मध्यम मार्ग
- (2) अष्टाङ्गिक मार्ग
- (3) सम्यक मार्ग
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (2) अष्टाङ्गिक मार्ग

Solution:

चरण 1: चार आर्य सत्यों की सूची।

बौद्ध सिद्धान्त के अनुसार चार आर्य सत्य हैं—(i) दुःख (जीवन-संसार दुःखमय है), (ii) समुदय (दुःख का कारण तृष्णा/अविद्या), (iii) निरोध (तृष्णा-क्षय से दुःख-निरोध संभव), (iv) मार्ग (निरोध तक पहुँचाने वाला साधन)।

चरण 2: चतुर्थ सत्य की परिभाषा।

चतुर्थ सत्य आर्य मार्ग है, जिसका रूप आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग माना गया—सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि। इसे तीन प्रशिक्षणों में बाँटते हैं: प्रज्ञा (पहले दो), शील (मध्य के तीन), समाधि (अंतिम तीन)।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

मध्यम मार्ग बुद्ध का व्यापक जीवन-सिद्धान्त है (कठोर तप और भोग के चरमों से बचना), पर चतुर्थ सत्य का तकनीकी नाम अष्टाङ्गिक मार्ग ही है। सम्यक मार्ग कोई मान्य शास्त्रीय पदबंध नहीं। अतः सही उत्तर अष्टाङ्गिक मार्ग।

Quick Tip

याद रखें: दुःख-समुदय-निरोध-मार्ग ⇒ मार्ग = आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग (प्रज्ञा-शील-समाधि के 8 अंग)।

50. बुद्ध के अनुसार दुःख का मूल कारण क्या है ?

- (1) तृष्णा
- (2) जाति
- (3) अविद्या
- (4) नामरूप

Correct Answer: (1) तृष्णा

Solution:

चरण 1: चार आर्य सत्यों का संदर्भ ।

दूसरा आर्य सत्य समुदय बताता है कि दुःख का कारण तृष्णा है—वस्तुओं, भोगों, अस्तित्व और अन-स्तित्व के लिए अतृप्त लालसा। यही प्रवृत्ति पुनर्जन्म के चक्र को चलाती है और मन में आसक्ति, द्वेष, मोह को पोषित करती है।

चरण 2: तृष्णा के रूप ।

बौद्ध साहित्य तीन प्रमुख प्रकार बताता है : काम-तृष्णा (इन्द्रिय-भोग), भव-तृष्णा (अस्तित्व/सत्ता के प्रति चिपकाव), विभव-तृष्णा (अनस्तित्व/विनाश की चाह)। ये तीनों क्लेशों और कर्मों को उत्पन्न कर उपादान और आगे भव-जाति-जरामरण की श्रृंखला को जन्म देते हैं।

चरण 3: प्रतित्यसमुत्पाद से सामंजस्य ।

बारह निदानों में आरम्भ अविद्या से माना गया है, पर दुःख की तात्त्विक जड़ का व्यावहारिक निदान बुद्ध ने तृष्णा-क्षय के रूप में दिया—इसीलिए समुदय सत्य का सूत्र वाक्य “तृष्णा” है। जाति और नामरूप मध्य-निदान हैं, मूल कारण नहीं। अतः सही उत्तर तृष्णा।

Quick Tip

चार सत्य याद रखें: दुःख-समुदय(तृष्णा)-निरोध-मार्ग; तृष्णा के तीन रूप—काम, भव, विभव—इन्हीं का क्षय साधना का लक्ष्य है।

51. महायान धार्मिक सम्प्रदाय का सम्बन्ध किस दर्शन से है ?

- (1) जैन दर्शन से
- (2) बौद्ध दर्शन में
- (3) न्याय दर्शन से
- (4) सांख्य दर्शन से

Correct Answer: (2) बौद्ध दर्शन में

Solution:

चरण 1: पहचान ।

महायान बौद्ध धर्म की प्रमुख शाखा है (दूसरी है हीनयान/थेरवाद)। इसका मूल आदर्श बोधिसत्व है—स्व-कल्याण के साथ सर्व-प्राणियों के कल्याण हेतु बुद्धत्व का व्रत।

चरण 2: मुख्य विशेषताएँ ।

महायान में प्रज्ञा-करुणा का समन्वय, शून्यता की मीमांसा (नागार्जुन का माध्यमक), चित्तमात्र/योगाचार (असंग-वसुबंधु), बुद्ध-धातु/तथागत-गर्भ और प्रज्ञापारमिता पर बल मिलता है। ग्रन्थों में सद्धर्मपु-ण्डरीक सूत्र (Lotus), लंकावतार, हृदय/वज्र आदि प्रमुख हैं। भूगोलतः इसका प्रसार चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत, मंगोलिया आदि में हुआ।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन ।

जैन का महायान से सम्बन्ध नहीं; न्याय और सांख्य आस्तिक भारतीय दर्शनों की स्वतंत्र प्रणालियाँ हैं। अतः महायान बौद्ध दर्शन की शाखा है—विकल्प (2) सही।

Quick Tip

याद रखें: महायान = बौद्ध (बोधिसत्व, करुणा, शून्यता, प्रज्ञापारमिता). जैन/न्याय/सांख्य से सम्बन्ध नहीं।

52. रामानुजाचार्य ने किस दर्शन को प्रतिपादित किया है ?

- (1) अद्वैतवाद
- (2) विशिष्टाद्वैतवाद
- (3) द्वैतवाद
- (4) भेदाभेदवाद

Correct Answer: (2) विशिष्टाद्वैतवाद

Solution:

चरण 1: प्रतिपादक और मूल ग्रन्थ।

रामानुजाचार्य श्रीवैष्णव परम्परा के आचार्य हैं। उन्होंने वेदान्तसूत्र पर श्रीभाष्य लिखकर विशिष्टाद्वैत का तत्त्व-विवरण स्थापित किया।

चरण 2: सिद्धान्त का सार।

विशिष्टाद्वैत में परम वास्तविकता सगुण ब्रह्म/नारायण है—जो चेतन (चित्/जीव) और अचेतन (अचित्/जगत) को अपने विशेष/अंग के रूप में समाहित करता है। ब्रह्म एक है, पर विशेषणों से विशिष्ट है; जीव-जगत ब्रह्म से अव्यभिच्छिन्न हैं—इसे शरीर-शरीरी-भाव से समझाया जाता है (ब्रह्म = शरीरी, जगत-जीव = शरीर)। मोक्ष का साधन भक्ति/प्रपत्ति है—अनुग्रह से भगवान की प्राप्ति।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

- (1) अद्वैत का प्रतिपादन शंकर ने किया—निर्विशेष ब्रह्म, जगत मिथ्या।
- (3) द्वैत का प्रतिपादन माध्व ने—जीव और ब्रह्म में नित्य भेद।
- (4) भेदाभेद के रूप विभिन्न आचार्यों (जैसे भास्कर का भेदाभेद, निंबार्क का द्वैताद्वैत) से जुड़े हैं, रामानुज से नहीं। अतः सही उत्तर विशिष्टाद्वैत।

Quick Tip

स्मरण सूत्र: शंकर-अद्वैत, रामानुज-विशिष्टाद्वैत, माध्व-द्वैत, निंबार्क/भास्कर-भेदाभेद.

53. जैन दर्शन निम्नलिखित में से किसे स्वीकार करता है ?

- (1) स्याद्वाद
- (2) आरंभवाद
- (3) अनात्मवाद
- (4) विवर्तवाद

Correct Answer: (1) स्याद्वाद

Solution:

चरण 1: जैन मत की पहचान।

जैन दर्शन का केन्द्रीय सिद्धान्त अनेकान्तवाद है—वास्तविकता बहुपक्षीय है ; किसी वस्तु का निरपेक्ष एकांगी कथन अधूरा होता है। इसी से स्याद्वाद उत्पन्न होता है, जिसमें कथन सशर्त होकर किए जाते हैं—“स्यात्” (किसी दृष्टि से) यह है, नहीं है, दोनों है-नहीं है, अवक्तव्य है... आदि सप्तभंगी रूपों में। यह पद्धति भिन्न संदर्भों में विरोधाभासी प्रतीत कथनों को समन्वित करती है।

चरण 2: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

आरंभवाद प्रायः न्याय-वैशेषिक की कारण-वेदना से जुड़ा है (नवीन गुण/कर्म का आरम्भ)। अनात्म-वाद बौद्ध मत है—स्थायी आत्मा का निषेध। विवर्तवाद अद्वैत वेदान्त का सिद्धान्त है—जगत ब्रह्म का नाम-रूपात्मक प्रतीति है, वास्तविक परिवर्तन नहीं। ये जैन मत नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष।

इस प्रकार जैन दर्शन स्याद्वाद/अनेकान्तवाद को मानता है ; अतः सही विकल्प (1) स्याद्वाद।

Quick Tip

स्मरण: जैन = अनेकान्तवाद ⇒ स्याद्वाद (सप्तभंगी); बौद्ध = अनात्मवाद; अद्वैत = विवर्तवाद; न्याय-वैशेषिक = आरंभवाद।

54. पतंजलि के योग-प्रविधि का प्रथम पायदान क्या है ?

- (1) यम
- (2) नियम
- (3) ध्यान
- (4) धारणा

Correct Answer: (1) यम

Solution:

चरण 1: अष्टाङ्ग-योग का क्रम।

पतंजलि योगसूत्र में साधना के आठ अंग बताए गए हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। इनमें यम पहला और आधारभूत नैतिक पायदान है जो साधक के सामाजिक-व्यवहार को शुद्ध करता है।

चरण 2: यम का स्वरूप।

यम के पाँच उपांग हैं—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। इनका पालन चित्त को हिंसा, कपट, लोभ, विषय-आसक्ति और अधिक संग्रह से मुक्त कर आन्तरिक शान्ति का आधार बनाता है, जिससे आगे के अंग सहज होते हैं।

चरण 3: अन्य विकल्पों से भेद।

नियम दूसरा पायदान है—शौच, सन्तोष, तपस्, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान। धारणा छुटा और ध्यान सातवाँ पायदान है—ये अन्तर्मुख एकाग्रता और निरन्तर चिन्तन के चरण हैं। अतः योग-मार्ग का प्रथम पायदान यम ही है।

Quick Tip

अष्टाङ्ग क्रम याद रखें: य-नि-आ-प्र-प्र-धा-ध्या-सम \Rightarrow पहला यम, दूसरा नियम; धारणा-ध्यान-समाधि अन्तिम तीन।

55. वैशेषिक द्वारा कितने प्रकार का कर्म माना गया है ?

- (1) पाँच
- (2) आठ
- (3) सोलह
- (4) चौबीस

Correct Answer: (1) पाँच

Solution:

चरण 1: कर्म का अर्थ।

वैशेषिक दर्शन में कर्म पदार्थ-श्रेणियों में से एक है और इसका अर्थ है गति/आंदोलन जो द्रव्य में नवीन स्थिति-परिवर्तन पैदा करे। कर्म के कारण ही गुणों और द्रव्यों में अनेक भौतिक परिवर्तन समझाए जाते हैं।

चरण 2: कर्म के पाँच भेद।

वैशेषिक ग्रन्थ पाँच प्रकार के कर्म गिनते हैं—(i) उत्क्षेपण (ऊपर की ओर फेंकना/उठना), (ii) अवक्षेपण (नीचे गिरना), (iii) आकुंचन (सिकुड़ना/संकुचन), (iv) प्रसारण (फैलना/विस्तार), (v) गमन या देशान्तर-गमन (स्थान-परिवर्तन/चालन)। ये सभी भौतिक गति के मूल रूप हैं जिनसे अन्य जटिल गतियाँ समझी जाती हैं।

चरण 3: विकल्प जाँच।

कर्म के मानक भेद पाँच ही बताए गए हैं; आठ, सोलह, चौबीस का उल्लेख वैशेषिक में कर्म-प्रकारों के रूप में नहीं मिलता। अतः सही उत्तर (1) पाँच।

Quick Tip

सूत्र: उत्क्षेपण-अवक्षेपण-आकुंचन-प्रसारण-गमन = कर्म के 5 भेद। इन्हें ऊपर-नीचे-सिकुड़-फैल-चल की कहानी की तरह याद करें।

56. सांख्य के अनुसार गुणों की संख्या है

- (1) अनन्त
- (2) दो
- (3) पाँच
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (4) इनमें से कोई नहीं

Solution:

चरण 1: सांख्य में 'गुण' की धारणा।

सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति तीन गुणों—सत्त्व, रजस, तमस—की समस्थिति है। सृष्टि के आरम्भ में सम्यता भंग होने पर इनके अनुपात-परिवर्तन से समस्त जगत का विकास होता है। सत्त्व प्रकाश/संतुलन, रजस गति/क्रिया और तमस जड़ता/आवरण का प्रतीक है। जीव के मनोभाव, नैतिक प्रवृत्तियाँ और अनुभूतियाँ इन्हीं गुणों के प्राबल्य से समझी जाती हैं।

चरण 2: प्रश्न से मिलान।

सांख्य में गुणों की संख्या तीन है ; जबकि दिए विकल्पों में 3 उपस्थित नहीं है। अतः उपयुक्त चयन इनमें से कोई नहीं होगा।

चरण 3: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

(1) अनन्त—अमान्य; (2) दो—द्वैत नहीं, त्रिगुण सिद्धान्त है ; (3) पाँच—इन्द्रियों/तन्मात्राओं/महाभूतों की संख्याएँ अलग हो सकती हैं, पर गुण केवल तीन ही माने गए हैं।

Quick Tip

सांख्य सूत्र: त्रिगुणात्मक प्रकृति = सत्त्व-रजस-तमस। विकल्पों में तीन न हो ⇒ इनमें से कोई नहीं चुनें।

57. 'एन इंट्रोडक्शन टू एथिक्स' के लेखक कौन हैं ?

- (1) अरस्तू
- (2) मिल
- (3) मैकेंजी
- (4) विलियम लिली

Correct Answer: (4) विलियम लिली

Solution:

चरण 1: कृति की सही पहचान।

क्लासिक नैतिक-दर्शन का पाठ्यग्रन्थ **An Introduction to Ethics** के लेखक **William Lillie** हैं। पुस्तक नैतिकता की आधारभूत अवधारणाएँ—सद्गुण, कर्तव्य, सुख, अंत-साधन, दायित्व, अधिकार—को सरल भाषा व उदाहरणों से व्यवस्थित करती है ; इसलिए भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में प्रचलित रही है।

चरण 2: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

अरस्तू की प्रसिद्ध कृति **Nicomachean Ethics** है, न कि **An Introduction to Ethics**। जॉन स्टुअर्ट मिल ने **Utilitarianism** और **On Liberty** लिखे ; यह शीर्षक उनका नहीं। मैकेंजी की प्रसिद्ध कृति **A Manual of Ethics** है। अतः दिए विकल्पों में इस शीर्षक के स्वीकृत लेखक विलियम लिली ही हैं।

Quick Tip

शीर्षक-लेखक जोड़ : An Introduction to Ethics = William Lillie; Manual of Ethics = Mackenzie; Nicomachean Ethics = Aristotle; Utilitarianism = J. S. Mill.

58. शंकर के अनुसार ब्रह्म हैं—

- (1) सत
- (2) चित
- (3) आनन्द
- (4) इनमें से सभी

Correct Answer: (4) इनमें से सभी

Solution:

चरण 1: अद्वैत में ब्रह्म का स्वरूप।

आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में परम सत्य ब्रह्म सत-चित-आनन्द स्वरूप बताया गया है। यह कथन गुण-परक विशेषण नहीं, बल्कि स्वरूप-लक्षण है—ब्रह्म सत अर्थात् निर्विकारी, नित्य अस्तित्व; चित अर्थात् शुद्ध चेतना/ज्ञानस्वरूप; और आनन्द अर्थात् अनन्त परिपूर्णता/सन्तोष का निरवच्छिन्न स्रोत है। उपनिषदों की वाणी सत्यम्-ज्ञानम्-अनन्तम् ब्रह्म इसी बात का दार्शनिक रूप है।

चरण 2: निरुपाधिकता और वर्णन-भेद।

शंकर के अनुसार ब्रह्म निर्गुण है—उसमें संसारवत किसी प्रकार के सीमित गुण नहीं होते। किन्तु साधक की समझ हेतु उपनिषद सत-चित-आनन्द जैसे सूचक पद प्रयुक्त करते हैं जो ब्रह्म के सीमाहीन, चेतन, परिपूर्ण स्वरूप की ओर संकेत करते हैं। यही कारण है कि ब्रह्म को केवल सत या केवल चित न कहकर सत-चित-आनन्द त्रयी के रूप में निरूपित किया जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष।

अतः प्रश्न के अनुरूप ब्रह्म सत भी है, चित भी है और आनन्द भी—तीनों मिलकर ब्रह्म के स्वरूप का संकेत करते हैं; इसलिए सही विकल्प इनमें से सभी।

Quick Tip

सूत्र: ब्रह्म = सत-चित-आनन्द = सत्यम्-ज्ञानम्-अनन्तम्। यह स्वरूप-लक्षण है, सीमित गुण नहीं; इसलिए उत्तर सभी।

59. लाइबनिज के अनुसार ज्ञान का स्रोत क्या है ?

- (1) अनुभव
- (2) बुद्धि
- (3) (a) तथा (b) दोनों
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (2) बुद्धि

Solution:**चरण 1: दार्शनिक स्थिति।**

लाइबनिज प्रमुख रैशनलिस्ट दार्शनिक हैं। उनके अनुसार सत्य का उच्चतर स्रोत बुद्धि/तर्क है, क्योंकि वास्तविक ज्ञान आवश्यक और सार्वभौम होना चाहिए, और ऐसी आवश्यकता केवल बुद्धि-आधारित सिद्धान्तों से मिलती है। वे जन्मजात प्रवृत्तियों/विचारों को भी स्वीकारते हैं जिन्हें अनुभव केवल उत्प्रेरित करता है, उत्पन्न नहीं।

चरण 2: सत्यों का भेद।

लाइबनिज दो प्रकार के सत्य बताते हैं—Reason के सत्य (गणित/तर्क के समान, आवश्यक और विश्लेषणात्मक) तथा Fact के सत्य (प्रयोगजन्य/संभाव्य)। पहले प्रकार का आधार पूरी तरह बुद्धि है; दूसरे प्रकार में अनुभव का उपयोग होता है, पर अंतिम स्पष्टीकरण हेतु वे पर्याप्त कारण के सिद्धान्त तक जाते हैं, जो बुद्धि-न्याय है। इसलिए उनकी ज्ञानमीमांसा में प्राथमिकता बुद्धि को है।

चरण 3: विकल्प परीक्षण।

(1) केवल अनुभव कहना अनुभववादियों (लॉक, ह्यूम) का मत होगा। (3) दोनों कहना आकर्षक लग सकता है, पर लाइबनिज में प्रमुख स्रोत और सत्य की कसौटी बुद्धि ही है; अनुभव सहायक है, मूल स्रोत नहीं। अतः सही उत्तर बुद्धि।

Quick Tip

तृयी याद रखें—Descartes–Spinoza–Leibniz = Rationalists ⇒ मुख्य स्रोत : बुद्धि;
Locke–Berkeley–Hume = Empiricists ⇒ मुख्य स्रोत : अनुभव।

60. कान्ट के अनुसार ज्ञान का स्रोत क्या है ?

- (1) अनुभव
- (2) बुद्धि
- (3) (a) तथा (b) दोनों
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (3) (a) तथा (b) दोनों

Solution:**चरण 1: कान्ट का समन्वय।**

कान्ट के मत में ज्ञान न तो केवल अनुभव से बनता है, न ही केवल बुद्धि से। वह कहता है—संवेदना हमें सामग्री देती है और बुद्धि उसे रूप देती है। अतः यथार्थ ज्ञान के लिए दोनों का संयोग आवश्यक है।

चरण 2: रूप-वस्तु सिद्धान्त।

अनुभूति का रूप जन्मजात है—स्थान और काल संवेदना के पूर्वनियत ढाँचे हैं, जिनमें इन्द्रिय-वस्तु दिखाई देती है। इसके ऊपर बुद्धि की श्रेणियाँ (जैसे कारणता, एकता, बहुलता आदि) अनुभव से आई विविध धाराओं को विचार-रूप में संगठित करती हैं। परिणामस्वरूप हमें अनुभवजन्य किन्तु सार्वभौम कथन मिलते हैं।

चरण 3: प्रसिद्ध सूत्र-वाक्य ।

कान्ट का निष्कर्ष—विषय-वस्तु रहित विचार शून्य हैं; विचार-रहित अनुभूति अन्धी है। अर्थात् बिना अनुभव के बुद्धि निष्फल, और बिना बुद्धि के अनुभव बिखरा हुआ है। इसलिए सही उत्तर दोनों है।

Quick Tip

याद रखें: अनुभव = सामग्री, बुद्धि = रूप \Rightarrow ज्ञान = अनुभव + बुद्धि. सूत्र: विषय-वस्तु रहित विचार शून्य ; विचार-रहित अनुभूति अन्धी ।

61. मिल के अनुसार कारण है—

- (1) भावात्मक उपधियों का योग
- (2) निषेधात्मक उपधियों का योग
- (3) (a) तथा (b) दोनों
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (3) (a) तथा (b) दोनों

Solution:

चरण 1: मिल की परिभाषा ।

जे. एस. मिल कारण को इस प्रकार परिभाषित करते हैं—किसी परिणाम के अनिवार्यतः उत्पन्न होने हेतु जो समस्त शर्तें आवश्यक होती हैं, उनका पूर्ण योग ही उसका कारण है। इन शर्तों में भावात्मक (सकारात्मक, जो उपस्थित होनी चाहिए) और निषेधात्मक (नकारात्मक, जिनका अभाव होना चाहिए) दोनों प्रकार की उपधियाँ आती हैं।

चरण 2: उदाहरण से स्पष्टता ।

जैसे आग के लिए शुष्क ज्वलनशील पदार्थ, पर्याप्त ताप, ऑक्सीजन आदि भावात्मक स्थितियाँ हैं; वहीं निषेधात्मक स्थितियाँ—नमी का अभाव, अग्नि-निरोधक का अभाव, दहन-स्थान का निर्वात न होना—इत्यादि। इन सभी शर्तों का समुच्चय पूरा होने पर ही परिणाम आग लगना अनिवार्यतः घटित होता है।

चरण 3: विकल्पों का परीक्षण ।

यदि केवल भावात्मक शर्तें मानें और निषेधात्मक की उपेक्षा करें, या उलटा करें, तो परिणाम नहीं आएगा। अतः मिल का कारण-सिद्धान्त दोनों प्रकार की उपधियों के पूर्ण योग पर बल देता है ; इसलिए सही उत्तर (3) है।

Quick Tip

मिल का सूत्र: Cause = Sum of Positive + Negative Conditions. याद रखने का संकेत— उपस्थिति भी, अनुपस्थिति भी \Rightarrow दोनों का पूर्ण योग = कारण ।

62. कान्ट के अनुसार ज्ञान है—

- (1) प्रागनुभविक निर्णय
- (2) अनुभव सापेक्ष निर्णय

- (3) संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय
 (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (3) संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय

Solution:

चरण 1: मूल प्रतिपादन।

कान्ट के अनुसार ज्ञान का स्वरूप समझने की कुंजी निर्णयों का भेद है—विश्लेषणात्मक/संश्लेषणात्मक तथा प्रागनुभविक/अनुभवोपरान्त। वह बताता है कि वैज्ञानिक/दार्शनिक महत्त्व का यथार्थ ज्ञान मुख्यतः संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक होता है—ऐसे कथन जो अनुभव से पहले भी वैध हों, पर नया तत्व जोड़कर हमारे ज्ञान का विस्तार करें (उदाहरण: गणित के सिद्धान्त, भौतिकी के सार्वभौम नियमों का रूप)।

चरण 2: यह कैसे सम्भव है ?

संवेदना के पूर्व-रूप स्थान और काल तथा बुद्धि की श्रेणियाँ (जैसे कारणता, संख्या, एकता) अनुभव-समग्री पर रूप आरोपित करती हैं। इसलिए हमें ऐसे सार्वत्रिक तथा आवश्यक कथन मिलते हैं जो अनुभव-निर्भर सामग्री पर a priori रूपों के कारण संश्लेषणात्मक होते हैं। इस प्रकार गणित और शुद्ध प्राकृतिक विज्ञान की नींव संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णयों पर टिकी है।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

(1) केवल प्रागनुभविक कहना अधूरा है—विश्लेषणात्मक भी प्रागनुभविक हो सकते हैं पर ज्ञान का विस्तार नहीं करते। (2) अनुभव सापेक्ष केवल a posteriori है—सार्वभौमिक आवश्यक ज्ञान नहीं देता। अतः उपयुक्त उत्तर संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक है।

Quick Tip

कान्ट सूत्र: ज्ञान = अनुभव की सामग्री + a priori रूप \Rightarrow मुख्य रूप संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक (गणित/भौतिकी की नींव)।

63. कान्ट के ज्ञान सम्बन्धी विचार को कहते हैं—

- (1) अनुभववाद
 (2) बुद्धिवाद
 (3) समीक्षावाद
 (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (3) समीक्षावाद

Solution:

चरण 1: पद की पहचान।

कान्ट ने अपने ज्ञान-दर्शन को Critique (आलोचना/समीक्षा) कहा—इसलिए उसके ज्ञान सम्बन्धी विचारों के लिए समीक्षावाद (आलोचनात्मक दर्शन) शब्द प्रयुक्त होता है। उद्देश्य था : ज्ञान की सीमाएँ, स्रोत और वैधता का समीक्षात्मक परीक्षण।

चरण 2: सिद्धान्त का सार।

कान्ट अनुभववाद और बुद्धिवाद का समन्वय करता है: संवेदना सामग्री देती है, बुद्धि अपने a priori रूपों (स्थान-काल) और श्रेणियों (जैसे कारणता) से उसे रूप देती है। इस प्रकार प्रमुख ज्ञान संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक रूप में सम्भव होता है। वह प्रतीति/वस्तु-स्वरूप भेद भी करता है—ज्ञान केवल प्रतीतियों तक सीमित है, नौमेनन का सैद्धान्तिक ज्ञान नहीं। यह समूची पद्धति समीक्षात्मक है, इसीलिए इसे समीक्षावाद कहा जाता है।

चरण 3: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

(1) अनुभववाद और (2) बुद्धिवाद एकांगी सिद्धान्त हैं; कान्ट न तो केवल अनुभववादी है न केवल बुद्धिवादी, बल्कि आलोचनात्मक समन्वयवादी है। अतः सही उत्तर समीक्षावाद।

Quick Tip

सूत्र: Kant = Critique ⇒ समीक्षावाद; ज्ञान = अनुभव की सामग्री + a priori रूप/श्रेणियाँ (संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक)।

64. समीक्षात्मक वस्तुवाद को कहते हैं—

- (1) ज्ञानमीमांसीय एकवाद
- (2) ज्ञानमीमांसीय द्वैतवाद
- (3) तत्त्वमीमांसीय द्वैतवाद
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (2) ज्ञानमीमांसीय द्वैतवाद

Solution:

चरण 1: शब्दार्थ और मत।

समीक्षात्मक वस्तुवाद या Critical Realism वह दृष्टि है जो बाह्य जगत को यथार्थ, मन से स्वतंत्र मानती है, पर ज्ञान-प्रक्रिया को मध्यस्थित और समालोचनात्मक समझती है। इसलिए यह ज्ञाता और ज्ञेय के बीच एपिस्टेमिक दूरी मानकर चलता है—यही ज्ञानमीमांसीय द्वैतवाद है। वस्तु वास्तविक है, किंतु उसका प्रत्यक्ष हमें संवेदना, संकल्पना, भाषा, प्रतिरूपों के माध्यम से मिलता है; अतः ज्ञान सिद्धांती/व्याख्यापरक होता है, सीधे-सीधे वस्तु-स्वरूप नहीं।

चरण 2: अन्य मतों से भेद।

साधारण/भोला वस्तुवाद तत्काल प्रत्यक्ष को ही वस्तु-समान मान लेता है; आदर्शवाद वस्तु को चेतना-निर्भर कह देता है। समीक्षात्मक वस्तुवाद इन दोनों के मध्य—वस्तु तो स्वतंत्र है, पर ज्ञान उसकी आलोचनात्मक व्याख्या है, इसलिए त्रुटिसंभावी और सुधारणीय। यही कारण है कि इसे ज्ञानमीमांसीय द्वैतवाद कहा जाता है; जबकि तत्त्वमीमांसीय द्वैतवाद पदार्थ-स्तर पर दो स्वतंत्र तत्त्व (जैसे मन-पदार्थ) ठहराता है, जो यहाँ आशय नहीं।

निष्कर्ष:

सही विकल्प ज्ञानमीमांसीय द्वैतवाद है; समीक्षात्मक वस्तुवाद में ज्ञाता-ज्ञेय का ज्ञान-स्तरीय द्वैत माना जाता है, पर वस्तु की यथार्थता भी स्वीकार होती है।

Quick Tip

सूत्र: Critical Realism = Realism (वस्तु स्वतंत्र) + Critical Epistemology (ज्ञान मध्य-स्थित) ⇒ ज्ञानमीमांसीय द्वैतवाद, न कि तत्त्वमीमांसीय ।

65. किसने कहा है कि 'ज्ञान की प्राप्ति जन्मजात प्रत्यय से होती है' ?

- (1) अनुभववादियों ने
- (2) बुद्धिवादियों ने
- (3) (a) तथा (b) दोनों
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (2) बुद्धिवादियों ने

Solution:

चरण 1: सिद्धान्त की पहचान।

बुद्धिवादी/रैशनलिस्ट दार्शनिक (जैसे देकार्त, स्पिनोज़ा, लाइबनिज) मानते हैं कि कुछ जन्मजात प्रत्यय अथवा a priori रूप पहले से ही मन में निहित होते हैं। इसलिए यथार्थ ज्ञान का मूल स्रोत बुद्धि है; अनुभव मात्र उत्प्रेरक या सामग्री देता है। देकार्त ईश्वर/स्व/गणित के विचारों को, और लाइबनिज शिरा-युक्त संगमरमर की उपमा से जन्मजात प्रवृत्तियों को समझाते हैं।

चरण 2: प्रतिपक्ष क्या कहता है?

अनुभववादी (लॉक, ह्यूम आदि) जन्मजात प्रत्ययों का निराकरण करते हैं—मन को कोरी पट्टी मानते हुए समस्त ज्ञान को इन्द्रिय-अनुभव से उत्पन्न बताते हैं। अतः विकल्प (1) गलत है; (3) दोनों कहना भी असंगत है क्योंकि दोनों परम्पराओं के मत विरोधी हैं।

चरण 3: निष्कर्ष।

प्रश्न में "जन्मजात प्रत्यय से ज्ञान" की बात है—यह बुद्धिवादियों का प्रतिपादन है; इसलिए सही उत्तर (2)।

Quick Tip

याद रखें—Rationalists = जन्मजात प्रत्यय, बुद्धि मुख्य (Descartes–Spinoza–Leibniz); Empiricists = अनुभव मुख्य, मन कोरी पट्टी (Locke–Berkeley–Hume)।

66. 'मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ' कथन दिया गया है—

- (1) देकार्त द्वारा
- (2) कान्ट द्वारा
- (3) ह्यूम द्वारा
- (4) स्पिनोज़ा द्वारा

Correct Answer: (1) देकार्त द्वारा

Solution:**चरण 1: सन्देह की पद्धति।**

रेने देकार्त ने ज्ञान की अटल नींव खोजने हेतु विधिवत् सन्देह अपनाया—इन्द्रिय, स्वप्न, यहाँ तक कि गणितीय सत्य तक पर संदेह किया। पर एक तथ्य ऐसा मिला जिस पर सन्देह स्वयं असम्भव है : सन्देह/सोच होने का तथ्य।

चरण 2: 'Cogito' का निष्कर्ष।

यदि मैं सोच रहा हूँ, तो सोचने वाला अवश्य है—मैं। इसलिए सूत्र बनता है : “मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ”। यह मेरे चिन्तनशील आत्मा के अस्तित्व का तात्कालिक और स्वसिद्ध प्रमाण है ; इसे देकार्त *res cogitans* (चिन्तनशील पदार्थ) कहता है। यह निष्कर्ष देह या बाह्य-जगत के अस्तित्व का तात्कालिक प्रमाण नहीं देता, बल्कि आत्मचेतना को ज्ञान की प्रथम निश्चितता ठहराता है।

चरण 3: महत्व और अपवर्जन।

यही देकार्तीय रैशनलिज्म का प्रारम्भ-बिन्दु बनता है, जिसके बाद वह ईश्वर और जगत के अस्तित्व की दलीलें देता है। कान्ट, ह्यूम और स्पिनोज़ा ने यह सूत्र नहीं दिया ; अतः सही उत्तर देकार्त।

Quick Tip

याद रखें—*Cogito, ergo sum* = देकार्त. सोचने की क्रिया पर संदेह भी सोच है ⇒ आत्म-अस्तित्व स्वयंसिद्ध।

67. शिक्षा दर्शन एक शाखा है—

- (1) मनोविज्ञान की
- (2) अर्थशास्त्र की
- (3) तर्कशास्त्र की
- (4) इनमें से किसी की नहीं

Correct Answer: (4) इनमें से किसी की नहीं

Solution:**चरण 1: पद की सही पहचान।**

शिक्षा-दर्शन वास्तव में दर्शनशास्त्र की अनुप्रयुक्त शाखा है, जिसका विषय है—शिक्षा के लक्ष्य, मूल्य, ज्ञान-दृष्टि, मानव- assistant

68. व्यापार व्यवसाय है—

- (1) अनैतिक
- (2) क्रूर
- (3) लाभोन्मुखी
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (3) लाभोन्मुखी

Solution:**चरण 1: व्यापार की मूल प्रकृति।**

व्यापार का मूल उद्देश्य लाभ कमाते हुए मूल्य-निर्माण करना है। उत्पादन, क्रय-विक्रय, वितरण, जोखिम-वहन और पूँजी-निवेश जैसी क्रियाएँ अंततः आय-व्यय के अंतर अर्थात् लाभ के लिए संगठित की जाती हैं। इसलिए व्यापार को लाभोन्मुखी गतिविधि कहा जाता है।

चरण 2: नैतिकता और सामाजिक दायित्व।

लाभोन्मुखी होना अनैतिक या क्रूर होना नहीं है। आधुनिक व्यवसाय कानूनी अनुपालन, ग्राहकों के हित, कॉर्पोरेट गवर्नेंस और सीएसआर के माध्यम से समाज-हित का भी अनुसरण करता है। स्थायी लाभ वही है जो नैतिक आचरण, गुणवत्ता और विश्वास पर टिका हो। इसीलिए व्यापार को अनैतिक/क्रूर कहना गलत सामान्यीकरण है, जबकि उसकी परिभाषा में लाभ-प्रेरणा स्वाभाविक तत्व है।

चरण 3: निष्कर्ष/उन्मूलन।

विकल्प (1) और (2) मूल्य-निर्णय हैं, पर व्यापार की सार्वभौमिक विशेषता नहीं। सही विशेषता लाभोन्मुखी होना है; अतः उत्तर (3)।

Quick Tip

सूत्र: व्यापार = लाभोन्मुखी मूल्य-निर्माण + नैतिक/कानूनी ढाँचा। “लाभ” देखें ⇒ व्यापार की पहचान।

69. प्रागनुभविक ज्ञान सम्बन्धित है—

- (1) बुद्धि से
- (2) अनुभव से
- (3) (a) तथा (b) दोनों
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (1) बुद्धि से

Solution:

चरण 1: अर्थ-निर्धारण।

प्रागनुभविक (a priori) वह ज्ञान है जो अनुभव पर निर्भर नहीं होता, बल्कि बुद्धि/मन की जन्मजात संरचनाओं से प्राप्त होता। यह सार्वभौमिक और आवश्यक होता है—जैसे गणितीय सत्य, तर्क के नियम, कारणता जैसी श्रेणी की अनिवार्यता।

चरण 2: कान्ट का संकेत।

कान्ट बताता है कि ज्ञान में अनुभव सामग्री देता है पर a priori रूप (स्थान, काल) और बुद्धि की श्रेणियाँ उसे रूपायित करती हैं। इस अर्थ में प्रागनुभविक का हेतु बुद्धि/मन की पूर्व-स्थित शक्तियाँ हैं, न कि इन्द्रिय-अनुभव।

चरण 3: विकल्प-उन्मूलन।

- (2) अनुभव a posteriori का आधार है;
 - (3) दोनों कहना ठीक नहीं, क्योंकि प्रागनुभविक की परिभाषा ही अनुभव-स्वतंत्रता है;
- अतः सही उत्तर बुद्धि से।

Quick Tip

कुंजी : a priori = reason-based, universal, necessary; a posteriori = experience-based, contingent. प्रश्न में “प्रागनुभविक” दिखे \Rightarrow बुद्धि चुने।

70. प्रत्ययवाद है।

- (1) ज्ञानमीमांसीय सिद्धान्त
- (2) तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्त
- (3) (a) तथा (b) दोनों
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (1) ज्ञानमीमांसीय सिद्धान्त

Solution:

चरण 1: प्रत्ययवाद की संकल्पना।

‘प्रत्यय’ का अर्थ यहाँ मानसिक अनुभूति/अवधारणा/प्रतिनिधि (representation) है। प्रत्ययवाद यह मानता है कि हमारा ज्ञान बाह्य वस्तु का नहीं, बल्कि उसके मानसिक प्रतिनिधि (प्रत्यय) का होता है; अर्थात् जानने का तात्कालिक विषय प्रत्यय है और वस्तु तक पहुँच माध्यमिक है। इसलिए यह सिद्धान्त ज्ञान की प्रकृति, विषय और वैधता का विवेचन करता है—जो कि ज्ञानमीमांसा (Epistemology) का क्षेत्र है।

चरण 2: तत्त्वमीमांसा से भेद।

तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्त वस्तु-सत्ता की वास्तविक प्रकृति (जैसे यथार्थवाद, आदर्शवाद, अद्वैत, द्वैत) पर कथन करते हैं। प्रत्ययवाद का मुख्य आग्रह “हम जानते कैसे हैं” पर है, “वस्तु क्या है” पर नहीं; अतः यह ज्ञानमीमांसीय है। कुछ बौद्ध धाराएँ (जैसे विज्ञानवाद/चित्तमात्र) प्रत्यय-केन्द्रित होकर तत्त्वमीमांसक निष्कर्ष भी देती हैं, पर ‘प्रत्ययवाद’ शब्द का मानक प्रयोग ज्ञानमीमांसीय मत के लिए ही होता है।

चरण 3: निष्कर्ष/उन्मूलन।

इसलिए इसे दोनों कहना (विकल्प 3) सामान्यीकरण होगा, और तत्त्वमीमांसीय (विकल्प 2) कहना असंगत है। उपयुक्त उत्तर ज्ञानमीमांसीय सिद्धान्त है।

Quick Tip

स्मरण: प्रत्यय = representation (मानसिक प्रति) \Rightarrow प्रत्ययवाद = हम प्रत्ययों को जानते हैं \Rightarrow विषय Epistemology। तत्त्वमीमांसा वस्तु-क्या पर, प्रत्ययवाद ज्ञान-कैसे पर।

71. बुद्ध के किस आर्य सत्य में दुःखों का कारण वर्णित है ?

- (1) प्रथम
- (2) द्वितीय

- (3) तृतीय
(4) चतुर्थ

Correct Answer: (2) द्वितीय

Solution:

चरण 1: चार आर्य सत्यों का क्रम ।

बौद्ध दर्शन में चार आर्य सत्य हैं—(i) दुःख (जीवन-दशाएँ दुःखमय), (ii) समुदय (दुःख का कारण—तृष्णा/अविद्या जनित आसक्ति), (iii) निरोध (तृष्णा-क्षय से दुःख-निरोध संभव), (iv) मार्ग (निरोध के लिए अष्टाङ्गिक मार्ग) ।

चरण 2: 'समुदय' का आशय ।

द्वितीय आर्य सत्य समुदय कहलाता है—यह बताता है कि दुःखों का उद्भव तृष्णा (काम-तृष्णा, भव-तृष्णा, विभव-तृष्णा) से होता है । प्रतित्यसमुत्पाद की कड़ी—अविद्या → संस्कार → विज्ञान... → तृष्णा → उपादान → भव → जाति → जरा-मरण—में तृष्णा के उन्मूलन से चक्र रुकता है ।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन ।

प्रथम सत्य दुःख का वर्णन करता है, कारण नहीं । तृतीय निरोध (समाधान) बताता है और चतुर्थ मार्ग (अष्टाङ्गिक साधना) प्रस्तुत करता है । अतः कारण का वर्णन द्वितीय सत्य में ही है ।

Quick Tip

क्रम स्मरण: दुःख-समुदय(कारण)-निरोध-मार्ग ⇒ "समुदय = कारण" — प्रश्न में 'कारण' दिखे तो द्वितीय चुनें ।

72. निम्न में से कौन नास्तिक दर्शन है ?

- (1) योग दर्शन
(2) न्याय दर्शन
(3) जैन दर्शन
(4) सांख्य दर्शन

Correct Answer: (3) जैन दर्शन

Solution:

चरण 1: मानदण्ड समझें ।

भारतीय परम्परा में आस्तिक/नास्तिक का भेद वेद-प्रामाण्य पर आधारित है । जो दर्शन वेदों को प्रमाण मानते हैं, वे आस्तिक; जो नहीं मानते, वे नास्तिक कहलाते हैं । यह वर्गीकरण ईश्वर-स्वीकार पर नहीं, केवल वेद-स्वीकृति पर टिका है ।

चरण 2: विकल्पों का मिलान ।

योग, न्याय और सांख्य — तीनों आस्तिक दर्शनों में आते हैं; ये वेद-प्रामाण्य स्वीकारते हैं और षड्दर्शन की श्रेणी में गिने जाते हैं । जैन दर्शन वेद-प्रामाण्य नहीं मानता ; इसकी अपनी स्वतंत्र साधना-शास्त्र परम्परा (अनेकान्तवाद, स्याद्वाद, नयवाद, तिररत्न आदि) है, इसलिए यह नास्तिक सम्प्रदाय

है।

चरण 3: निष्कर्ष।

अतः दिए गए विकल्पों में नास्तिक दर्शन केवल जैन है ; अन्य तीन आस्तिक हैं।

Quick Tip

सूत्र: आस्तिक = वेद-प्रामाण्य (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त) ; नास्तिक = वेद-अस्वीकृति (बौद्ध, जैन, चार्वाक)।

73. जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर कौन हैं ?

- (1) महावीर
- (2) पार्श्वनाथ
- (3) गौतम
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (4) इनमें से कोई नहीं

Solution:

चरण 1: तथ्य की पहचान।

जैन परम्परा में कुल 24 तीर्थंकर माने जाते हैं। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (जिन्हें आदिनाथ भी कहा जाता है) हैं। उनके पश्चात् क्रमशः अन्य तीर्थंकर होते हुए तेइसवें पार्श्वनाथ और चौबीसवें महावीर हैं।

चरण 2: विकल्प जाँच।

दिए गए विकल्पों में महावीर (24वें) और पार्श्वनाथ (23वें) अवश्य जैन तीर्थंकर हैं, किन्तु प्रथम नहीं। गौतम जैन परम्परा में गौतम गणधर के रूप में महावीर के शिष्य हैं, तीर्थंकर नहीं। अतः चूँकि ऋषभदेव/आदिनाथ सूची में नहीं हैं, सही विकल्प इनमें से कोई नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष।

प्रश्न का यथार्थ उत्तर ऋषभदेव (आदिनाथ) है ; विकल्पों में न होने के कारण (4) इनमें से कोई नहीं का चयन उचित है।

Quick Tip

स्मरण: 1st—ऋषभदेव (आदिनाथ), 23rd—पार्श्वनाथ, 24th—महावीर. “प्रथम” पूछा जाए और ऋषभदेव न हो ⇒ इनमें से कोई नहीं।

74. योग दर्शन के प्रवर्तक कौन हैं ?

- (1) गौतम
- (2) कणाद
- (3) पतंजलि

(4) कपिल

Correct Answer: (3) पतंजलि

Solution:

चरण 1: प्रवर्तक और ग्रन्थ।

भारतीय परम्परा में पतंजलि को योग दर्शन का प्रवर्तक/संहिता-कर्ता माना जाता है। उनकी रचना योगसूत्र चार पादों में अष्टाङ्ग-योग की विधि, चित्तवृत्ति-निरोध, समाधि और कैवल्य का पद्धतिपूर्वक निरूपण करती है।

चरण 2: दर्शन का स्वरूप।

योग दर्शन व्यवहार-उन्मुख है—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि के क्रम से चित्त की शुद्धि और एकाग्रता कर मुक्तिपथ दिखाता है। इसे प्रायः सांख्य के समान-तंत्र के रूप में समझा जाता है : सांख्य तत्त्वज्ञान देता है, योग उसकी साधना-पद्धति।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

गौतम न्यायसूत्रकार; कणाद वैशेषिक के प्रवर्तक; कपिल सांख्य के प्रवर्तक हैं। अतः योग के प्रवर्तक पतंजलि ही हैं।

Quick Tip

युगम याद रखें: सांख्य-योग. प्रवर्तक जोड़ी : कपिल = सांख्य, पतंजलि = योग; गौतम = न्याय, कणाद = वैशेषिक।

75. न्याय दर्शन के प्रवर्तक कौन हैं ?

- (1) गौतम
- (2) कपिल
- (3) कणाद
- (4) महावीर

Correct Answer: (1) गौतम

Solution:

चरण 1: प्रवर्तक और ग्रन्थ।

न्याय दर्शन के प्रवर्तक आक्षेपाद गौतम माने जाते हैं, जिन्होंने न्यायसूत्र की रचना की। यह ग्रन्थ भारतीय तर्क-शास्त्र का मूल स्रोत है।

चरण 2: न्याय का केन्द्रीय विषय।

न्याय का ध्येय यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष तक पहुँचना है। इसके लिए यह चार प्रमाण स्वीकार करता है—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।

वाद के न्याय में १६ पदार्थ (जैसे प्रमाण, प्रमेय, संदेह, प्रयोजन, उदाहरण, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, विटण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान) से तर्क-वितर्क की पूर्ण पद्धति दी जाती है।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

कपिल—सांख्य दर्शन के प्रवर्तक; कणाद—वैशेषिक के प्रवर्तक; महावीर—जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर।
अतः न्याय के प्रवर्तक गौतम ही हैं।

Quick Tip

स्मरण जोड़ी : गौतम = न्याय, कणाद = वैशेषिक, कपिल = सांख्य, पतंजलि = योग।

76. सांख्य दर्शन के प्रवर्तक कौन हैं ?

- (1) पतंजलि
- (2) कपिल
- (3) कणाद
- (4) गौतम

Correct Answer: (2) कपिल

Solution:

चरण 1: प्रवर्तक और ग्रन्थ।

कपिल को परम्परा में सांख्य दर्शन का प्रवर्तक माना जाता है। उनके विचारों का सूत्रबद्ध रूप आगे चलकर ईश्वरकृष्ण के सांख्यकारिका में मिलता है, जिसमें सांख्य का तत्त्व-शास्त्र सुव्यवस्थित हुआ।

चरण 2: सांख्य का सार।

सांख्य दो मूल तत्त्व मानता है—पुरुष (चेतन, अनेक, निष्क्रिय साक्षी) और प्रकृति (अचेतन, त्रिगुण—सत्त्व, रजस, तमस)। प्रकृति के विकार क्रम से महत्त, अहंकार, मन, इन्द्रियाँ, तन्मात्राएँ, महाभूत आदि 24 तत्त्व प्रकट होते हैं। अविद्या से पुरुष स्वयं को प्रकृति-गुणों से अभिदृष्ट मान लेता है; विवेक-ज्ञान से उनका भेद बोध होने पर कैवल्य (मुक्ति) प्राप्त होती है।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

पतंजलि योग के संहिताकार, कणाद वैशेषिक के प्रवर्तक और गौतम न्याय के प्रवर्तक हैं। अतः सांख्य के प्रवर्तक कपिल ही हैं।

Quick Tip

युग्म याद रखें: कपिल-सांख्य, पतंजलि-योग, कणाद-वैशेषिक, गौतम-न्याय।

77. अद्वैत वेदान्त के प्रवर्तक कौन हैं ?

- (1) शंकर
- (2) रामानुज
- (3) निम्बार्क
- (4) मध्व

Correct Answer: (1) शंकर

Solution:

चरण 1: प्रवर्तक और ग्रन्थ।

अद्वैत वेदान्त के प्रवर्तक आदि शंकराचार्य माने जाते हैं। उन्होंने ब्रह्मसूत्र पर शारीरक-भाष्य, उपनिषदों तथा गीता पर भाष्य लिखकर अद्वैत के सिद्धान्त को सुव्यवस्थित रूप दिया और भारतभर में शास्त्रार्थों से इसे प्रतिष्ठित किया।

चरण 2: सिद्धान्त का सार।

अद्वैत के अनुसार ब्रह्म ही एकमेव परम-सत्य है—सत्-चित्-आनन्द स्वरूप; जीव और जगत उपाधि/अविद्या से नाम-रूपात्मक प्रतीति (विवर्त) हैं। ज्ञान द्वारा अविद्या-क्षय होने पर जीव का स्वरूप-ब्रह्म से अभेद प्रत्यक्ष होता है—यही मोक्ष है। साधना में श्रवण-मनन-निदिध्यासन पर बल दिया जाता है।

चरण 3: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

रामानुज—विशिष्टाद्वैत के आचार्य; निम्बार्क—द्वैताद्वैत (भेदाभेद) के प्रवर्तक; मध्व—द्वैत (शुद्ध भेद) के प्रवर्तक हैं। अतः अद्वैत वेदान्त के प्रवर्तक शंकर ही हैं।

Quick Tip

वेदान्त स्मरण-सूत्र: शंकर—अद्वैत, रामानुज—विशिष्टाद्वैत, निम्बार्क—द्वैताद्वैत, मध्व—द्वैत।

78. वैशेषिक दर्शन के अनुसार निम्नांकित में कौन द्रव्य नहीं है ?

- (1) कर्म
- (2) काल
- (3) आत्मा
- (4) पृथ्वी

Correct Answer: (1) कर्म

Solution:

चरण 1: द्रव्य की परिभाषा।

वैशेषिक के सात (बाद में आठ) पदार्थों में द्रव्य वह आधार है जिसमें गुण और कर्म अध्यारोपित होते हैं तथा जिससे संयोग-विभाग आदि संभव होते हैं।

चरण 2: द्रव्यों की सूची।

वैशेषिक नौ द्रव्य मानता है—(i) पृथ्वी, (ii) आप, (iii) तेज, (iv) वायु, (v) आकाश, (vi) काल, (vii) दिशा, (viii) आत्मा, (ix) मन। ये सब द्रव्य श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।

कर्म (गति/आंदोलन) द्रव्य नहीं, बल्कि पदार्थों की अलग श्रेणी है—इसके पाँच भेद माने गए हैं: उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण, गमन। अतः कर्म द्रव्य नहीं ठहरता।

चरण 3: विकल्प-उन्मूलन।

काल, आत्मा और पृथ्वी—तीनों वैशेषिक के द्रव्य हैं; जबकि कर्म द्रव्य का गुणधर्म नहीं बल्कि पृथक् पदार्थ-श्रेणी है। इसलिए सही उत्तर (1) कर्म।

Quick Tip

नौ द्रव्य याद रखें: पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा, मन.
सूत्र: कर्म ≠ द्रव्य — यह अलग पदार्थ-श्रेणी है।

79. निम्न में से कौन आस्तिक दर्शन है ?

- (1) बौद्ध दर्शन
- (2) जैन दर्शन
- (3) न्याय दर्शन
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (3) न्याय दर्शन

Solution:

चरण 1: आस्तिक-नास्तिक का मानदण्ड।

भारतीय परम्परा में “आस्तिक” वह दर्शन है जो वेद-प्रामाण्य को स्वीकार करे; जो वेदों को प्रमाण न माने, वह नास्तिक कहलाता है। यह वर्गीकरण ईश्वर-स्वीकार पर नहीं, वेद-स्वीकृति पर आधारित है।

चरण 2: दर्शनों का वर्गीकरण।

आस्तिक (षड्दर्शन): न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा, वेदान्त—ये वेद-प्रामाण्य मानते हैं।
नास्तिक: बौद्ध, जैन, चार्वाक—ये वेद-प्रामाण्य नहीं मानते, अपनी स्वतन्त्र आगम/तर्क पर चलने वाली परम्पराएँ हैं।

चरण 3: विकल्प जाँच।

न्याय वेद-प्रामाण्य स्वीकार करने के कारण आस्तिक है; जबकि बौद्ध और जैन परम्पराएँ नास्तिक वर्ग में आती हैं। इसलिए सही विकल्प (3) न्याय दर्शन।

Quick Tip

स्मरण-सूत्र: आस्तिक = षड्दर्शन (न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योग-मीमांसा-वेदान्त); नास्तिक = बौद्ध-जैन-चार्वाक। “वेद-प्रामाण्य” देखें ⇒ आस्तिक।

80. सांख्य दर्शन में आत्मा के लिए जिस पद का प्रयोग हुआ है, वह है—

- (1) ईश्वर
- (2) जीव
- (3) पुरुष
- (4) अजीव

Correct Answer: (3) पुरुष

Solution:

चरण 1: सांख्य का द्वैत-तत्त्व।

सांख्य दर्शन जगत को दो स्वतंत्र तत्त्वों से समझाता है—पुरुष और प्रकृति। यहाँ पुरुष ही आत्मा/चेतन

तत्त्व है : वह अनेक, शुद्ध-चैतन्य, निरपेक्ष, अकर्ता-अभोक्ता साक्षी स्वरूप माना गया है ; जबकि प्र-कृति अचेतन, त्रिगुणात्मक (सत्त्व-रजस-तमस) कारण-तत्त्व है ।

चरण 2: पद-भेद और अन्य दर्शनों से तुलना ।

‘जीव’ शब्द वेदान्त/भक्ति परम्पराओं में देह-उपाधि से संलग्न आत्मा के लिए अधिक प्रयुक्त होता है ; जैन में जीव-अजीव का भेद है । सांख्य में तकनीकी पद ‘पुरुष’ ही है । ‘ईश्वर’ का स्वीकार क्लासिकल सांख्य नहीं करता (योग में ईश्वर-प्रणिधान मिलता है), अतः विकल्प (1) असंगत है ।

चरण 3: निष्कर्ष ।

इसलिए सांख्य में आत्मा के लिए प्रयुक्त सही पद ‘पुरुष’ है—विकल्प (3) ।

Quick Tip

मंत्र: सांख्य = पुरुष (चेतन) + प्रकृति (अचेतन) । जैन का जीव/अजीव, वेदान्त का जीव-ब्रह्म ; पर सांख्य में आत्मा = पुरुष ।

81. न्याय के द्वारा कितने प्रमाणों को स्वीकार किया गया है ?

- (1) दो
- (2) तीन
- (3) चार
- (4) छः

Correct Answer: (3) चार

Solution:

चरण 1: न्याय में प्रमाण-स्वीकार ।

न्याय दर्शन चार प्रमाण मानता है—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द । उद्देश्य है यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष का साधन बनाना, इसलिए सही ज्ञान-मार्गों की स्पष्ट सूची दी जाती है ।

चरण 2: संक्षिप्त परिभाषाएँ ।

- (1) प्रत्यक्ष—इन्द्रिय/मानस संयोग से उत्पन्न तात्कालिक ज्ञान (निरविकल्प-सविकल्प आदि भेद) ।
- (2) अनुमान—व्याप्ति-स्मृति के आधार पर लिङ्ग से लिङ्गि का ज्ञान; जैसे धुँ से आग का निष्कर्ष ।
- (3) उपमान—सादृश्य के माध्यम से अज्ञात वस्तु का ज्ञान; जैसे ‘गवय’ का ज्ञान, ‘गाय के सदृश’ सुनकर वन में देखकर पहचानना ।
- (4) शब्द—आप्तवाक्य/विश्वसनीय वचन से ज्ञान; वैदिक वचन तथा विश्वसनीय विशेषज्ञ का कथन ।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन ।

दो और तीन प्रमाण सांख्य/वैशेषिक आदि में मिलते हैं; छः प्रमाण मीमांसा/वेदान्त में स्वीकृत हैं । न्याय का मानक मत चार प्रमाण ही है—अतः सही उत्तर (3) ।

Quick Tip

सूत्र: प्र-अ-उ-श = प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द \Rightarrow न्याय = 4 प्रमाण; मीमांसा/वेदान्त = 6, सांख्य = 3।

82. जैन दर्शन के चौबीसवें तीर्थंकर कौन हैं ?

- (1) गौतम
- (2) ऋषभदेव
- (3) कणाद
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (4) इनमें से कोई नहीं

Solution:

चरण 1: तथ्य स्मरण।

जैन परम्परा में 24 तीर्थंकर होते हैं। चौबीसवें तीर्थंकर महावीर (वर्धमान) हैं, जिनका निर्वाण पावापुरी में माना जाता है।

चरण 2: विकल्पों का मिलान।

- (1) गौतम—महावीर के प्रधान शिष्य गौतम गणधर; तीर्थंकर नहीं।
- (2) ऋषभदेव—जैन परम्परा के प्रथम तीर्थंकर (आदिनाथ), न कि 24वें।
- (3) कणाद—वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक, जैन तीर्थंकर नहीं।

अतः चूँकि महावीर (24वें) विकल्पों में नहीं हैं, उचित उत्तर (4) इनमें से कोई नहीं है।

Quick Tip

जैन तीर्थंकर अनुक्रम: 1—ऋषभदेव (आदिनाथ), 23—पार्श्वनाथ, 24—महावीर. “चौबीसवें” दिखे और महावीर न हो \Rightarrow इनमें से कोई नहीं चुनें।

83. बुद्ध ने कितने आर्य सत्य बतलाये हैं ?

- (1) तीन
- (2) चार
- (3) छः
- (4) आठ

Correct Answer: (2) चार

Solution:

चरण 1: मूल तथ्य।

भगवान बुद्ध ने चार आर्य सत्य प्रतिपादित किए, जो बौद्ध दर्शन की जड़ हैं—दुःख, समुदय, निरोध, मार्ग। ये जीवन की समस्या, उसके कारण, उसके निवारण और निवारण के साधन का पूर्ण निदान-चक्र देते हैं।

चरण 2: प्रत्येक सत्य का सार।

- (1) दुःख—जन्म, जरा, व्याधि, मृत्यु ; पिरय-वियोग, अपिरय-संयोग, न इच्छित की प्राप्ति—ये सभी दुःख हैं।
- (2) समुदय (कारण)—दुःख का कारण तृष्णा (काम, भव, विभव) है ; यह प्रतित्यसमुत्पाद श्रंखला में केन्द्रीय कड़ी है।
- (3) निरोध—तृष्णा-क्षय से दुःख का निरोध संभव है ; यही निर्वाण का सिद्धान्त है।
- (4) मार्ग—निरोध हेतु अष्टाङ्गिक मार्ग (सम्यक दृष्टि, संकल्प, वाक, कर्मान्त, आजीव, प्रयास, स्मृति, समाधि) का आचरण आवश्यक है।

चरण 3: विकल्प-उन्मूलन।

तीन/छः/आठ संख्या अन्य संदर्भों से जुड़ती हैं (जैसे अष्टाङ्गिक मार्ग = 8), पर आर्य सत्य की संख्या चार ही है—अतः सही उत्तर (2)।

Quick Tip

स्मरण-मंत्र: दु-सम-नि-मार्ग = दुःख, समुदय, निरोध, मार्ग. “समुदय = कारण” और “मार्ग = अष्टाङ्गिक”।

84. किस दर्शन में सम्यक् समाधि का वर्णन है ?

- (1) योग दर्शन
 (2) बौद्ध दर्शन
 (3) जैन दर्शन
 (4) न्याय दर्शन

Correct Answer: (2) बौद्ध दर्शन

Solution:

चरण 1: पद की पहचान।

सम्यक् समाधि बौद्ध धर्म के आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग का आठवाँ अंग है—सम्यक दृष्टि, संकल्प, वाक, कर्मान्त, आजीव, प्रयास, स्मृति और सम्यक् समाधि। यहाँ समाधि का अर्थ है चित्त का एकाग्र, स्थिर और निर्मल अवस्थीकरण, जिसे ध्यान-जानों (ज्ञान/ध्यान) द्वारा साधा जाता है, ताकि तृष्णा-क्षय और निर्वाण का मार्ग प्रशस्त हो।

चरण 2: भेद स्पष्ट करें।

यद्यपि योग दर्शन में भी “समाधि” शब्द (अष्टाङ्ग—धारणा, ध्यान, समाधि) आता है, पर “सम्यक् समाधि” की तकनीकी संज्ञा और उसका नैतिक-सम्यक् संदर्भ विशेषतः बौद्ध अष्टाङ्गिक मार्ग में ही मिलता है। जैन और न्याय दर्शनों में यह पद इस रूप में मानक नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष/उन्मूलन।

अतः “सम्यक् समाधि” का वर्णन बौद्ध दर्शन में है ; अन्य विकल्प या तो अलग अर्थ में “समाधि” लेते हैं (योग) या इस पद का प्रयोग नहीं करते।

Quick Tip

अष्टाङ्गिक मार्ग की अंतिम जोड़ी याद रखें: सम्यक् स्मृति → सम्यक् समाधि (बौद्ध). “सम्यक् समाधि” दिखे ⇒ बौद्ध चुनें।

85. गीता के अनुसार योग का क्या अर्थ है ?

- (1) ईश्वर से मिलन
- (2) त्याग
- (3) समिध
- (4) धर्म

Correct Answer: (1) ईश्वर से मिलन

Solution:

चरण 1: 'योग' का मूलार्थ।

संस्कृत धातु युज् का आशय 'जोड़ना/संयोजन' है। गीता में योग का केन्द्रीय अभिप्राय जीव-चेतना का ईश्वर/परमात्मा के साथ अनुरागी-संयोजन और वही दृष्टि लेकर कर्तव्य-कर्म करना है। अतः भक्ति, ज्ञान और कर्म—तीनों योग का आधार बनते हैं।

चरण 2: गीता के सूत्र-वाक्य।

गीता योग को अनेक रूपों में निरूपित करती है—“समत्वं योग उच्यते” (२.४८) अर्थात् समभाव में स्थित होना ; “योगः कर्मसु कौशलम्” (२.५०) अर्थात् कर्तव्य-कर्म में कौशल; तथा कर्मफल-त्याग की भावना। ये सभी उसी ईश्वर-संयोग/तदात्म्यता की साधना-प्रक्रिया हैं—मन को परम में स्थिर कर निष्कामभाव से कर्म करना।

चरण 3: विकल्प-परिशीलन।

(2) त्याग (विशेषतः फल-त्याग) योग की आवश्यक वृत्ति है, पर योग का पूर्णार्थ नहीं। (3) समिध अग्निहोत्र की लकड़ी से सम्बद्ध शब्द है ; असंगत। (4) धर्म व्यापक कर्तव्य-नीति को सूचित करता है, योग की परिभाषा नहीं। अतः उपयुक्ततम विकल्प (1) ईश्वर से मिलन।

Quick Tip

स्मरण-त्रयी : योग = ईश्वर-संयोग ; सूत्र: समत्वं योग (२.४८) & कर्मसु कौशलम् (२.५०) ⇒ निष्काम कर्म, समभाव, ईश्वराभिमुखता।

86. निम्नलिखित में से किस एक में बुद्ध के उपदेश संहित हैं ?

- (1) न्याय सूत्र में
- (2) त्रिपिटक में
- (3) ज्ञान की पुस्तक में
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (2) त्रिपिटक में

Solution:

चरण 1: बौद्ध ग्रंथ-संहिता।

बुद्ध के उपदेशों का अधिकृत संकलन त्रिपिटक/Tipitaka कहलाता है, जो पाली कैनन के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसमें तीन “पिटक” (टोकरे) हैं—विनय पिटक (संघ-नियम), सुत्त पिटक (धम्म-देशनाएँ/सूक्त), तथा अभिधम्म पिटक (दार्शनिक-विश्लेषण)। ये ग्रंथ बौद्ध संगीति में परम्परानुसार संकलित-संरक्षित हुए।

चरण 2: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

न्यायसूत्र गौतम द्वारा रचित हिन्दू न्याय दर्शन का मूल ग्रंथ है, बौद्ध उपदेशों का नहीं। “ज्ञान की पुस्तक” कोई मानक ग्रंथ-संज्ञा नहीं है। इसलिए बुद्ध-देशना का प्रामाणिक संग्रह त्रिपिटक ही है।

निष्कर्ष:

प्रश्न का सही उत्तर (2) त्रिपिटक है, जिसमें बुद्ध के उपदेश व्यवस्थित रूप से संहित हैं।

Quick Tip

त्रयी याद रखें—विनय-सुत्त-अभिधम्म = त्रिपिटक (बुद्ध-वचन). न्यायसूत्र = गौतम (हिन्दू न्याय)।

87. अनुमान को प्रमाण के रूप में स्वीकार किया है—

- (1) न्याय दर्शन ने
- (2) सांख्य दर्शन ने
- (3) बौद्ध दर्शन ने
- (4) इनमें से सभी ने

Correct Answer: (4) इनमें से सभी ने

Solution:

चरण 1: न्याय।

न्याय दर्शन चार प्रमाण मानता है—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द—और अनुमान को व्याप्ति-स्मृति पर आधारित वैध ज्ञान-मार्ग मानकर उसकी पञ्चावयवी प्रक्रिया (प्रतिज्ञा, हेतुः, उदाहरण, उपनय, निगमन) स्पष्ट करता है।

चरण 2: सांख्य।

सांख्य दर्शन तीन प्रमाण स्वीकार करता है—प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द। प्रकृति-पुरुष भेद जैसे सूक्ष्म तत्त्वों तक पहुँचने के लिए अनुमान को आवश्यक मानता है, क्योंकि वे इन्द्रिय-प्रत्यक्ष से परे हैं।

चरण 3: बौद्ध।

बौद्ध तर्क परम्परा (विशेषतः दिङ्नाग-धर्मकीर्ति) दो प्रमाण मानती है—प्रत्यक्ष और अनुमान। यहाँ अनुमान लिङ्ग-लिङ्गि सम्बन्ध/व्याप्ति पर टिका होता है और इन्द्रियातीत सत्य (धर्म-क्षणभंगुरता, प्रतीत्यसमुत्पाद) तक तर्कसंगत पहुँच देता है।

निष्कर्ष:

तीनों दर्शनों में अनुमान को प्रमाण माना गया है ; इसलिए सही उत्तर “इनमें से सभी” है।

Quick Tip

स्मरण: न्याय = 4 (प्र, अ, उ, श), सांख्य = 3 (प्र, अ, श), बौद्ध = 2 (प्र, अ)—तीनों में अ = अनुमान सामान्य।

88. जैन दर्शन का तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्त है—

- (1) देहात्मवाद
- (2) शाश्वतवाद
- (3) अनेकान्तवाद
- (4) स्यादवाद

Correct Answer: (3) अनेकान्तवाद

Solution:

चरण 1: तत्त्वमीमांसा बनाम ज्ञानमीमांसा।

तत्त्वमीमांसा (Metaphysics) सत्ता/वस्तु क्या है—इस प्रश्न का उत्तर देती है ; जबकि ज्ञानमीमांसा हम जानते कैसे हैं पर विचार करती है। जैन परम्परा में अनेकान्तवाद वस्तु-तत्त्व का सिद्धान्त है : वस्तु अनेक पक्षों/अनन्त धर्मों से युक्त है ; इसलिए वह न तो केवल एक रूप में, न केवल विपरीत रूप में कथ्य है—सापेक्ष रूप में दोनों कथन किसी-न-किसी नय से सत्य हो सकते हैं। यह जैन तत्त्वमीमांसा का मूल है।

चरण 2: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

- (4) स्यादवाद जैन ज्ञानमीमांसीय/तर्कमीमांसीय सिद्धान्त है—बहु-पक्षीय यथा-भूत कथन की सप्त-भंगी नय (स्यात्-इत्यादि) रूप पद्धति; यह अनेकान्त का वक्तव्य-शास्त्र है, स्वयं तत्त्व-सिद्धान्त नहीं।
- (1) देहात्मवाद चार्वाक का मत है—आत्मा = देह; जैन में यह मान्य नहीं।
 - (2) शाश्वतवाद (सर्वथा-नित्यत्व का एकांगी आग्रह) जैन बहुपक्ष-दृष्टि से असंगत है। इसलिए जैन तत्त्व-सिद्धान्त अनेकान्तवाद ही है।

Quick Tip

जैन त्रयी स्मरण: तत्त्वमीमांसा = अनेकान्तवाद, ज्ञान/प्रस्ताव = स्यादवाद, पद्धति = नयवाद.
“कौन-सा तत्त्वमीमांसीय ?” ⇒ अनेकान्तवाद।

89. गीता में कुल कितने अध्याय हैं ?

- (1) बारह
- (2) पन्द्रह
- (3) अठारह
- (4) पच्चीस

Correct Answer: (3) अठारह

Solution:

चरण 1: मूल तथ्य ।

भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व का एक भाग है और इसमें 700 श्लोक तथा 18 अध्याय हैं। यह संवाद कुरुक्षेत्र में अर्जुन और श्रीकृष्ण के बीच होता है।

चरण 2: विषय-विन्यास का संकेत ।

अध्यायों का विन्यास साधारणतः तीन षट्कों में देखा जाता है—(i) कर्म-योग के आधार पर कर्तव्य-निष्काम भाव (१-६), (ii) भक्ति-योग एवं ईश्वर-साक्षात्कार/विश्वरूप (७-१२), (iii) ज्ञान-योग द्वारा प्रकृति-पुरुष-गुणत्रय-स्वधर्म-सन्न्यास आदि (१३-१८)। पहले अध्याय को अर्जुन-विषाद योग और अंतिम अध्याय को मोक्ष-सन्न्यास योग कहा जाता है।

चरण 3: विकल्प-उन्मूलन ।

गीता के अध्याय न तो 12 हैं, न 15, न 25; मान्य संख्या केवल 18 है—अतः सही उत्तर (3)।

Quick Tip

कुंजी : गीता = 700 श्लोक, 18 अध्याय, 3 षट्क (कर्म-भक्ति-ज्ञान)। “अध्याय कितने?” ⇒ अठारह ।

90. वैशेषिक के ‘अभाव’ पदार्थ दिया गया है—

- (1) प्रशस्तपाद द्वारा
- (2) गौतम द्वारा
- (3) कणाद द्वारा
- (4) भर्तृहरि द्वारा

Correct Answer: (1) प्रशस्तपाद द्वारा

Solution:

चरण 1: मूल पदार्थ-योजना ।

आदि वैशेषिक (कणाद) ने छह पदार्थ माने—द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय। बाद के आचार्यों ने तत्त्व-विश्लेषण बढ़ाते हुए ‘अभाव’ (अस्तित्व-निषेध/अनुपस्थिति) को भी स्वतंत्र पदार्थ रूप में प्रतिष्ठित किया।

चरण 2: ‘अभाव’ का प्रतिपादन ।

वैशेषिक-परम्परा में प्रशस्तपाद (ग्रन्थ : पदार्थधर्मसंग्रह) ने ‘अभाव’ को अलग पदार्थ के रूप में सुव्यवस्थित किया, जिसका आगे न्याय-वैशेषिक में अधिक विकास हुआ—जैसे प्राग-अभाव, ध्वंस-अभाव, अत्यन्त-अभाव, अन्योन्य-अभाव के भेद। इस प्रकार अभाव द्वारा नकारात्मक अनुभूति (जैसे “घट नहीं है”) की प्रमाणिकता और अन्तःसत्तात्मक स्थिति समझाई गई।

चरण 3: विकल्प-उन्मूलन ।

गौतम न्यायसूत्रकार हैं; कणाद ने मूल छह पदार्थ ही दिए; भर्तृहरि व्याकरण-दर्शन के आचार्य हैं—अतः ‘अभाव’ को पदार्थ रूप देने का श्रेय प्रशस्तपाद को जाता है।

Quick Tip

स्मरण: कणाद = 6 पदार्थ; बाद में प्रशस्तपाद ने अभाव जोड़कर व्यवस्था 7 (फिर 7+) कर दी—अभाव के चार भेद: प्राग, ध्वंस, अत्यन्त, अन्योन्य।

91. निम्न में से कौन कारणता के सिद्धान्त से सम्बन्धित है ?

- (1) मिल
- (2) अरस्तू
- (3) ह्यूम
- (4) इनमें से सभी

Correct Answer: (4) इनमें से सभी

Solution:

चरण 1: अरस्तू का बहु-कारण सिद्धान्त।

अरस्तू कारणता को चार कारणों—द्रव्य (material), औपादान/आकारिक (formal), प्रेरक/कर्मकारक (efficient), तथा अंतिम (final)—से समझाता है; वस्तु-निर्माण/परिवर्तन में इनका सहभाग बताता है।

चरण 2: ह्यूम का सन्देहवाद।

डेविड ह्यूम कारणता में आवश्यक सम्बन्ध को अनुभव से असिद्ध मानते हैं; हमें जो मिलता है वह केवल निरन्तर सह-अवस्थिति (constant conjunction) और आदत/अपेक्षा है—इससे कारण-नियतत्व का तर्क आलोचना में आता है।

चरण 3: जे. एस. मिल की आगमन-पद्धति।

मिल कारण-खोज के आगमन नियम देता है—समझौते का नियम, भिन्नता का नियम, सह-अवस्थिति/अवशेष/समन्याजिनसे प्रायोगिक रूप से कारण की पहचान की जाती है।

निष्कर्ष:

तीनों दार्शनिक कारणता पर विशिष्ट मत रखते हैं—एक विस्तार (अरस्तू), दूसरा आलोचना (ह्यूम), तीसरा पद्धति (मिल)। अतः सही विकल्प (4) इनमें से सभी।

Quick Tip

त्रयी याद रखें—अरस्तू : 4 कारण, ह्यूम : आवश्यक सम्बन्ध पर संदेह, मिल : आगमन नियम. प्रश्न में “कौन सम्बन्धित ?” ⇒ इनमें से सभी।

92. निम्न में से कौन चिंतक संदेहवाद से सम्बन्धित है ?

- (1) कांट
- (2) स्पिनोज़ा
- (3) प्लेटो

(4) ह्यूम

Correct Answer: (4) ह्यूम

Solution:

चरण 1: ह्यूम का संदेहवाद।

डेविड ह्यूम अनुभववादी परम्परा के प्रमुख संदेहवादी दार्शनिक हैं। वे कारणता में आवश्यक सम्बन्ध (necessary connection) को अनुभव से असिद्ध बताते हैं—हमें केवल निरन्तर सह-अवस्थिति (constant conjunction) और मन की आदत/अपेक्षा मिलती है; आत्मा, ईश्वर और बाह्य-जगत के बारे में भी वे गैर-प्रायोगिक दावों पर संशय रखते हैं। इसलिए उनका रुख आलोचनात्मक/साशंक है।

चरण 2: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

कांट ने ह्यूम के संदेह से प्रेरित होकर आलोचनात्मक आदर्शवाद विकसित किया—*a priori* रूप (स्थान-काल) और बुद्धि-श्रेणियाँ देकर ज्ञान की संभावना सिद्ध की; वे संदेहवादी नहीं। स्पिनोज़ा कठोर अद्वैतवादी/सर्वेश्वरवादी तत्त्वमीमांसक हैं। प्लेटो रूप-सिद्धान्त (Forms) के तत्त्ववादी दार्शनिक हैं; संदेहवाद उनका मत नहीं। अतः संदेहवाद से सर्वाधिक सीधे ह्यूम ही सम्बद्ध हैं।

निष्कर्ष:

संदेहवाद की प्रतिनिधि भूमिका ह्यूम निभाते हैं—इसलिए सही विकल्प (4)।

Quick Tip

स्मरण: ह्यूम = संदेहवाद (causation पर शंका), कांट = आलोचनात्मक संश्लेषण, स्पिनोज़ा = सर्वेश्वरवाद, प्लेटो = रूप-सिद्धान्त।

93. निम्नलिखित में से किस युक्ति को कारणात्मकमूलक युक्ति कहा जा सकता है ?

- (1) सतामूलक
- (2) विश्वमूलक
- (3) प्रयोजनमूलक
- (4) नैतिक

Correct Answer: (2) विश्वमूलक

Solution:

चरण 1: पद-भेद समझें।

ईश्वर/परम कारण के समर्थन में चार क्लासिक तर्क बताए जाते हैं—सतामूलक (Ontological), विश्वमूलक (Cosmological), प्रयोजनमूलक/नियोजनमूलक (Teleological), और नैतिक (Moral)। इनमें कारण-फल सम्बन्ध पर जो प्रतिपादन टिकता है, वह विश्वमूलक/Cosmological तर्क है।

चरण 2: 'कारणात्मक' क्यों ?

विश्वमूलक तर्क कहता है—जगत में जो भी संसारी द्रव्य/घटना है वह कारण-फल श्रृंखला से बँधी है; अनन्त प्रतिगमन असंगत है, अतः एक प्रथम/अकारण कारण (First Cause/Unmoved Mover) मानना तर्कसम्मत है। इसलिए इसे ही कारणात्मक (causal) युक्ति कहा जाता है।

चरण 3: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

सतामूलक—ईश्वर की अवधारणा/सत्ता-परिभाषा से अस्तित्व साधता है ; प्रयोजनमूलक—जगत के नियोजन/उद्देश्य/रचना-क्रम से नियोजक का अनुमान करता है ; नैतिक—नैतिक नियम/कर्तव्य-बोध से परम नैतिक सत्ता का प्रतिपादन करता है। ये सीधे कारण-श्रृंखला पर नहीं टिके। इसलिए सही उत्तर विश्वमूलक है।

Quick Tip

कुंजी : Cosmos = Cause ⇒ विश्वमूलक = कारणात्मक.

सत्ता = परिभाषा से अस्तित्व, प्रयोजन = नियोजन/डिज़ाइन, नैतिक = नैतिक व्यवस्था।

94. किसके अनुसार यथार्थ ज्ञान सार्वभौम, अनिवार्य एवं नवीन होना चाहिए ?

- (1) डेसकार्त
- (2) लॉक
- (3) ह्यूम
- (4) कांट

Correct Answer: (4) कांट

Solution:

चरण 1: कथन की कुंजी।

“सार्वभौम (universal), अनिवार्य (necessary) तथा नवीन/विस्तारक (ampliative)”—यह त्रयी कांट के सिंथेटिक ए प्रायरी (synthetic a priori) ज्ञान की पहचान है। कांट के अनुसार शुद्ध अनुभव (ए पो-स्टिरियोरी) सार्वभौमिक/अनिवार्य नहीं बनाता और केवल विश्लेषणात्मक a priori निर्णय ज्ञान में नई वृद्धि नहीं करते।

चरण 2: कांट का समाधान।

ज्ञान के लिए हमें ऐसे निर्णय चाहिए जो—(i) ए प्रायरी होने से सार्वभौम व अनिवार्य हों (स्थान-काल और बुद्धि-श्रेणियों की देन), और (ii) सिंथेटिक होने से वास्तविकता के बारे में नया जोड़ें—जैसे “हर घटना का कारण है”, “7+5=12” आदि। यही विज्ञान/गणित की वैधता का आधार है।

चरण 3: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

डेसकार्त “स्पष्ट एवं विशद” निरपेक्षता पर बल देते हैं; लॉक अनुभववादी हैं, सार्वभौमिक-आवश्यकता को नहीं साधते ; ह्यूम कारण-आवश्यकता पर संदेह करते हैं। अतः उपयुक्त उत्तर कांट।

Quick Tip

कांट-सूत्र: Synthetic a priori = Universal + Necessary + New (Ampliative). प्रश्न में यह त्रयी दिखे ⇒ कांट चुनें।

95. किस ज्ञान सिद्धान्त के अनुसार ‘ज्ञान की प्राप्ति आगमनात्मक विधि से होती है’ ?

- (1) बुद्धिवाद
- (2) अनुभववाद

- (3) समीक्षावाद
- (4) वस्तुवाद

Correct Answer: (2) अनुभववाद

Solution:

चरण 1: आगमनात्मक विधि की संकल्पना।

आगमन वह तर्क-विधि है जिसमें विशेष/अनुभवजन्य तथ्यों से सामान्य नियम स्थापित किए जाते हैं— पुनरावृत्त निरीक्षण, तुलनात्मक अध्ययन और सह-अवस्थिति के आधार पर निष्कर्ष तक पहुँचना (जैसे अनेक धातुओं के प्रसारण को देखकर “उष्णता से धातु फैलती है”)।

चरण 2: अनुभववाद का मत।

अनुभववाद (Locke, Hume, Bacon, Mill) मानता है कि ज्ञान का मूल स्रोत इन्द्रिय-अनुभव है ; विज्ञान का विकास आगमन पर टिका है। मिल ने तो कारण-निर्धारण के आगमन-नियम (समझौता, भिन्नता, सह-अवस्थिति, अवशेष, समन्याय) भी दिए। अतः “ज्ञान की प्राप्ति आगमनात्मक विधि से”—यह अनुभववाद का केंद्रीय कथन है।

चरण 3: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

बुद्धिवाद ज्ञान का मूल विवेक/बुद्धि और प्रायः न्ययनिर्णय/न्यास को मानता है ; समीक्षावाद (कांट) अनुभव और बुद्धि का आलोचनात्मक संश्लेषण देता है ; वस्तुवाद सत्ता-संबंधी मत है, ज्ञान-पद्धति नहीं। इसलिए उपयुक्त उत्तर अनुभववाद।

Quick Tip

सूत्र: Experience \Rightarrow Induction \Rightarrow अनुभववाद.
Rationalism \Rightarrow Deduction, Kant \Rightarrow Critical synthesis.

96. निम्नलिखित में से कौन अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की शाखा है ?

- (1) व्यवसाय नीतिशास्त्र
- (2) पर्यावरणीय नीतिशास्त्र
- (3) जैव-चिकित्सीय नीतिशास्त्र
- (4) इनमें से सभी

Correct Answer: (4) इनमें से सभी

Solution:

चरण 1: अवधारणा स्पष्ट करें।

अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र वह क्षेत्र है जो सामान्य नैतिक सिद्धान्तों (हितकारी, अहिंसा, न्याय, स्वाय-त्तता, कर्तव्य आदि) को विशिष्ट सामाजिक-व्यावहारिक संदर्भों में लागू कर निर्णय-मानदण्ड बनाता है। इसका प्रश्न है—“यहाँ और अभी, हमें क्या करना चाहिए ?”

चरण 2: प्रमुख शाखाएँ।

- (1) व्यवसाय नीतिशास्त्र—कंपनी शासन, हितधारक-न्याय, ईमानदार विज्ञापन, डेटा गोपनीयता,

भ्रष्टाचार-विरोध, श्रम-अधिकार इत्यादि पर नैतिक दिशानिर्देश।

(2) पर्यावरणीय नीतिशास्त्र—प्रकृति के अंतर्निहित मूल्य, सततता, जलवायु-न्याय, पीढ़ियों के बीच उत्तरदायित्व, प्रजाति-अधिकार।

(3) जैव-चिकित्सीय नीतिशास्त्र—रोगी-स्वायत्तता, सूचित सहमति, गोपनीयता, जीवन-अंत निर्णय, अंगदान, जनन-प्रौद्योगिकी, एआई/डेटा-चिकित्सा आदि के नैतिक मानक।

चरण 3: निष्कर्ष/उन्मूलन।

उपर्युक्त तीनों ही अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के मानक उपक्षेत्र हैं; इसलिए सही विकल्प (4) इनमें से सभी।

Quick Tip

याद रखें: Applied Ethics = “सिद्धान्त → संदर्भ”. तीन क्लासिक डोमेन—Business, Environmental, Bio-medical.

97. पर्यावरणीय नीतिशास्त्र है

- (1) जीवन केन्द्रित
- (2) पशु केन्द्रित
- (3) मनुष्य केन्द्रित
- (4) इनमें से सभी

Correct Answer: (4) इनमें से सभी

Solution:

चरण 1: पर्यावरण-नीति की परिभाषा।

पर्यावरणीय नीतिशास्त्र नैतिकता की वह शाखा है जो प्राकृतिक जगत के प्रति हमारे कर्तव्यों/मूल्यों की चर्चा करती है—किसे नैतिक महत्व दें और क्यों। इसमें विभिन्न नॉर्मेटिव दृष्टियाँ आती हैं।

चरण 2: प्रमुख केन्द्रित धारणाएँ।

(क) मनुष्य-केन्द्रित (Anthropocentric): प्रकृति का मूल्य मुख्यतः मानव हित/कल्याण के संदर्भ में (स्वास्थ्य, संसाधन, भावी पीढ़ियाँ)।

(ख) पशु-केन्द्रित (Zoocentric): संवेदनशील जीवों के दुःख-सुख को नैतिक कसौटी बनाना—पशु अधिकार/कल्याण।

(ग) जीवन-केन्द्रित (Biocentric/Ecocentric): सभी जीवन रूपों या सम्पूर्ण पारितंत्र (प्रजाति, नदी, वन) को आत्म-मूल्य देना—मानव हित से परे भी नैतिक मान।

चरण 3: निष्कर्ष।

पर्यावरण-नीति एक ही केन्द्र पर सीमित नहीं; उपर्युक्त तीनों प्रकार की दृष्टियों का अध्ययन/प्रयोग करती है। इसलिए उपयुक्त उत्तर (4) इनमें से सभी है।

Quick Tip

Anthro-Zoo-Bio/Eco तीनों याद रखें: मानव हित, पशु पीड़ा-न्यूनन, तथा समग्र जीवन/पारितंत्र का अंतर्निहित मूल्य—तीनों पर्यावरणीय नीतिशास्त्र में आते हैं।

98. सरल प्रत्यय और जटिल प्रत्यय का विचार किस अनुभववादी दर्शन में उल्लिखित है ?

- (1) लॉक
- (2) बर्कले
- (3) ह्यूम
- (4) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (1) लॉक

Solution:

चरण 1: लॉक का अनुभववाद।

जॉन लॉक के अनुसार मन जन्म के समय खाली पट्ट (tabula rasa) है। ज्ञान के दो स्रोत हैं—संवेदन (बाह्य अनुभव) और प्रतिवर्तन या अन्तरावलोकन (मन की अपनी क्रियाओं का अनुभव)। इन्हीं से मन में प्रत्यय/आइडिया जन्म लेते हैं।

चरण 2: सरल बनाम जटिल प्रत्यय।

सरल प्रत्यय अविभाज्य, मूल तत्व हैं—रंग, गन्ध, कठोरता, संख्या, गति आदि—जिन्हें मन न तो गढ़ सकता, न नष्ट कर सकता है; वह केवल उन्हें ग्रहण करता है। जटिल प्रत्यय इन्हीं सरल प्रत्ययों के संयोजन, तुलना, और अमूर्तन से बनते हैं—जैसे पदार्थ की अवधारणा, संबंध, कारण, नैतिक विचार आदि। इस प्रकार जटिल ज्ञान सरल अनुभूतियों पर रचा जाता है।

चरण 3: विकल्प-तुलना।

बर्कले अनुभूति-आधारित आदर्शवाद देता है और ह्यूम प्रत्ययों को इम्प्रेशन/आइडिया में बाँटता है; किंतु सरल-जटिल प्रत्यय का स्पष्ट वर्गीकरण लॉक का है। इसलिए सही उत्तर (1)।

Quick Tip

Locke = Simple → Complex Ideas: संवेदन/प्रतिवर्तन से सरल, उनके संयोजन-तुलना-अमूर्तन से जटिल प्रत्यय बनते हैं।

99. जड़ में गति प्रदान करने वाली शक्ति को क्या कहते हैं ?

- (1) निमित्त कारण
- (2) उपादान कारण
- (3) आकारिक कारण
- (4) अंतिम कारण

Correct Answer: (1) निमित्त कारण

Solution:

चरण 1: चार कारणों का सूत्र।

अरस्तू कारण-विचार में चार कारण मानता है—उपादान (material: पदार्थ/कच्चा माल), आकारिक/औपादिक (formal: डिजाइन/रूप), निमित्त (efficient: क्रियाकारक/गतिदाता), और अंतिम (final: उद्देश्य)।

चरण 2: 'गतिदाता' की पहचान।

जड़ पदार्थ स्वयं निष्क्रिय होता है ; उसमें गति/परिवर्तन निमित्त कारण (कर्मकर्ता—कुम्हार, बढई, मोटर, बल, ऊर्जा आदि) से आता है। अतः “जड़ में गति प्रदान करने वाली शक्ति” निमित्त ही है।

चरण 3: अन्य विकल्प क्यों नहीं ?

उपादान केवल सामग्री देता है (मिट्टी, लकड़ी); आकारिक रूप/डिजाइन बताता है (घट का आकार); अंतिम उद्देश्य (उपयोग/लक्ष्य) सूचित करता है—ये गति देने वाले कारक नहीं। इसलिए सही उत्तर (1) निमित्त कारण।

Quick Tip

चार कारण याद रखें: उ-आ-नि-अं = उपादान-आकारिक-निमित्त-अंतिम. “गति/क्रिया कौन देता ?” ⇒ हमेशा निमित्त।

100. ईश्वर की सत्ता के लिए सतामूलक युक्ति का किसने समर्थन किया है ?

- (1) लॉक
- (2) ह्यूम
- (3) कांट
- (4) डेसकार्त

Correct Answer: (4) डेसकार्त

Solution:

चरण 1: सतामूलक युक्ति का तात्पर्य।

सतामूलक (Ontological) युक्ति ईश्वर का प्रमाण केवल बुद्धि-आधारित अवधारणा से देती है—यदि हम सर्वोत्तम संभव सत्ता की संकल्पना करते हैं, तो अस्तित्व उसका अनिवार्य गुण होगा ; क्योंकि जो केवल विचार में है वह सर्वोत्तम नहीं हो सकता।

चरण 2: डेसकार्त का प्रतिपादन।

डेसकार्त ने ध्यान ग्रंथों में कहा—हमारे भीतर अनन्त, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सत्ता का विचार स्वयं हमसे उत्पन्न नहीं हो सकता ; इसका कारण वही अनन्त सत्ता है। साथ ही, ईश्वर की परिभाषा में अस्तित्व निहित है, अतः ईश्वर का अस्तित्व आवश्यक है। यह युक्ति सतामूलक है।

चरण 3: विकल्पों का उन्मूलन।

लॉक अनुभववादी हैं; ह्यूम ऐसे तर्कों पर संदेह करते हैं; कांट ने सतामूलक तर्क की आलोचना की और “अस्तित्व कोई गुण नहीं” कहा। अतः समर्थक डेसकार्त ही हैं।

Quick Tip

सूत्र: सत्ता की परिभाषा से अस्तित्व \Rightarrow सतामूलक. समर्थक—एन्सेल्म, डेसकार्त; कांट = प्रमुख आलोचक।

Section-B

1. योग दर्शन में 'योग' का क्या अर्थ है ?

Correct Answer:

योग का मूल अर्थ पतञ्जलि के अनुसार “चित्तवृत्ति निरोध” है—अर्थात् मन की वृत्तियों का निवारण कर के चित्त को एकाग्र और स्वच्छ बनाना। इसमें अष्टाङ्ग मार्ग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि—के माध्यम से देह-मन-बुद्धि का अनुशासन होता है। लक्ष्य कैवल्य/मोक्ष है, जहाँ पुरुष अपनी शुद्ध स्वरूपस्थिति में स्थित होता है। योग केवल शारीरिक कसरत नहीं, बल्कि नैतिक अनुशासन, मनोवैज्ञानिक शुद्धि और आध्यात्मिक साक्षात्कार का समन्वित साधन है।

Solution:

Step 1: वैचारिक आधार.

योग सांख्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि पर खड़ा है—पुरुष और प्रकृति का भेद मानकर मोक्ष को अंतिम पुरुषार्थ मानता है। पतञ्जलि ‘योगसूत्र’ (1.2) में स्पष्ट करते हैं: “योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।”

Step 2: साधन-चक्र.

अष्टाङ्ग योग क्रमिक शुद्धि देता है : यम-नियम से नैतिक अनुशासन, आसन-प्राणायाम से देह-प्राण की स्थिरता, प्रत्याहार-धारणा-ध्यान से अन्तर्मुखी एकाग्रता, और समाधि से तत्त्वसाक्षात्कार।

Step 3: फल.

वृत्तिनिरोध से क्लेशक्षय, संस्कार-शुद्धि और विवेकख्याति होती है ; चित्त प्रत्यक् स्थित होकर पुरुष के स्वतंत्र स्वरूप के ज्ञान का साधन बनता है।

Step 4: समन्वय.

योग शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और आध्यात्मिक मुक्ति—तीनों का समन्वय है ; इसीलिए इसे ‘समग्र अनुशासन’ कहा जाता है।

Quick Tip

“योग = चित्तवृत्ति-निरोध” को स्मरण रखें; अष्टाङ्ग क्रम को साधन और कैवल्य को लक्ष्य समझने से परिभाषा स्वतः स्पष्ट रहती है।

2. गीता में योग का क्या अर्थ है ?

Correct Answer:

भगवद्गीता में ‘योग’ का आशय केवल आसनाभ्यास नहीं, बल्कि समत्व-बुद्धि और निष्काम कर्म का सामंजस्य है—“समत्त्वं योग उच्यते” तथा “योगः कर्मसु कौशलम्।” गीता कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग को एकात्म दृष्टि से रखती है : स्वधर्मानुसार कर्म करते हुए फल-आसक्ति त्यागना, समभाव बनाए रखना और ईश्वरार्पण की भावना रखना—यही गीता का योग है, जो अन्ततः आत्मज्ञान और

मुक्तावस्था की ओर ले जाता है।

Solution:

Step 1: समत्व की परिभाषा.

गीता (2.48) समत्व को योग कहती है—सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय में सम-बुद्धि। यह मनो-वैज्ञानिक संतुलन आध्यात्मिक उन्नति की शर्त है।

Step 2: कर्मयोग का केन्द्रीय तत्व.

(2.47) के अनुसार कर्म का अधिकार है, फल में नहीं; फलासक्ति का त्याग 'कर्मसु कौशलम्' है, क्योंकि इससे कर्म शुद्ध और कुशल बनता है।

Step 3: समन्वय.

गीता भक्ति, ज्ञान और कर्म को विरोध नहीं मानती; भगवद्भक्तियोग (12 अध्याय) और आत्मस्वरूप-ज्ञान (13-18) कर्मयोग को आधार देते हैं।

Step 4: साधक के लिए अर्थ.

स्वधर्मानुसार दायित्व निभाते हुए ईश्वरप्रणिधान, फल-त्याग और समत्व से कर्म योग बनता है, जो चित्त-शुद्धि और मुक्तिबोध तक पहुंचाता है।

Quick Tip

गीता में "समत्व" और "निष्काम कर्म"—इन दो सूत्रों से योग की पूरी व्यावहारिक परिभाषा समझ लें।

3. प्रतीत्यसमुत्पाद से आप क्या समझते हैं ?

Correct Answer:

बौद्ध दर्शन का प्रतीत्यसमुत्पाद (प्रतित्य-समुत्पाद) सिद्धान्त बताता है कि सभी धारणा, वस्तु और अनुभूति परस्पर-निर्भर कारण-सम्बन्ध से उत्पन्न होती हैं; कुछ भी स्वतः, निरपेक्ष या स्थायी रूप से नहीं होता। द्वादश निदान—अविद्या से संस्कार, विज्ञान, नाम-रूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति और जरा-मरण—दुःख-चक्र का कारण-क्रम दिखाते हैं। इस अंतर्दृष्टि से अनित्य, अनात्म और शून्यता का बोध होता है, जो निर्वाण की दिशा में साधक का मार्गदर्शन करता है।

Solution:

Step 1: सिद्धान्त की धुरी.

“यदा इदं अस्ति तदा तत् अस्ति; इदं उत्पन्नं तदा तत् उत्पद्यते”—अर्थात् सापेक्षता और सहोत्पत्ति। स्थायी, आत्मतन्त्र सत्ता का निषेध होता है।

Step 2: द्वादश निदान.

अविद्या → संस्कार → विज्ञान → नाम-रूप → षडायतन → स्पर्श → वेदना → तृष्णा → उपादान → भव → जाति → मरण—यह चक्र दुःख की उत्पत्ति दिखाता है।

Step 3: दार्शनिक फल.

अनित्य (क्षणिकता), अनात्म (स्वतन्त्र आत्मा का अभाव) और शून्यता (स्वभाव-शून्यता) की अनुभूति करुणा और उपशम को जन्म देती है।

Step 4: साधना-सन्देश.

कारण-श्रृंखला को तोड़ना—विशेषतः तृष्णा और उपादान का परित्याग—ध्यान और प्रज्ञा से सम्भव

त्रिगुणात्मक—सत्त्व, रजस, तमस)—इन दो नितांत भिन्न तत्त्वों को स्वीकार करता है। बन्धन प्रकृति-विकृतियों के पुरुष पर अध्यास से होता है; विवेकख्याति से उनके भेद का साक्षात्कार कर लेने पर पुरुष स्वतंत्र (कैवल्य) हो जाता है। इस प्रकार मुक्ति, प्रकृति-परिणामों से पुरुष की असंगता के ज्ञान पर निर्भर मानी जाती है।

Solution:

Step 1: तत्त्व-युग्म.

पुरुष चेतना-साक्षी है; न करता, न भोक्ता—साक्षीमात्र। प्रकृति जड़, त्रिगुणात्मक मूलकारण है—महत्त, अहंकार, तन्मात्राएँ, इन्द्रियाँ, मन आदि इसी से विकसित होते हैं।

Step 2: बन्ध-मुक्ति सिद्धान्त.

अज्ञान से पुरुष प्रकृति के गुण-परिणामों को अपना मान लेता है; ज्ञान (विवेक) से भेद स्पष्ट होने पर प्रकृति की प्रवृत्ति रुकती है—यही कैवल्य।

Step 3: नैतिक-अन्वय.

गुण-संतुलन (विशेषतः सत्त्व-वृद्धि) साधन माना गया; योग-सहयोग से चित्त-शुद्धि होती है, जिससे विवेकख्याति पुख्ता बनती है।

Step 4: निष्कर्ष.

पुरुष-प्रकृति का मूलभूत भेद सांख्य की द्वैतवादिता का आधार है।

Quick Tip

सांख्य = दो तत्त्व; “पुरुष (चेतन)” और “प्रकृति (अचेतन, त्रिगुण)” —यह सूत्र याद रखें।

6. बर्कले का आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद क्या है ?

Correct Answer:

बर्कले का आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद (Subjective Idealism) मानता है कि अस्तित्व = अनुभूति में होना (esse est percipi)। भौतिक वस्तुएँ स्वतंत्र पदार्थ नहीं; वे अनुभूति-सम्बद्ध विचारों/प्रभावों का गुच्छ हैं। दीर्घकालिक स्थिरता के लिए ईश्वर को सर्वपर्यवेक्षक चेतना रूप में मानना पड़ता है, जो अनुभूतियों की निरन्तरता सुनिश्चित करता है। अतः बाह्य पदार्थ की स्वतंत्र सत्ता का निषेध करते हुए बर्कले चेतना और विचारों को वास्तविक मानते हैं।

Solution:

Step 1: प्रत्यक्ष का प्रधान्य.

इन्द्रियानुभव में जो कुछ दिया है, वही वस्तु है; “विचार” से बाहर किसी जड़-पदार्थ का प्रमाण नहीं।

Step 2: तर्क.

यदि वस्तु अनुभूति से परे स्वतन्त्र है, तो उसे कैसे जानेंगे? जानने का अर्थ ही अनुभूत होना है—इसलिए अस्तित्व अनुभूति-सम्बद्ध है।

Step 3: ईश्वर-आवश्यकता.

व्यक्तिगत अनुभव अस्थिर हैं; लेकिन वस्तु-जगत सुसंगत दिखता है—यह दैवी चेतना के सतत पर्यवेक्षण से सम्भव है।

Step 4: आलोचना/परिणाम.

स्वतन्त्र वस्तु-सत्ता का निषेध अनुभववाद को विशिष्ट दिशा देता है, पर ‘अन्य-मन’ और ‘नियम-निष्ठ’

जगत का आधार ईश्वर-मान्यताओं पर टिका रहता है।

Quick Tip

सूत्र: “*Esse est percipi*”—जो अनुभूत है वही अस्तित्ववान; शेष का प्रमाण नहीं।

7. पदार्थ के रूप में ‘द्रव्य’ की व्याख्या करें।

Correct Answer:

न्याय-वैशेषिक में ‘द्रव्य’ नौ माने गए—पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन। द्रव्य ही गुण और कर्म का आश्रय तथा समवाय का आधार है; यह उपादान रूप में कार्य-कारण का दाता भी है। द्रव्य नित्य/अनित्य दोनों हो सकता है—आकाश, काल, दिक्, आत्मा नित्य; पृथ्वी आदि परमाणु नित्य पर संहतियाँ अनित्य। इस प्रकार द्रव्य पदार्थ-मीमांसा का केंद्रीय तत्त्व है जो गुण-क्रिया को अस्तित्व देता है।

Solution:

Step 1: परिभाषा.

जिसमें गुण व कर्म अधिष्ठित हों और जो समवाय-कारण बन सके—वह द्रव्य।

Step 2: नव-विद.

(1) पृथ्वी, (2) आप, (3) तेज, (4) वायु, (5) आकाश, (6) काल, (7) दिक्, (8) आत्मा, (9) मन—इनके स्वरूप, गुण और कार्य अलग हैं।

Step 3: नित्य-अनित्य.

परमाणु/आकाश/काल/दिक्/आत्मा नित्य; संयोजन-विशेष (घटादि) अनित्य।

Step 4: दार्शनिक भूमिका.

द्रव्य बिना गुण-कर्म का अधिष्ठान नहीं; ज्ञानमीमांसा में भी द्रव्य-ग्रहण इन्द्रियों के विषय-निश्चय का आधार बनता है।

Quick Tip

“द्रव्य = गुण-कर्म का आश्रय”—पहचान का सरल सूत्र; नव-विद द्रव्यों की सूची याद रखें।

8. ‘व्यक्ति’ क्या है? विवेचना करें।

Correct Answer:

भारतीय परम्परा में ‘व्यक्ति’ का आशय निज-स्वत्व, चेतना और नैतिक दायित्व का धारक प्राणी है। न्याय में व्यक्ति विशेष द्रव्य (देह-मन-आत्मा का संयोग) के रूप में; वेदान्त में जीव—अविद्या से बंधा ब्रह्म का ही प्रतिबिम्ब; जैन में जीवात्मा अनादि-अनन्त द्रव्य। आधुनिक विमर्श में व्यक्ति अधि-कार, स्वतंत्रता, स्व-निर्णय की इकाई है। अतः ‘व्यक्ति’ देह-मानस-आत्मा का समन्वित, नैतिक-अर्थों में उत्तरदायी सत्ता है।

Solution:**Step 1: दार्शनिक रूप-रेखाएँ.**

न्याय—व्यक्ति द्रव्य-समूह का विशिष्ट संयोग; वेदान्त—जीव ब्रह्म का आवच्छिन्न चैतन्य; जैन—जीव द्रव्य स्वतंत्र सत्ता।

Step 2: चेतना और पहचान.

स्वानुभूति, स्मृति, इरादा, मूल्य-निर्णय—ये सब व्यक्ति के 'मैं' भाव को निर्मित करते हैं।

Step 3: नैतिक आयाम.

कर्तृत्व-भोक्तृत्व, उत्तरदायित्व, कर्तव्य-अधिकार संतुलन; समाज में व्यक्ति स्वायत्त पर संबंधात्मक।

Step 4: निष्कर्ष.

व्यक्ति केवल जैविक इकाई नहीं, बल्कि चेतन-नैतिक-आध्यात्मिक प्राण है, जिसके परिष्कार से समाज और संस्कृति आगे बढ़ते हैं।

Quick Tip

व्यक्ति को “चेतना + नैतिक दायित्व + सामाजिक सम्बन्ध”—इन तीन आयामों में साथ देखें।

9. सांख्य के अनुसार प्रकृति के स्वरूप की व्याख्या करें।**Correct Answer:**

सांख्य में प्रकृति जड़, अनादि, त्रिगुणात्मक मूल कारण है—सत्त्व (प्रकाश/संतुलन), रजस (गतिशीलता), तमस (आवरण/जड़ता)। गुण-सम्य अवस्था में सृष्टि अव्यक्त रूप में रहती है; पुरुष के सन्निधि से विक्षोभ होकर प्रकृति महत्त, अहंकार, तन्मात्राएँ, इन्द्रियाँ, मन, पंचभूत आदि में क्रमशः विकसित होती है। बन्धन गुण-परिणामों से आसक्ति है; विवेकख्याति और सत्त्व-वृद्धि से प्रकृति निवृत्त होकर कैवल्य घटित होता है।

Solution:**Step 1: त्रिगुण-तत्व.**

सत्त्व-रजस-तमस की परस्पर क्रिया प्रकृति का संतुलन/विक्षोभ निर्धारित करती है।

Step 2: विकास-क्रम.

प्रकृति → महत्त (बुद्धि) → अहंकार → तन्मात्राएँ/इन्द्रियाँ/मन → स्थूल पंचभूत—यह कार्य-कारण श्रृंखला है।

Step 3: पुरुष-संबन्ध.

पुरुष साक्षी है; उसकी सन्निधि से ही प्रकृति का प्रवर्तन; पर पुरुष असंग रहता है।

Step 4: साधना-निहितार्थ.

गुण-संतुलन, विशेषतः सत्त्व-वृद्धि और विवेक-ज्ञान से प्रकृति-वृत्तियाँ शान्त होकर मुक्ति-पथ प्रशस्त करती हैं।

Quick Tip

सूत्र: “त्रिगुणात्मक मूलकारण = प्रकृति; साक्षी = पुरुष।” विकास-श्रृंखला को क्रम सहित याद रखें।

10. सत्त्व गुण क्या है ?

Correct Answer:

सांख्य में सत्त्व प्रकाश, प्रसाद, हल्केपन और संतुलन का गुण है। यह ज्ञान, सुख, शान्ति, करुणा, सत्यनिष्ठा को उत्पन्न करता है; बुद्धि और मन को निर्मल कर विवेकख्याति का साधन बनता है। सत्त्व-वृद्धि से आसक्ति और क्लेश क्षीण होते हैं, ध्यान स्थिर होता है और धर्माचरण सहज बनता है। अतः आध्यात्मिक साधना में सत्त्व का संवर्द्धन मोक्ष-मार्ग का महत्त्वपूर्ण चरण माना जाता है।

Solution:

Step 1: गुण-त्रयी संदर्भ.

सत्त्व (प्रकाश), रजस (चेष्टा), तमस (आवरण)—ये तीन प्रकृति-गुण हैं; मिश्रण से मानसिक वृत्तियाँ बनती हैं।

Step 2: सत्त्व के लक्षण.

हर्ष-शान्ति, विवेक, सत्य, करुणा, संयम; देह-मन पर हल्केपन/प्रसाद का प्रभाव।

Step 3: साधन.

सात्त्विक आहार, अहिंसा-सत्य, स्वाध्याय, ध्यान, सत्संग—इनसे सत्त्व बढ़ता है।

Step 4: फल.

चित्त निर्मल होकर ज्ञान ग्रहणशील बनता है; क्लेश घटते हैं; मुक्ति-अनुकूल अवस्था प्राप्त होती है।

Quick Tip

आहार-विहार-विचार को सात्त्विक रखें; यही दीर्घकाल में स्थिर ध्यान और स्पष्ट विवेक का आधार है।

11. स्वार्थानुमान और परार्थानुमान के बीच अन्तर स्पष्ट करें।

Correct Answer:

न्याय में स्वार्थानुमान वह है जो स्व-चिन्तन के लिए त्रय—प्रतिज्ञा, हेतु, दृष्टान्त—के आन्तरिक नि-दिष्ट क्रम से किया जाता है; औपचारिक प्रस्तुति आवश्यक नहीं। परार्थानुमान वह है जो अन्य के लिए पंचावयव—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन—के रूप में तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। दोनों में हेतु-व्याप्ति का स्वरूप समान है, पर परार्थ में संप्रेषणीयता, स्पष्टता और श्रोता-प्रमाण के लिए औपचारिक संरचना जोड़ दी जाती है।

Solution:

Step 1: स्वार्थानुमान.

आन्तरिक तर्क—हिमालय धूमवान; जहाँ धूम, वहाँ अग्नि; अतः हिमालय अग्निमान। औपचारिक पाँच अवयव दिखाना जरूरी नहीं।

Step 2: परार्थानुमान.

(1) प्रतिज्ञा : हिमालय अग्निमान। (2) हेतु : धूमवान। (3) उदाहरण: जहाँ धूम, वहाँ अग्नि, जैसे रसोई। (4) उपनय: हिमालय में धूम है। (5) निगमन: अतः अग्नि है।

Step 3: अंतर का सार.

उद्देश्य—स्व-निश्चय बनाम श्रोतृ-निश्चय; संरचना—त्रय बनाम पंचावयव; परंतु व्याप्ति/हेतु-प्रमाण समान ।

Quick Tip

याद रखें: स्वार्थ = निजी निष्कर्ष; परार्थ = श्रोता के लिए पंच-अवयवी प्रस्तुति ।

12. भारतीय दर्शन में आस्तिक और नास्तिक के विभाजन का आधार क्या है ?

Correct Answer:

भारतीय परम्परा में आस्तिक-नास्तिक का विभाजन सामान्यतः वेद-प्रामाण्य-स्वीकार पर आधारित है, न कि ईश्वर-मान्यता पर । सांख्य-योग-न्याय-वैशेषिक-मीमांसा-वेदान्त वेद को प्रमाण मानते हुए आस्तिक हैं; बौद्ध, जैन, चार्वाक वेद-प्रामाण्य नहीं मानते, अतः नास्तिक कहलाते हैं । इस वर्गीकरण का केन्द्र शास्त्रीय प्रमाण-मीमांसा है—श्रुति की प्रतिष्ठा स्वीकार करना या न करना—न कि केवल ईश्वरवाद/नास्तिक्य का प्रश्न ।

Solution:

Step 1: मानक.

आस्तिक = वेद को प्रमाण मानना ; नास्तिक = वेद-प्रामाण्य का अस्वीकार ।

Step 2: शाला-विभाजन.

आस्तिक: सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा (वेदान्त) । नास्तिक: बौद्ध, जैन, चार्वाक ।

Step 3: भ्रम-निवारण.

ईश्वर-स्वीकार अनिवार्य मानक नहीं—जैसे सांख्य का ईश्वर-निरपेक्षता होते हुए भी वह आस्तिक है ।

Step 4: दार्शनिक अर्थ.

वर्गीकरण शास्त्रीय परम्परा, प्रमाण-मीमांसा और साधना-पद्धति की पहचान में मदद करता है ।

Quick Tip

सूत्र: “आस्तिक/नास्तिक = वेद-प्रामाण्य का स्वीकार/अस्वीकार”—ईश्वरवाद से न मिलाएँ ।

13. ‘स्वधर्म’ के तात्पर्य स्पष्ट करें ।

Correct Answer:

गीता-प्रसिद्ध स्वधर्म का तात्पर्य है—स्वभाव, योग्यता और सामाजिक दायित्व के अनुरूप कर्तव्य-पालन । यह केवल वर्णाश्रम तक सीमित नहीं ; व्यक्ति की आन्तरिक प्रकृति और परिस्थितिजन्य भूमिका के अनुरूप निष्काम, समत्व-बुद्धि से कर्म करना स्वधर्म है—“श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् ।” इससे चित्त-शुद्धि, समाज-कल्याण और आत्म-उन्नति एक साथ संभव होती है ; परधर्म-आश्रय अस्थिरता और द्वन्द्व बढ़ाता है ।

Solution:

Step 1: परिभाषा.

स्वधर्म = स्वभावानुकूल दायित्व; कर्म का मापदण्ड 'फल' नहीं, 'नैतिक उचितता' और 'समत्व'।

Step 2: निष्कामता.

फलासक्ति छोड़े बिना स्वधर्म बन्धन देता है ; ईश्वरार्पण और समत्व इसे योग बनाते हैं।

Step 3: व्यावहारिकता.

अपनी योग्यता/भूमिका का यथार्थ आकलन—विद्यार्थी, गृहस्थ, कर्मचारी, नागरिक—सबके कर्तव्य भिन्न, पर नैतिक।

Step 4: परिणाम.

स्वधर्म से स्थिरता, आत्मविश्वास और आन्तरिक शान्ति बढ़ती है ; समाज में भी न्याय और सुव्यवस्था प्रबल होती है।

Quick Tip

“जो मैं ठीक कर सकता हूँ, उसे सही ढंग से, निष्काम भाव से करना”—यही स्वधर्म का व्यावहारिक सूत्र है।

14. भारतीय दर्शन में 'पुरुषार्थ' का क्या अर्थ है ?

Correct Answer:

'पुरुषार्थ' मानव जीवन के चार नियामक लक्ष्यों—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—का समष्टि-विचार है। धर्म नैतिक-सामाजिक व्यवस्था, अर्थ वैध उपार्जन/संसाधन-प्रबन्ध, काम इन्द्रिय-मानसिक सुखों का मर्यादित उपभोग, और मोक्ष आध्यात्मिक मुक्ति। धर्म अर्थ-काम को नियंत्रित करता है और सबका अंतिम अभिमुख मोक्ष है। यह ढाँचा जीवन-समन्वय, उत्तरदायित्व और आध्यात्मिक उन्नति को साथ रखने का भारतीय माडल है।

Solution:

Step 1: समन्वित दृष्टि.

मानव आकांक्षाएँ केवल भोग या केवल त्याग नहीं ; भारतीय सिद्धान्त संतुलित चार लक्ष्यों का प्रस्ताव करता है।

Step 2: पदानुक्रम.

धर्म आधार है—अर्थ/काम की वैधता धर्म से ; मोक्ष परम-लक्ष्य।

Step 3: जीवन-प्रयोग.

विद्यार्थी-गृहस्थ-वानप्रस्थ-संन्यास के चरणों में पुरुषार्थ-प्राथमिकताएँ बदलती, पर धर्म/मोक्ष का अभिमुख बना रहता है।

Step 4: निष्कर्ष.

पुरुषार्थ-सिद्धान्त व्यक्ति और समाज दोनों की समग्र उन्नति का संतुलित, दीर्घजीवी ढाँचा है।

Quick Tip

सूत्र: “धर्म मार्गदर्शक, अर्थ-काम साधन, मोक्ष परम-लक्ष्य”—चारों का संतुलन ही पुरुषार्थ-पूर्णता है।

15. ईश्वर के अस्तित्व सम्बन्धी प्रमाण कौन-कौन से हैं ?

Correct Answer:

ईश्वर-सिद्धि हेतु विविध प्रमाण दिये गए: कार्य/आदि (कॉस्मोलॉजिकल)—जगत प्रभाव है, कारण ईश्वर; नियम/उद्देश्य (टेलीओलॉजिकल)—व्यवस्थित सृष्टि बुद्धिमान नियन्ता सूचित करती है; नैतिक—मूल्य-चेतना सर्वोच्च नैतिक सत्ता का संकेत; ओण्टोलॉजिकल—परम सर्वोत्तम की अवधारणा से अस्तित्व-आवश्यकता; भारतीय न्याय का आरम्भ/समवाय/आयोजन आदि हेतु-तर्क। अनुभवात्मक अध्यात्म/योग भी ईश्वरानुभव के साक्ष्य माने जाते हैं।

Solution:

Step 1: कार्य-कारण (न्याय).

जगत संगत प्रभाव; अनादि, सर्वज्ञ कारण (ईश्वर) के बिना सुव्यवस्था सम्भव नहीं—आयोजन/नियम के लिए बुद्धिमान निमित्त-कारण अपेक्षित।

Step 2: टेलीओलॉजी.

उद्देश्यपूर्णता, जैविक-भौतिक *fine-tuning* प्रकार्य-नियन्ता की ओर संकेत करती है।

Step 3: नैतिक-प्रमाण.

विवेक, कर्तव्य-बोध, न्याय-आकांक्षा—इनका परमाधार सर्वोच्च नैतिक सत्ता में तर्कसंगत प्रतीत होता है।

Step 4: ओण्टोलॉजिकल/अनुभव.

‘परम सर्वोत्तम’ की अवधारणा तात्त्विक रूप से अस्तित्व-निष्कर्ष तक ले जाती है; ध्यान/भक्ति में ईश्वरानुभव व्यक्त अनुभव-प्रमाण बनता है।

Step 5: आलोचना-सीमा.

प्रत्येक प्रमाण पर आपत्तियाँ हैं; समेकित रूप में ये प्रायिक/तार्किक बल देते हैं, निर्णायक गणितीय सिद्ध नहीं।

Quick Tip

किसी एक तर्क पर नहीं—“कार्य + उद्देश्य + नैतिक + अनुभव”—सामूहिक साक्ष्यों से मत बनाएं।

16. कारण के स्वरूप की व्याख्या करें।

Correct Answer:

भारतीय दर्शन में ‘कारण’ वह है जिसके बिना कार्य का अस्तित्व संभव नहीं। न्याय-वैशेषिक में तीन प्रकार—समवायी (अभिन्न आश्रय, जैसे धागा—वस्त्र), असमवायी (गुण/सम्बन्ध का कारण, जैसे धागे का वर्ण—वस्त्र का वर्ण), और निमित्त (कर्मकारी/उपादक, जैसे बुनकर)। वेदान्त में प्रायः द्वि-

भेद—उपादान (पदार्थ-कारण) और निमित्त (प्रेरक/बुद्धिमान)। कारण-कार्य का सम्बन्ध अनिवार्य, नियत और नियमबद्ध समझा गया है; कार्य कारण में संभाव्य रूप में पूर्वस्थित होता है और उचित परिस्थितियों में प्रकट होता है।

Solution:

Step 1: अवधारणा.

कारण (कारणम्) को वह तत्त्व कहा जाता है जिससे कार्य उत्पन्न हो तथा जिसके न रहते कार्य भी न रहे। न्याय इसकी आवश्यक शर्तें—पूर्ववृत्ति, नियत सम्बन्ध, तथा उत्पादनशीलता—बताता है।

Step 2: प्रकार.

(क) समवायी—जो कार्य में अविभक्त होकर निहित रहता है; जैसे कुम्भ में मृत्तिका। (ख) असमवायी—जो कार्य में समवायी के माध्यम से सम्बन्ध रखता है; जैसे मृत्तिका का गुण। (ग) निमित्त—उत्पादन करने वाला साधक/कर्ता; जैसे कुम्भकार, चक्र आदि।

Step 3: अन्य परम्पराएँ.

वेदान्त ब्रह्म को ही उपादान-निमित्त दोनों मानता है; सांख्य में प्रकृति उपादान, पुरुष साक्षी—निमित्त नहीं। बौद्ध में क्षणिक-क्षेत्र में ही हेतु-प्रत्यय की शृंखला है।

Step 4: निष्कर्ष.

कारण-मीमांसा कार्य-व्याख्या का आधार है; इससे वैज्ञानिक नियमन (नियमबद्धता) और दार्शनिक उत्तरदायित्व (नैतिक-कर्मफल) दोनों स्पष्ट होते हैं।

Quick Tip

न्याय का सूत्र याद रखें—समवायी/असमवायी/निमित्त—और वेदान्त का द्वि-भेद—उपादान+निमित्त।

17. नीतिशास्त्र की परिभाषा दें।

Correct Answer:

नीतिशास्त्र वह दार्शनिक अनुशासन है जो शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित के मानदण्डों का विवेचन करता है और मनुष्य के कर्तव्यों, आदर्शों, सद्गुणों तथा उद्देश्यों को तर्कसम्मत रूप से प्रतिपादित करता है। यह मानक (नॉर्मेटिव), बोधात्मक (मेटाएथिक्स) और अनुप्रयुक्त (एप्लाइड) स्तरों पर प्रश्न पूछता है—क्या करना चाहिए, क्यों करना चाहिए और जटिल परिस्थितियों में कैसे निर्णय लें। भारतीय सन्दर्भ में धर्म, पुरुषार्थ और अहिंसा-सत्य जैसे आदर्श नीतिशास्त्र के मूल आधार माने जाते हैं।

Solution:

Step 1: विषय-क्षेत्र.

नीतिशास्त्र मानव आचरण के मूल्य-विवेक का दर्शन है—सदाचार के सिद्धान्त, नैतिक तर्क और निर्णय-प्रक्रिया का अध्ययन।

Step 2: प्रमुख शाखाएँ.

(क) मानक नीतिशास्त्र—कर्तव्यवाद (देओन्टोलॉजी), फलवाद (उपादेयवाद), सद्गुण-नीति; (ख) मेटाएथिक्स—‘भला’ का अर्थ, नैतिक कथनों का सत्य-मूल्य; (ग) अनुप्रयुक्त—व्यावसायिक, जैव-चिकित्सीय, पर्यावरणीय आदि।

Step 3: भारतीय आयाम.

धर्म, यम-नियम, करुणा, अहिंसा और पुरुषार्थ-संतुलन नैतिक निर्णयों को दिशा देते हैं; गीता का निष्काम कर्म और समत्व व्यवहार-नीति का व्यावहारिक सूत्र है।

Step 4: उद्देश्य.

व्यक्ति-समाज कल्याण, न्याय, मानवीय गरिमा तथा दीर्घकालिक भलाई सुनिश्चित करना—इसी हेतु नीतिशास्त्र नियम, सद्गुण और प्रयोजन—तीनों का संतुलन साधता है।

Quick Tip

तीन स्तर याद रखें: मानक (क्या), मेटाएथिक्स (क्यों), अनुप्रयुक्त (कैसे)।

18. क्या शंकर के अनुसार जगत असत्य है ?**Correct Answer:**

आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में जगत को न 'सत्य' न 'असत्य', बल्कि मिथ्या कहा गया—अर्थात् व्यावहारिक स्तर पर अनुभवसिद्ध, पर परम सत्य नहीं।

“ब्रह्म सत्यं, जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः”—ब्रह्म एकमेव अद्वितीय है; माया-अवच्छेद से जगत विविध प्रतीत होता है। ज्ञान से आवरण मिटे तो ब्रह्म का ही दर्शन होता है। अतः शंकर के अनुसार जगत प्रत्यभासिक/व्यावहारिक सत्य है, परमार्थ में असत्य नहीं, बल्कि मिथ्या—निरपेक्ष सत्य केवल ब्रह्म।

Solution:**Step 1: सत्य-तिरविध.**

अद्वैत में परमार्थिक (ब्रह्म), व्यावहारिक (जगत/जीव/ईश्वर), और प्रातिभासिक (स्वप्न/भ्रम) सत्य-स्तर बताए गए।

Step 2: मिथ्यात्व.

मिथ्या = नित्य-परमार्थ-सत्य भी नहीं, पूर्ण असत् भी नहीं; कारण के ज्ञान से जिसका नाश हो—रज्जु-सर्प दृष्टान्त।

Step 3: माया और नाम-रूप.

माया अनादि अविद्या-शक्ति है; ब्रह्म पर नाम-रूप आरोप से जगत-बहुलता दिखती है। ब्रह्म-आत्मा सदैव अभिन्न; भेद अविद्या-कल्पित।

Step 4: ज्ञान-मुक्ति.

शास्त्र-गुरु-विचार से आत्मज्ञान होते ही मिथ्यात्व का भेदन—“तत्त्वमसि”—और जीव ब्रह्म के अद्वैत स्वरूप का साक्षात्कार करता है।

Step 5: निष्कर्ष.

इसलिए “जगत असत्य” कहना सरल पर गलत; सही कथन—जगत मिथ्या है, ब्रह्म सत्य है।

Quick Tip

सूत्र: सत्य-स्तर—परमार्थिक (ब्रह्म) > व्यावहारिक (जगत) > प्रातिभासिक; “जगन्मिथ्या” = न पूर्ण असत्, न परम-सत्य।

19. भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों के नाम लिखें।

Correct Answer:

भारतीय दर्शन परम्परागत रूप से आस्तिक (वेद-प्रामाण्य स्वीकार) और नास्तिक (अस्वीकार) में विभाजित है।

आस्तिक: सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा/वेदान्त।

नास्तिक: बौद्ध (थेरवाद, माध्यमिक, योगाचार आदि), जैन (श्वेताम्बर/दिगम्बर) और चार्वाक/लोकायत। इन सम्प्रदायों ने तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा और नैतिकता के प्रश्नों पर विविध, किन्तु संवादात्मक दृष्टियाँ विकसित कीं, जिनसे भारतीय बौद्धिक परम्परा का समृद्ध निरूपण बनता है।

Solution:

Step 1: वर्गीकरण का आधार.

आस्तिक/नास्तिक का मानक वेद-प्रामाण्य है; ईश्वर-स्वीकृति अनिवार्य मानक नहीं (सांख्य आस्तिक होते हुए भी ईश्वर-निरपेक्ष)।

Step 2: आस्तिक छः दर्शन.

सांख्य-योग (मुक्ति-केन्द्रित), न्याय-वैशेषिक (तर्क-पदार्थ), पूर्वमीमांसा (कर्म-श्रुति), वेदान्त (ब्रह्म-आत्मा)।

Step 3: नास्तिक परम्पराएँ.

बौद्ध—अनित्य/अनात्म/प्रतीत्यसमुत्पाद; जैन—अनेकान्त, स्याद्वाद; चार्वाक—प्रत्यक्षवाद, भौतिकवादी दृष्टि।

Step 4: समन्वय.

विवाद के साथ परस्पर आलोचना-संवाद ने तर्क-पद्धतियों, नैतिक आदर्शों और साधना-मार्गों को परिष्कृत किया।

Quick Tip

“छः आस्तिक + तीन प्रमुख नास्तिक”—सूची को क्रम सहित याद रखें।

20. परार्थानुमान क्या है ?

Correct Answer:

न्याय दर्शन में परार्थानुमान वह अनुमान है जो अन्य को समझाने/प्रमाणित करने हेतु पंचावयव—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन—के औपचारिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसका उद्देश्य श्रोता में निश्चय उत्पन्न करना है; इसलिए उदाहरण द्वारा व्याप्ति स्पष्ट की जाती है और उपनय से हेतु का प्रसंग विशेष विषय पर लागू किया जाता है। अन्ततः निगमन में निष्कर्ष प्रतिपादित होता है।

Solution:

Step 1: स्वरूप.

स्वार्थानुमान निजी तर्क; परार्थानुमान सार्वजनिक प्रस्तुति जिसमें तर्क-क्रम स्पष्ट दिखाना पड़ता है।

Step 2: पाँच अवयव.

(1) प्रतिज्ञा—“पर्वतः अग्निमानः।” (2) हेतु—“धूमवानः।” (3) उदाहरण—“यत्र धूमः तत्र अग्निः, यथा

रसोई ।” (4) उपनय—“पर्वते धूमः अस्ति ।” (5) निगमन—“तस्मात् पर्वतः अग्निमान ।”

Step 3: आवश्यकताएँ.

हेतु साधक, अव्याप्ति/असिद्धि/सव्यभिचार से मुक्त; उदाहरण से सामान्य नियम (व्याप्ति) प्रतिपादित; उपनय से प्रसंग-विधि ।

Step 4: महत्त्व.

शास्त्रार्थ, न्यायालयीय तर्क और शास्त्रीय वाद-विवाद में परार्थानुमान मानक तर्क-रूप है ।

Quick Tip

याद रखने की ट्रिक: प्र-हे-उ-उ-नि = प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन ।

21. न्याय दर्शन के अनुसार अनुमान की परिभाषा दें ।

Correct Answer:

न्याय के अनुसार अनुमान वह ज्ञान है जो व्याप्ति-स्मृति और लिङ्ग-दर्शन के आधार पर अपरोक्ष न होकर परोक्ष वस्तु का निश्चय कराए—“धूम” देखकर “अग्नि” का ज्ञान ।

इसमें हेतु (लिङ्ग), साध्य (निष्कर्ष), व्याप्ति (सामान्य नियम) और पक्ष (जिस पर सिद्धि है) मुख्य तत्व हैं । अनुमान त्रिविध माना गया—पूर्ववत्, सामान्यतोदृष्ट, शेषवत्—जो क्रमशः कारण से कार्य, सामान्य सहसंबन्ध से, और शेष-तर्क से निष्कर्ष देते हैं ।

Solution:

Step 1: प्रक्रिया.

(क) किसी लिङ्ग (धूम) का पक्ष में दर्शन; (ख) लिङ्ग-साध्य की व्याप्ति की स्मृति—“जहाँ धूम, वहाँ अग्नि”; (ग) व्याप्ति को पक्ष पर लागू कर निष्कर्ष—“अतः पर्वत अग्निमान ।”

Step 2: प्रकार.

पूर्ववत्—कारण से कार्य (मेघ देखकर वर्षा का अनुमान); सामान्यतोदृष्ट—सहसंबन्ध (सूर्योदय से दिन का अनुमान); शेषवत्—अन्य कारणों का अपवर्जन (नदी के जल-स्तर से वर्षा अनुमान) ।

Step 3: हेत्वाभास-चेतावनी.

असिद्ध, सव्यभिचार, विरुद्ध, अनैकान्तिक, कालात्यय—ये दोष निष्कर्ष को अवैध बनाते हैं; उदाहरण/उपनय से इन्हें टालते हैं ।

Step 4: निष्कर्ष.

अनुमान इन्द्रियातीत वस्तुओं के ज्ञान का विश्वसनीय साधन है, बशर्ते व्याप्ति यथार्थ और हेतु निर्दोष हो ।

Quick Tip

तीन कीवर्ड: लिङ्ग-दर्शन, व्याप्ति-स्मृति, उपनय—इन्हीं से अनुमान का ढाँचा बनता है ।

22. आस्तिक दर्शन के नाम उनके प्रवर्तक के साथ लिखें ।

Correct Answer:

छः आस्तिक दर्शन और उनके प्रमुख प्रवर्तक/प्रणेता:

(1) न्याय—गौतम/अक्षपाद

(2) वैशेषिक—कणाद

(3) सांख्य—कपिल

(4) योग—पतञ्जलि

(5) पूर्वमीमांसा—जैमिनि

(6) उत्तरमीमांसा/वेदान्त—बादरायण (व्यास); परवर्ती आचार्यों में शंकर, रामानुज, मध्व आदि प्रसिद्ध हैं।

ये सभी वेद-प्रामाण्य को स्वीकार करते हुए तत्त्व, ज्ञान और साधना के भिन्न-भिन्न पक्षों को प्रति-पादित करते हैं।

Solution:

Step 1: साझा आधार.

वेद-प्रामाण्य का स्वीकार, श्रुति-स्मृति-युक्ति का उपयोग और मुक्ति/ध्येय की चर्चा—छः दर्शन की सामान्य भूमि है।

Step 2: विशिष्टता.

न्याय—तर्क/प्रमाण; वैशेषिक—पदार्थ-सूची; सांख्य—पुरुष-प्रकृति द्वैत; योग—अष्टाङ्ग साधना; पूर्वमीमांसा—कर्म-विधि; वेदान्त—ब्रह्म-आत्मा का तत्त्व।

Step 3: ऐतिहासिक प्रवाह.

प्रवर्तकों की ग्रन्थ-परम्पराएँ—न्यायसूत्र, वैशेषिकसूत्र, सांख्यकारिका, योगसूत्र, मीमांसा सूत्र, ब्रह्मसूत्र—भारतीय दार्शनिक संवाद की रीढ़ बनीं।

Step 4: निष्कर्ष.

छः दर्शनों की बहु-स्वरता भारतीय दर्शन को व्यापकता और गहराई देती है, पर लक्ष्य—आत्मानुशासन और मुक्ति—समान रहता है।

Quick Tip

“ग-क-क-प-ज-बा” (गौतम, कणाद, कपिल, पतञ्जलि, जैमिनि, बादरायण)—मोनिक से स्मरण आसान।

23. बुद्धिवाद और अनुभववाद में क्या अन्तर है ?

Correct Answer:

बुद्धिवाद (Rationalism) ज्ञान का मूल स्रोत विवेक/तर्क/जन्य priori सिद्धान्तों को मानता है—कई सत्य अनुभव से स्वतंत्र भी हैं। **अनुभववाद (Empiricism)** के अनुसार सभी संकल्पनाएँ/ज्ञान इन्द्रिय-अनुभव से उत्पन्न होते हैं; मन जन्मतः टैबुला रासा है।

रैशनलिस्ट (डकार्त, स्पिनोज़ा, लाइब्निज) तर्क-आवश्यकता पर बल देते हैं; इम्पिरिसिस्ट (लॉक, बर्कले, ह्यूम) अवलोकन/प्रयोग पर। आधुनिक विज्ञान/ज्ञानमीमांसा प्रायः समन्वयवादी रुख अपनाती है—तर्क + अनुभव।

Solution:

Step 1: ज्ञान-स्रोत.

बुद्धिवाद—जन्मजात विचार/स्वयंसिद्धियाँ और निगमन प्रमुख; अनुभववाद—संवेदना-प्रत्यक्ष और आगमन/प्रयोग प्रमुख।

Step 2: वस्तु-मीमांसा पर प्रभाव.

बुद्धिवादी गणित/तर्क की अनिवार्यता से metaphysics की रचना करते हैं; अनुभववादी कारणता, स्व-आइडेंटिटी आदि पर संशय उठा कर ज्ञान की सीमाएँ दिखाते हैं।

Step 3: आलोचनाएँ.

शुद्ध बुद्धि बिना अनुभव रिक्त, और शुद्ध अनुभव बिना तर्क अंधा—कान्त का समन्वय: “विचार बिना अंतर्वस्तु शून्य, अंतर्वस्तु बिना विचार अन्धी।”

Step 4: भारतीय परिप्रेक्ष्य.

न्याय—प्रत्यक्ष+अनुमान+उपमान+शब्द; बौद्ध—प्रतीत्यसमुत्पाद/क्षणिकता; वेदान्त—श्रुति+युक्ति+अनुभव—समन्वयवादी दृष्टि।

Quick Tip

एक पंक्ति में: बुद्धिवाद = “तर्क-प्रथम”, अनुभववाद = “अनुभव-प्रथम”; उत्तम मार्ग = “दोनों का संगम”।

24. भारतीय दर्शन में ‘कर्म सिद्धान्त’ के अर्थ को स्पष्ट करें।**Correct Answer:**

‘कर्म सिद्धान्त’ के अनुसार प्रत्येक कृत्य—देह, वचन, मन—फल उत्पन्न करता है जो अनिवार्य नियम से कर्ता को प्राप्त होता है; फल तुरन्त या भविष्योन्मुख (संचित/प्रारब्ध/क्रियमाण) हो सकता है। सदकर्म पुण्य, दुष्कर्म पाप; पुनर्जन्म का विधान इसी से जुड़ा है। ज्ञान/भक्ति/निष्काम कर्म से संस्कार-बंधन कटते हैं और मोक्ष संभव होता है। नैतिक उत्तरदायित्व, न्याय और आत्म-विकास इस सिद्धान्त के केंद्रीय अर्थ हैं।

Solution:**Step 1: नियमात्मकता.**

कर्म का फल अपरिहार्य—यह नैतिक-आध्यात्मिक *causal law* है; अदृष्ट/अपूर्व की धारणाएँ क्रिया-फल सेतु समझाती हैं।

Step 2: कर्म-त्रय.

संचित (संग्रहीत), प्रारब्ध (फलित, इस जन्म में भोग्य), क्रियमाण (वर्तमान सृजित)—ये मिलकर जीवन-प्रवाह रचते हैं।

Step 3: मुक्ति-मार्ग.

निष्काम कर्म से नए संस्कार पतले; ज्ञान से अहंता-ममता छूटे; भक्ति से समर्पण; योग से चित्त-शुद्धि—बंधन क्षीण होकर मोक्ष।

Step 4: सामाजिक अर्थ.

कर्म-सिद्धान्त व्यक्ति को उत्तरदायी बनाता है; न्याय-भाव, करुणा, और दीर्घकालिक दृष्टि का संवर्धन करता है।

Quick Tip

तीन शब्दों में: कर्तृत्व → संस्कार → फल; “निष्कामता + ज्ञान/भक्ति” = बन्धन-क्षय ।

25. शंकर का दर्शन अद्वैतवाद क्यों कहा जाता है ?

Correct Answer:

शंकराचार्य ब्रह्म को एकमेव अद्वितीय मानते हैं—“नेह नानास्ति किञ्चन ।” जीव-जगत-ईश्वर का भेद अविद्या-जन्य है ; ज्ञान से यह भेद निवृत्त होकर ब्रह्म-आत्मैक्य का साक्षात्कार होता है । इसलिए उनका दर्शन अद्वैत—द्वैत/बहुवचन का अंतिम निषेध—कहलाता है ।

जगत व्यावहारिक स्तर पर सत्य प्रतीत होता है पर परमार्थतः मिथ्या; निरपेक्ष सत्य केवल ब्रह्म । शास्त्र-युक्ति-अनुभव से इस एकत्व का प्रतिपादन अद्वैतवाद की पहचान है ।

Solution:

Step 1: मूल प्रतिज्ञा.

ब्रह्म सत्यम्, जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव—यह त्रिपदी शंकर के अद्वैत का सार है ; ब्रह्म निर्गुण, निराकार, अखण्ड ।

Step 2: मायावाद.

माया अनादि शक्ति है जो नाम-रूप आरोप से भेद/विविधता दिखाती है ; ज्ञान से आवरण हटते ही अद्वैत सत्य प्रकट ।

Step 3: साधन-क्रम.

श्रवण-मनन-निदिध्यासन; शास्त्र-समर्थन (उपनिषद् महावाक्य), युक्ति और ध्यानानुभव से अभेद-बोध दृढ़ ।

Step 4: विरोधों का समाधान.

व्यवहारिक जगत का निषेध नहीं, पर उसका अन्तिम सत्य-स्तर घटाया गया ; यही अद्वैत की दार्शनिक सूक्ष्मता है ।

Quick Tip

की-वाक्य: “ब्रह्म एक, द्वैत अविद्या-जन्य”—इसे लिखते ही ‘अद्वैतवाद क्यों’ का उत्तर तैयार ।

26. व्यावसायिक नीतिशास्त्र क्या है ?

Correct Answer:

व्यावसायिक नीतिशास्त्र (Business Ethics) व्यापार/संगठनों में नैतिक मानकों के अनुप्रयोग का अध्ययन है—ईमानदारी, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, निष्पक्षता, हितधारक-कल्याण, पर्यावरण-संवेदना आदि । यह केवल कानून-पालन नहीं, बल्कि सद्गुण और दीर्घकालिक भलाई को प्राथमिकता देता है—भ्रष्टाचार-विरोध, उपभोक्ता-अधिकार, डेटा-गोपनीयता, श्रमिक-अधिकार, ईएसजी/सततता जैसे क्षेत्रों में नीति-निर्णय का मार्गदर्शन करता है । नैतिक संस्कृति प्रतिस्पर्धात्मक लाभ और सामाजिक भरोसा दोनों बढ़ाती है ।

Solution:**Step 1: दायरा.**

भाव/विक्री, आपूर्ति-श्रृंखला, वित्तीय प्रकटन, विज्ञापन, तकनीक-उपयोग, डेटा-प्रबंधन—हर जगह नैतिक प्रश्न उठते हैं।

Step 2: सिद्धान्त-फ्रेम.

कर्तव्यवाद—नियम/अधिकार; उपादेयवाद—समष्टि-कल्याण; सद्गुण-नीति—चरित्र; हितधारक सिद्धान्त—सभी हितधारकों के प्रति उत्तरदायित्व।

Step 3: नीतियाँ/उपकरण.

आचार-संहिता, हित-संघर्ष नियम, व्हिसलब्लोअर सुरक्षा, उचित परिश्रम (due diligence), ईएसजी मीट्रिक्स, प्रशिक्षण/ऑडिट।

Step 4: परिणाम.

विश्वास, ब्राण्ड-मूल्य, दीर्घकालिक लाभप्रदता और नियामकीय जोखिम में कमी; उद्देश्यनिष्ठ संस्कृति से कर्मचारी-सगाई बढ़ती है।

Quick Tip

“P”—People, Planet, Profit—तीनों का संतुलन करें; यही व्यावसायिक नैतिकता का निचोड़ है।

27. वस्तुवाद से आप क्या समझते हैं ?**Correct Answer:**

वस्तुवाद (Materialism) वह सिद्धान्त है जिसके अनुसार भौतिक पदार्थ/ऊर्जा ही अंतिम वास्तविकता है; चेतना, विचार, मूल्य आदि पदार्थात्मक प्रक्रियाओं के उद्भव या रूपान्तरण माने जाते हैं। चार्वाक/लोकायत इसका भारतीय उदाहरण—केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण मानना; पाश्चात्य में भौतिकवादी प्रकृतिवाद, भौतिक नियतिवाद, तथा आधुनिक न्यूरो-भौतिक दृष्टियाँ प्रमुख हैं। आध्यात्मिक/अलौकिक सत्ता का स्वीकार यहाँ नहीं किया जाता।

Solution:**Step 1: मूल प्रतिज्ञा.**

सर्वस्व भौतिक; जो कुछ भी है वह पदार्थ/बल/नियमों का परिणाम—आत्मा/ईश्वर की आवश्यकता नहीं।

Step 2: भारतीय/पाश्चात्य रूप.

चार्वाक—प्रत्यक्षवाद, वेद/अनुमान की अस्वीकृति; आधुनिक—भौतिकवाद+विज्ञान—मस्तिष्क की तंत्रिका-व्याख्याएँ।

Step 3: बल और आलोचना.

बल—अनुभवजन्य व्याख्याएँ, विज्ञान-संगति; आलोचना—मूल्य/अर्थ/चेतना की स्वातंत्र्य-गुणवत्ता को सम्यक् न समझ पाना, नैतिक निष्कर्षों का संकुचन।

Step 4: समकालीन संवाद.

उद्भववाद, गुण-न्यूनन/अकटनशीलता, द्वि-आयामी मस्तिष्क-मन सिद्धान्त—भौतिक आधार के साथ चेतना की जटिलता पर विचार।

Quick Tip

एक पंक्ति: “भौतिक ही मूल”—यदि प्रश्न चेतना/ईश्वर पर आए, वस्तुवाद इसे पदार्थ-आधारित उत्पत्ति मानता है।

28. समानान्तरिक/समानान्तरवाद (Psychophysical Parallelism) क्या है ?

Correct Answer:

समानान्तरवाद मन-देह सम्बन्ध पर वह मत है जिसके अनुसार मानसिक और दैहिक घटनाएँ समानान्तर क्रम में चलती हैं, पर प्रत्यक्ष कारण-कार्य सम्बन्ध नहीं रखते। दोनों धाराएँ किसी सामान्य नियोजन (जैसे ईश्वर की पूर्व-स्थापित समन्विति—लाइबनिज) या नियम-सम्बद्ध सह-घटना से संचालित होती हैं। इस प्रकार, दर्द-भावना और नस-उत्तेजना साथ प्रकट होते हैं, पर एक-दूसरे का कारण नहीं।

Solution:

Step 1: समस्या-पृष्ठभूमि.

द्वैतवाद में मन-देह व्यापार का ‘कारण-सेतु’ कठिन; समानान्तरवाद इसे टालकर सह-चलन की धारणा देता है।

Step 2: रूपान्तर.

(क) *Pre-established Harmony*—ईश्वर ने दोनों धाराओं को प्रारम्भ से सम-संगत नियोजित किया (लाइबनिज)। (ख) अवसरवाद से भिन्न—यहाँ ईश्वर हर क्षण हस्तक्षेप नहीं करता।

Step 3: बल/सीमाएँ.

बल—क्राँस-कारण की कठिनाइयों से बचाव; सीमा—सह-सम्बन्ध की व्याख्या अलौकिक/पूर्व-नियोजन पर निर्भर, वैज्ञानिक परीक्षण कठिन।

Step 4: समकालीन संदर्भ.

न्यूरो-विज्ञान कारण-सम्बन्ध खोजता है; पर ‘कोरिलेशन ≠ कॉज़ेशन’ का सिद्धान्त समानान्तरवादी अन्तर्दृष्टि से मेल खाता है।

Quick Tip

याद रखें: “एक-साथ, पर कारण नहीं”—यही मन-देह समानान्तरवाद का सार है।

29. पुरुषार्थ के रूप में ‘धर्म’ की व्याख्या करें।

Correct Answer:

पुरुषार्थ-चतुष्टय में धर्म आधारभूत है—वह नैतिक-सामाजिक व्यवस्था और कर्तव्य-नियम का समूह है जो अर्थ और काम को मर्यादा देता और मोक्ष की ओर प्रवृत्त करता है।

धर्म का सार—सत्य, अहिंसा, दया, दान, शुचिता, न्याय, उत्तरदायित्व; व्यक्ति-स्वभाव और परिस्थिति के अनुसार स्वधर्म का पालन अपेक्षित है। धर्म निरा कर्मकाण्ड नहीं; वह समन्वित सदाचार है जो निजी हित से ऊपर समष्टि-कल्याण और आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है।

Solution:**Step 1: स्थान और भूमिका.**

धर्म पुरुषार्थ-सरणी का नियामक—अर्थ/काम की वैधता धर्म से ; बिना धर्म के सुख-समृद्धि स्वार्थ/अराजकता बन सकते हैं।

Step 2: स्वधर्म-साधन.

गीता-मतानुसार स्वभावानुकूल कर्तव्य—निष्काम भावना और समत्व सहित—धर्म की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है।

Step 3: सामाजिक-न्याय पक्ष.

धर्म न्याय, दया और उत्तरदायित्व का संस्थानीकरण है—सामाजिक भरोसा, सतत विकास और शान्ति के लिए आवश्यक।

Step 4: आध्यात्मिक आयाम.

धर्म चित्त-शुद्धि का साधन; शुद्ध चित्त से ज्ञान/भक्ति/योग फलदायी—मोक्ष की दिशा प्रशस्त होती है।

Quick Tip

सूत्र: “धर्म मार्गदर्शक, अर्थ-काम साधन, मोक्ष लक्ष्य”—धर्म का मूल्य यहीं से समझें।

30. मृत्यु से आप क्या समझते हैं ?**Correct Answer:**

भारतीय दर्शन में मृत्यु देह-धर्म का परिवर्तन/विश्राम है, आत्मा का अवसान नहीं। देह, प्राण और मन का संयोग टूटने पर जीव सूक्ष्म शरीर सहित कर्म-फलानुसार अन्य योनियों में गमन करता है (पुनर्जन्म); यह कर्म-सिद्धान्त से संचालित चक्र है।

ज्ञान/भक्ति/योग से संस्कार-क्षय होने पर मोक्ष—जन्म-मरण से छुटकारा—प्राप्त होता है। इस दृष्टि से मृत्यु भय का कारण नहीं; आत्म-विकास की सतत यात्रा का पड़ाव है।

Solution:**Step 1: देह-आत्मा भेद.**

देह नश्वर, आत्मा नित्य—उपनिषद/गीता की प्रतिज्ञा ; मृत्यु केवल उपाधि-परिवर्तन है।

Step 2: कर्म-संस्कार और गमन.

प्रारब्ध भोग पूरा होने पर देह त्याग; शेष संस्कारों के साथ जीव सूक्ष्म-देह लिए नए शरीर ग्रहण करता है—यही संसार-चक्र।

Step 3: नैतिक अर्थ.

मृत्यु-स्मरण जीवन-मूल्य स्पष्ट करता है—कर्तव्य-पालन, करुणा, संयम; क्योंकि कर्म ही भविष्य-गति का निर्धारक है।

Step 4: मुक्ति-दृष्टि.

ज्ञान से अहंकार-नाश, भक्ति से समर्पण, योग से चित्त-निरोध—ये सब जन्म-मरण-चक्र का अतिक्रमण कर अमृतत्व का बोध कराते हैं।

Quick Tip

एक पंक्ति: “देह का अंत, आत्मा की यात्रा नहीं”—मृत्यु को वैराग्य और जिम्मेदारी की याद दिलाने वाला बोध मानें।

Section-C

31. ईश्वर के अस्तित्व के संदर्भ में प्रयोजनमूलक (टेलीओलॉजिकल) युक्ति का वर्णन करें।

Correct Answer:

प्रयोजनमूलक युक्ति कहती है कि जगत में व्यापक व्यवस्था, सामंजस्य, नियम-बद्धता और उद्देश्यपूर्ण संरचना पाई जाती है; ऐसी तादात्म्यपूर्ण रचना संजोग से नहीं, बल्कि किसी बुद्धिमान नियन्ता के कारण सम्भव है।

जीव-जगत की सूक्ष्म उपयुक्तताएँ, प्रकृति के स्थिर नियम, तथा नैतिक व्यवस्था यह संकेत देती हैं कि जगत के पीछे बुद्धि-संपन्न निमित्त-कारण है। इस युक्ति का निष्कर्ष प्रायिक है—यह ईश्वर के अस्तित्व का दार्शनिक औचित्य स्थापित करती है, गणितीय प्रमाण नहीं देती; अन्य प्रमाणों (कार्य-कारण, नैतिक, आध्यात्मिक अनुभव) के साथ मिलकर इसका बल बढ़ता है।

Solution:

Step 1: तर्क की रीढ़.

“जहाँ जटिल तथा उपयुक्त संरचना और लक्ष्योन्मुख व्यवहार दिखे, वहाँ सामान्यतः बुद्धि-नियोजन का अनुमान उचित।” जगत सूक्ष्म-नियमों से चलता है; जैव-विकास में अनुकूलन, भौतिक ब्रह्माण्ड में सूक्ष्म-संयोजन, सामाजिक क्षेत्र में नैतिक क्रम—ये सब उद्देश्यपूर्णता की ओर संकेत करते हैं।

Step 2: दार्शनिक रूप.

क्लासिकल रूप ‘डिज़ाइन-आर्ग्यूमेंट’ है; आधुनिक स्वरूप ‘फाइन-ट्यूनिंग’ और ‘प्रोबेबलिस्टिक डिज़ाइन’ कहलाते हैं, जो संयोग/बहु-ब्रह्माण्ड जैसी आपत्तियों पर प्रायिक तुलनात्मक (inference to best explanation) उत्तर देते हैं।

Step 3: आपत्तियाँ व प्रत्युत्तर.

विकासवाद संयोग का नहीं, नियमित चयन-प्रक्रिया का सिद्धान्त देता है; टेलीओलॉजी इसके ऊपर-स्तर की व्याख्यात्मक पर्याप्तता का प्रश्न उठाती है—क्यों नियम ऐसे हैं जो जीवन-संगत हों?

Step 4: निष्कर्ष.

यह युक्ति ईश्वर-सिद्धि की सम्भाव्य नींव रखती है; नैतिक व आध्यात्मिक प्रमाणों के साथ मिलकर समेकित युक्तिसंगतता पैदा करती है।

Quick Tip

डिज़ाइन-युक्ति को “उद्देश्यपूर्णता ⇒ बुद्धिमान नियन्ता” के *best explanation* रूप में लिखें; इसे निर्णायक नहीं, प्रायिक तर्क बताएं।

32. वैशेषिक के अभाव पदार्थ की व्याख्या करें।

Correct Answer:

वैशेषिक में 'अभाव' को पदार्थ नहीं, पर पदार्थ (वस्तु-श्रेणी) माना गया विशेष तत्त्व है जो न-होने की स्थिति का बोध कराता है। अभाव चार प्रकार—प्रागभाव (उत्पत्ति-पूर्व न होना), ध्वंसाभाव (नाश-उपरान्त न होना), अत्यन्ताभाव (स्वभावतः सर्वकालिक अभाव) और अन्योन्याभाव (परस्पर-भिन्नता/अभिन्नता का अभाव)।

अभाव का ज्ञान प्रत्यक्ष/अनुमान से सम्भव है—जैसे मेज पर घट का न होना। इससे नकारात्मक सत्यों की वैधता और नाश/उत्पत्ति की दार्शनिक चर्चा सम्भव होती है।

Solution:**Step 1: आवश्यकता.**

दैनिक अनुभूति में 'न होना' उतना ही अर्थपूर्ण है जितना 'होना'; अतः वैशेषिक ने इसे स्वतन्त्र पदार्थ के रूप में संगृहीत किया, जिससे निषेध-वाक्य और नाश/उत्पत्ति की व्याख्या सम्भव हो।

Step 2: भेद.

(क) प्रागभाव—घट बनने से पहले उसका अभाव; (ख) ध्वंसाभाव—घट टूटने के बाद; (ग) अत्यन्ताभाव—'आकाश की सुवास' जैसा असम्भव; (घ) अन्योन्याभाव—घट-पट का परस्पर-अभिन्न न होना।

Step 3: ज्ञान का प्रकार.

विषय-स्थान को देखकर "घट नहीं है"—यह इन्द्रिय-प्रत्यक्ष समर्थित निषेध-ज्ञान है; कभी-कभी व्यवस्थित अनुमान से भी न होने का निष्कर्ष निकाला जाता है।

Step 4: परिणाम.

अभाव-स्वीकृति से नकारात्मक संदर्भ वैध बनते हैं, तर्कशास्त्र में निषेध-प्रतिज्ञाएँ व्यवस्थित होती हैं और कारण-कार्य की सीमा-रेखाएँ स्पष्ट।

Quick Tip

चार अभाव याद रखने की ट्रिक: प्राग-ध्वंस-अत्यन्त-अन्योन्य (प-ध-अ-अ) — उदाहरण सहित लिखें तो उत्तर पक्का।

33. अनुभववाद की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या करें।**Correct Answer:**

अनुभववाद (Empiricism) के अनुसार इन्द्रिय-अनुभव ज्ञान का प्रमुख—अक्सर मूल—स्रोत है; मन जन्मतः टैबुला रासा है और अवधारणाएँ अवलोकन, प्रयोग, आगमन से निर्मित होती हैं। यह प्रत्याक्ष्य, सत्यापन, संदेह-भाव और उपेक्ष्य-परिकल्पना (Occam's razor) पर बल देता है। लॉक, बर्कले, ह्यूम इसके प्रमुख प्रतिनिधि हैं; आधुनिक विज्ञान की विधि—डेटा-आधारित परीक्षण, पुनरावृत्ति, प्रायिक निष्कर्ष—इसी रुझान से पोषित होती है, यद्यपि तर्क/गणित के a priori ढाँचे के साथ इसका समन्वय आवश्यक माना गया।

Solution:**Step 1: सिद्धान्त-केन्द्र.**

ज्ञान का आरम्भ संवेदना से—इन्द्रियों द्वारा मिले 'आईडिया' मन में संकलित होकर जटिल संकल्पनाएँ बनाते हैं; सत्य की कसौटी अनुभव-संगति है।

Step 2: प्रतिनिधि तत्त्व.

लॉक—प्राथमिक/द्वितीयक गुण; बर्कले—“अस्तित्व = अनुभूति”; ह्यूम—कारणता भी नियमित सह-घटना से निकला मनोवैज्ञानिक विश्वास।

Step 3: पद्धति.

परिकल्पना → परीक्षण → खण्डन/समर्थन; निरीक्षणीय साक्ष्यों को प्राथमिकता। ओक्कम का उस्तरा—अनावश्यक सत्ता न बढ़ाएँ।

Step 4: सीमाएँ व समन्वय.

शुद्ध अनुभव सिद्धान्त-विहीन नहीं; अवधारणात्मक ढाँचे की जरूरत पड़ती है। अतः आधुनिक दृष्टि तर्क (a priori) + अनुभव (a posteriori) के संयोग को स्वीकारती है।

Quick Tip

एक पंक्ति: “जो मापा/देखा जा सके—उसी पर भरोसा; बाकी परिकल्पना।”—पर याद रखें, तर्क-ढाँचे की भी जरूरत होती है।

34. शंकर के अनुसार ब्रह्म के स्वरूप की विवेचना करें।

Correct Answer:

अद्वैत वेदान्त में शंकर ब्रह्म को सच्चिदानन्द, निराकार, निर्गुण, अखण्ड, एकमेव अद्वितीय मानते हैं—जो परमार्थ-सत्य है।

जगत/जीव माया से आरोपित नाम-रूप हैं; व्यावहारिक स्तर पर सत्य, पर परमार्थ में मिथ्या। आत्मा और ब्रह्म अभिन्न; श्रवण-मनन-निदिध्यासन से अविद्या निवृत्त होने पर अहं-बोध गलता और ब्रह्मैक्य का साक्षात्कार होता है।

“नेति-नेति” द्वारा ब्रह्म सीमा-पर नहीं, सीमा-पार सत्य रूप में प्रतिपादित है।

Solution:

Step 1: उपनिषद-आधार.

“सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म”, “तत्त्वमसि”, “अहं ब्रह्मास्मि”—इन महावाक्यों से ब्रह्म का निरपेक्ष, अनन्त, चैतन्यमय स्वरूप निर्दिष्ट है।

Step 2: माया और जगत.

माया अनादि अविद्या-शक्ति—न नित्य-सत्य, न सर्वथा असत्; इससे नाम-रूप की विविधता प्रतीत होती है। इसी से ईश्वर/जीव/जगत का व्यावहारिक क्रम खड़ा होता है।

Step 3: ज्ञान-मार्ग.

शास्त्र-समर्थित तर्क से देह-मन-इन्द्रिय-‘मैं’ की असंगता जानी जाती है; निदिध्यासन से अक्षर-स्वरूप में स्थिति।

Step 4: निष्कर्ष.

शंकर का ब्रह्म निर्विशेष चैतन्य है; अद्वैत अनुभव-समर्थित तत्त्व है जिसमें द्वैत अविद्या-जन्य प्रत्यास है, ज्ञान से जिसका लय होता है।

Quick Tip

तिरपदी याद रखें—“ब्रह्म सत्यं, जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव”—और नेति-नेति से ब्रह्म की निरूपण-रीति लिखें।

35. अनेकान्तवाद की अवधारणा की व्याख्या करें।

Correct Answer:

जैन दर्शन का अनेकान्तवाद कहता है कि वस्तु के अनेक पक्ष/अवस्थाएँ होती हैं; इसलिए कोई भी एकांगी कथन पूर्ण सत्य नहीं।

इसे व्यक्त करने हेतु स्याद्वाद और नयवाद का प्रयोग होता है—“स्यात्” (किसी उपाधि से) ऐसा है/नहीं है/अवर्णनीय है आदि सातभंगी प्रतिज्ञाएँ। उद्देश्य विवेक, सहिष्णुता, अहिंसा और वस्तु-सम्यक् ज्ञान है; परस्पर विरोधी प्रतीत कथन भी भिन्न नयों में आंशिक-सत्य हो सकते हैं।

Solution:

Step 1: दार्शनिक आवश्यकता.

जगत जटिल है; दृष्टि-स्थान (नय) बदलने पर वर्णन बदलता है—अनेकान्तवाद एकांगी कट्टरता से बचाकर समन्वयकारी ढांचा देता है।

Step 2: स्याद्वाद (सप्तभंगी).

(1) स्यात् अस्ति, (2) स्यात् नास्ति, (3) स्यात् अस्ति-नास्ति, (4) स्यात् अवक्तव्य, (5) स्यात् अस्त्य-वक्तव्य, (6) स्यात् नास्त्यवक्तव्य, (7) स्यात् अस्ति-नास्त्यवक्तव्य—ये उपाधि-निर्दिष्ट कथन हैं।

Step 3: नयवाद.

दृष्टिकोण-आधारित निरूपण—द्रव्य-नय, पर्याय-नय आदि—से आंशिक सत्य निर्दिष्ट होता है।

Step 4: नैतिक फल.

बौद्धिक अहिंसा, सहिष्णुता और संवाद-भाव का संस्कार; निर्णय में संदर्भ-सम्बद्धता बढ़ती है।

Quick Tip

कुंजी-वाक्य: “स्यात्—उपाधि से।” सातभंगी सूची लिख दें तो उत्तर स्वतः पूर्ण हो जाता है।

36. बुद्ध के द्वितीय आर्य सत्य की विवेचना करें।

Correct Answer:

द्वितीय आर्य सत्य दुःख-समुदय का है—दुःख का कारण तृष्णा (काम-तृष्णा, भव-तृष्णा, विभव-तृष्णा) तथा उससे उपजा उपादान/अविद्या है।

इच्छा की लिप्सा और आसक्ति से जन्म-भव-जरा-मरण का चक्र चलता है (द्वादश निदान)। कारण-ज्ञान से निरोध का मार्ग खुलता है—तृष्णा का क्षय निर्वाण का हेतु है; इसलिए यह सत्य चिकित्सकीय ढांचे में रोग के कारण-निर्णय का काम करता है।

Solution:

Step 1: संदर्भ.

चार आर्य सत्यों का ढाँचा—रोग (दुःख), कारण (समुदय), निरोध (उपशमन), मार्ग (आष्टाङ्गिक)—में दूसरी कड़ी कारण-निर्णय है।

Step 2: तृष्णा की प्रकृति.

इन्द्रिय-भोग की चाह (कामा), अस्तित्व-चाह (भव), विनाश-चाह (विभव)—ये आसक्ति/द्वेष/मोह को जन्म देकर कर्म-बंध रचते हैं।

Step 3: निदान-श्रृंखला.

अविद्या → संस्कार → विज्ञान ... → उपादान → भव → जाति → जरा-मरण—तृष्णा/उपादान कड़ी तोड़ने से चक्र रुकता है।

Step 4: साधना-निहितार्थ.

स्मृति-सती, प्रज्ञा, शील, समाधि और करुणा—इनसे तृष्णा क्षीण; मार्ग (सम्यक दृष्टि... सम्यक समाधि) व्यावहारिक औषधि है।

Quick Tip

याद रखें: “दुःख का तत्काल कारण—तृष्णा”; उपचार—आष्टाङ्गिक मार्ग से आसक्ति-क्षय।

37. देहवादी के अनुसार मन एवं शरीर के संबंध की व्याख्या करें।

Correct Answer:

देहवाद/भौतिकवाद (Physicalism) के अनुसार मन अलग द्रव्य नहीं; वह देह/मस्तिष्क की अवस्थाओं का उद्भव या पहचान ही है। मानसिक घटनाएँ—विचार, भावना, संकल्प—तंत्रिका-प्रक्रियाओं से सहसम्बद्ध और उन्हीं पर आश्रित हैं; कारण-व्याख्या भौतिक नियमों में की जाती है। विविध रूप—पहचान-सिद्धान्त, कर्मात्मकवाद, उद्भववाद—मन-देह संबंध को एक-तत्त्ववादी ढंग से समझाते हैं; अतः आत्मा/चैतन्य की पृथक सत्ता की आवश्यकता नहीं मानी जाती।

Solution:

Step 1: प्रतिज्ञा.

“जो कुछ है, भौतिक है”—मन-मस्तिष्क सम्बन्ध में यह कहता है कि मानसिक गुण न्यूरो-भौतिक आधार पर ही खड़े हैं।

Step 2: प्रमुख सिद्धान्त.

पहचान-सिद्धान्त—‘दर्द अनुभव’ = ‘C-फाइबर सक्रियण’; कर्मात्मकवाद—मानसिक अवस्थाओं की पहचान कार्य/भूमिका से; उद्भववाद—उच्च-स्तरीय गुण आधार-स्तर से उद्भूत पर नियम-बद्ध।

Step 3: प्रमाण/बल.

मस्तिष्क-क्षति से व्यक्तित्व/स्मृति परिवर्तन, न्यूरो-इमेजिंग सहसम्बन्ध, औषधीय प्रभाव—ये भौतिक निर्भरता दिखाते हैं।

Step 4: आलोचना.

‘क्वालिया’, प्रथम-व्यक्ति अनुभव, आशयता (aboutness) की घटनीयता पर प्रश्न; पर देहवाद वैज्ञानिक व्याख्या-बल के कारण व्यापक है।

Quick Tip

सूत्र: “मन = मस्तिष्क-प्रक्रिया”—तीन शब्दों से देहवादी दृष्टि लिखें; फिर एक उदाहरण अवश्य दें।

38. चिकित्सकीय नीतिशास्त्र की समीक्षात्मक व्याख्या करें।

Correct Answer:

चिकित्सकीय नीतिशास्त्र स्वास्थ्य-सेवा में भलाई (beneficence), अनिष्ट-निवारण, स्वायत्तता, न्याय—इन चार सिद्धान्तों पर टिका है।

मुख्य प्रश्न—सूचित सहमति, गोपनीयता/डेटा-प्राइवैसी, संसाधन-वितरण, जीव-अंत निर्णय (EOL), क्लिनिकल ट्रायल, AI/टेलीहेल्थ। आलोचनात्मक दृष्टि बताती है कि केवल नियम पर्याप्त नहीं; संदर्भ-संवेदी निर्णय, सांस्कृतिक संवेदना, न्यायसंगत पहुँच और हित-संघर्ष प्रबंधन ज़रूरी हैं। नीति-निर्माण में रोगी-केन्द्रितता और पारदर्शिता सर्वोपरि है।

Solution:

Step 1: मूल ढाँचा.

(1) भलाई—रोगी हित सर्वोच्च; (2) अनिष्ट-निवारण—हानि न करना; (3) स्वायत्तता—रोगी का अधिकार/सहमति; (4) न्याय—समतामूलक पहुँच और निष्पक्षता।

Step 2: व्यावहारिक द्वन्द्व.

ICU बेड/ऑक्सीजन जैसे वितरण-निर्णय, मानसिक स्वास्थ्य में क्षमता-आकलन, जीन-एडिटिंग/IVF में दीर्घकालिक जोखिम, महामारी में जन-हित बनाम निजता—ये परिदृश्य सूक्ष्म संतुलन माँगते हैं।

Step 3: प्रक्रियात्मक साधन.

एथिक्स कमेटी, SOPs, सूचित सहमति के सुस्पष्ट फॉर्म, डेटा-गवर्नेंस, व्हिसलब्लोअर सुरक्षा, निरन्तर प्रशिक्षण—नीति को क्रियान्वित करते हैं।

Step 4: समालोचनात्मक बिन्दु.

सिर्फ चार-तत्त्व पर्याप्त नहीं; गुण-नीति (करुणा, सत्यनिष्ठा), सामुदायिक न्याय, सांस्कृतिक संदर्भ भी जोड़े जाएँ। AI-निर्णयों में स्पष्टीकरणीयता और जवाबदेही अनिवार्य।

Quick Tip

“4-प्रिंसिपल फ्रेम” लिखें और हर उत्तर में सहमति, गोपनीयता, न्याय—इन तीन की जाँच-लिस्ट शामिल करें।